(२) वाक्य-रचना की व्यवस्था

(३) विचारों की स्वाभाविक शृङ्खला

अभ्यास और नित्य के चिन्तन से उपर्युक्त बातें प्राप्त हो सकती हैं। क्योंकि भाषा मंजते मंजते ही मंजती है, और विचार उठते उठते ही उठते हैं। हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ नित्य नया नया ज्ञान उपार्जन कर हमारे ज्ञान भंडार को भरती रहती हैं। आँख प्रकृति-सौन्दर्य का अवलोकन कर स्मरण-शक्ति को सौंपती हैं। कान शब्दों और ध्वनियों का संग्रह कर मस्तिष्क के भंडार को भरते रहते हैं। अतः आवश्यक है कि हम अपनी ज्ञानेन्द्रियों को सचेत रक्खें। बारीकी से वस्तुओं का निरीक्षण करें। हम जितना ही बाहरी जगत को अवलोकन करेंगे उतना ही हमारा ज्ञान-भंडार बढ़ेगा। देशाटन करना ज्ञान-संचय करने का दूसरा साधन है। देशाटन करने से जितने भाव विकसित होते हैं उतने किसी अन्य साधन से नहीं।

पर्यटन के अभाव में पुस्तक अवलोकन हमारे ज्ञान-भंडार को सहायता पहुँचाता है। पुस्तक अवलोकन से तुलना करने की क्षमता आती है। अधूरे निरीक्षण की पूर्ति का अवसर मिलता है। पदार्थों के जाँचने की टेव पड़ती है। विचारों का भली-भाँति प्रकट करने का प्रोत्साहन मिलता है। पुस्तक अवलोकन में हमें अधिक सचेत रहना चाहिये। उत्तम साहित्य का अवलोकन हमारे ज्ञान का विकसित करता है वहीं गन्दा और अश्लील साहित्य जीवन का विष-तुल्य सिद्ध होता है। महापुरुषों की जीवन-गाथा, समुन्नत राष्ट्र के इतिहास और वार्त्तालाप ही पढ़ना चाहिये। हमारा मानव-जीवन जिस वायु-मंडल में व्यतीत होता है वह पवित्र और सच्चरित्र हो। [illegible] सभा-सोसाइटी [illegible] में [illegible] होते और [illegible] हैं [illegible]

गठन ऐसा हो कि भाव तुरंत स्पष्ट हो जावें। परिच्छेद की
षा में शिथिलता और पुनरुक्ति दोष अधिक खटकते हैं।
रिच्छेद के भाव को भली भांति स्पष्ट करने के लिये यदि कोई
था लाना आवश्यक हो तो अवश्य उस कथा द्वारा परिच्छेद
ो पूर्ण करना चाहिये।

निबन्ध-रचना

रचना हृदय-गत विचारों और वेदनाओं की अभिव्यक्ति
..। इन मनोभावों को अनेक प्रकार से प्रकट कर सकते हैं।
रचना में प्रायः गद्य का ही प्रयोग होता है। रचना लेखक के
हृदय का संदेश है। जितना उसका हृदय पवित्र और निर्मल
होगा, उतना ही वह अपने पाठकों पर अपना प्रभाव डालेगा।
रचना में लेखक अपने प्रसंग से बाहर न जाय। साथ ही उत्तम
भाव और भाषा की गंभीरता को भी न छोड़े। विषय क्रम-बद्ध
हों। छोटे उदाहरण रचना में सुन्दरता लाते हैं और बड़े बड़े
उदाहरण विषय की सुन्दरता को नष्ट कर देते हैं।

निर्धारित-विषय

जब किसी विषय पर लिखने की इच्छा [illegible] लेखक [illegible] अपना
[illegible] अनुभव [illegible]
विषय [illegible] अनुभव [illegible]
विषय पर लिखना केवल [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] लिखना [illegible]
[illegible] लिखना [illegible] चाहिये [illegible]
[illegible]

अनुभवों और चेष्टाओं का ज़िक्र किया जाता है। इसमें पुराण, इतिहास, जीवन-चरित, उपन्यास, कहानी, सामयिक घटना, आविष्कार आदि आते हैं।

(ख) वर्णननात्मक निबन्धों में आकाशस्थित प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, व्यापार या विचार अथवा व्यक्तियों के गुण और उपाधियों का बखान करते हैं। इनके अन्दर दृश्य, ऋतु, मेला, उत्सव, नगर, इमारत, यात्रा और आदि का वर्णन रहता है।

(ग) व्याख्यात्मक निबन्धों में वैज्ञानिक प्रणाली के अनुसार व्याख्या करके वस्तु-बोध कराना होता है व्याख्यात्मक निबन्ध में व्यापक विषय की व्याख्या की जाती है और वर्णनात्मक में किसी एक विशेष दृश्य अथवा व्यक्ति के गुणों का बखान होता है। इनमें शान्ति, क्रोध, क्षमा, दया, शिक्षा, मैत्री, स्वावलंबन आदि विषयों को व्याख्या की जाती है।

(घ) तार्किक निबन्ध वे हैं जिनमें लेखक अपने ध्येय को युक्ति-विधान से मनवाने की चेष्टा करता है। इनमें भी व्याख्यात्मक विषयों की भांति वस्तु-बोध ही लक्ष्य रहता है। इनके भीतर तुलनात्मक, आलोचनात्मक और विवादास्पद निबन्ध ही आ सकते हैं।

निबंध लिखने की शैली

निबन्ध में क्रम-पूर्वक पदों के रखने के ढंग को शैली कहते हैं कोई लेखक अपने मनोगत विचारों को किसी ढंग में व्यक्त करता है, दूसरा उन्हीं विचारों को दूसरे ढंग से प्रकट करता है। शैली की सुन्दरता ही लेखक के उत्तम गुणों को प्रकट करता है। शैली में ही लेखक के भाव, विचार चरित्र जाने जाते हैं। लेखक शैली ही पाठकों के हृदयों पर अपना अधिकार जमाती है

(६) अवतरण-चिन्ह (" ")—कवियों की उक्ति, महापुरुषों के अवतरण, किसी पुस्तक और व्यक्ति के कथन को उद्धृत करते समय इन चिन्हों का प्रयोग उस कथन के आरम्भ और अन्त, दोनों जगहों पर करते हैं; जैसे—

(१) मैं हँसा, उसने धीमे स्वर में कहा, "राष्ट्र निर्माण कार्य और घृणा उत्पन्न करना दो विपरीत बातें हैं।"

(२) महात्माजी ने सत्य ही कहा है, "अहिंसा पालन की प्रतिज्ञा किये बिना मैं राष्ट्र की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकता।"

(३) तुलसीदासजी ने कहा है,

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी॥"

(७) योजक-चिन्ह (Hyphen) का प्रयोग दो या दो से अधिक सामासिक पदों के बीच (—) में करते हैं; जैसे—

(१) हिन्दी-नागरी-प्रचारिणी-सभा-दिल्ली।

(२) "देश-द्रोही कभी राष्ट्र-सेवी नहीं हो सकते।"

(८) कोष्टक-चिन्ह ([ ]) इस चिन्ह का प्रयोग किसी शब्द का अर्थ, व्याख्या या भूल समाधान करने के लिये होता है।

(१) लेनिन बड़ा अजीबोगरीब (विचित्र) प्राणी था।

(२) पं० मदनमोहन मालवीय हिन्दू-यूनिवर्सिटी (काशी-विश्व विद्यालय) के वायस चांसलर हैं।

विनीत—

वासुदेव शर्मा, "साहित्य-रत्न"

अध्यापक

प्रारम्भिक दो शब्द

हिन्दी-निबन्ध-रचना पर अनेक पुस्तकें मेरे देखने में आई हैं, किन्तु हाई स्कूल के विद्यार्थियों को जो पुस्तकें मिलती हैं वह उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करतीं। मेरी धारणा है कि पं० वासुदेव शर्मा 'साहित्य-रत्न' का 'आदर्श-निबन्ध' और 'पत्र-लेखन' विद्यार्थियों की इस कमी को पूरा करेगा। जितनी पुस्तकें मेरे देखने में आई हैं। उन सब पुस्तकों में से प्रस्तुत पुस्तक में मुझे ये विशेषतायें दृष्टि-गोचर हुईं। निर्वाचित निबन्धों में साहित्यिक पुट है। निबन्धों में विचार सामग्री पूर्ण है। विषय-चयन बड़ी सावधानी से किया गया है। विद्यार्थियों के आवश्यक शीर्षकों पर ही आदर्श-निबन्ध लिखे हैं। आवश्यक, सामयिक और नवीनतम विषयों का समावेश करने का प्रयत्न किया है। इन विशेषताओं के कारण मुझे यह पुस्तक उत्तम जँची।

पुस्तक के आरम्भ में लेखक ने निबन्ध-कला पर एक विस्तृत भूमिका लिखी है। इसके उपरान्त लगभग ८० आदर्श-निबन्ध विचार तालिकाओं सहित दिये हैं। आदर्श-निबन्धों की विचार-तालिकायें इस खूबी से दी हैं कि एक बार के अवलोकन करने से विषय का सारा चित्र विचार-तालिकाओं से खिंच आता है

नम्र-निवेदन

निबन्ध-रचना पर अब तक अनेक पुस्तकें निकल चुकी हैं, किन्तु उनमें से ऐसी आदर्श पुस्तक कोई नहीं जो हाई स्कूल परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छोटे विद्यार्थियों की अभिलाषा को पूर्ण कर सके। मेरे 'प्रबंध-पीयूष' और "हिन्दी मौडर्न ऐसे" (जो मैंने सन् ३६ और ३८ में लिखे थे,) से बड़े विद्यार्थियों ने और विशेष कर साहित्य-प्रेमी विद्यार्थियों ने लाभ उठाया। छोटे विद्यार्थी उनसे विशेष लाभ न उठा सके। प्रस्तुत पुस्तक छोटे विद्यार्थियों की समस्त कठिनाइयों को सामने रख कर लिखी गई है। भाषा को सरल बनाने की भरसक चेष्टा की गई है। पुस्तक की भाषा विशुद्ध हिन्दुस्तानी तो नहीं है, किन्तु हिन्दुस्तानी भाषा की झलक सर्वत्र ही दिखलाई पड़ती है।

पुस्तक में आदर्श-निबन्धों के अतिरिक्त आदर्श-पत्रों का भी समावेश किया गया है। पत्र लिखने के नियम विस्तार पूर्वक दिये गये हैं। जहाँ तक संभव हो सका है नवीन-शैली के प्रत्येक प्रकार के पत्र को स्थान दिया गया है। सामयिक कोई ऐसा विषय नहीं छोड़ा जिसे विद्यार्थी को यत्र तत्र कोई अवलम्ब खोजना पड़े। आवश्यक और उपयोगी सब प्रसंगों पर पत्रों के नमूने प्रस्तुत पुस्तक में आगये हैं

प्रत्येक आदर्श-निबन्ध के साथ उसकी विचार-तालिकायें दी हैं। जिनके आधार पर विद्यार्थी स्वयं निबन्ध लिख सकते हैं। नमूने के तौर पर कुछ निबन्धों के मध्य में और कुछ एक स्थान पर विषयों की विस्तृत विचार तालिकायें भी दे दी हैं जिन से विद्यार्थी निबन्ध रचना का अभ्यास कर सकते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा गया है कि निबन्धों का विस्तार

संक्षिप्त से संक्षिप्त हो, व्यर्थ के शब्दाडम्बरों से विषय को अछुण्य ही रक्खा है।

प्रस्तुत पुस्तक लिखने के समय हमारा उद्देश्य केवल हाई स्कूल परीक्षा मे सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियो से था, किन्तु पंजाब यूनीवर्सिटी के 'रत्न', 'भूपण' के विद्यार्थी और यू० पी० के विशेप योग्यता और वरनाक्यूलर फाइनल आदि परीक्षाओं के विद्यार्थी भी इससे बहुत लाभ उठा सकते है।

प्रस्तुत पुस्तक लिखने मे हमे पं० शम्भूदत्त शर्म्मा बी० ए० बी० टी० हैडमास्टर आर०ए०बी० हाई स्कूल देहली से बड़ी सहायता मिली है, जिसके हम आभारी हैं। उक्त प० जी के ही संकेतो के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक लिखते समय उन्होने जो सौलभ्य हमे दिया है उसको हम आजन्म नहीं भूल सकते।

इसके अतिरिक्त हमने अनेक पुस्तको, पत्रो और पत्रिकाओं से प्रस्तुत पुस्तक लिखने मे सहायता ली है, उनके लेखको के प्रति हम विशेप कृतज्ञता प्रकट करते हैं। प० चन्द्र मौलिय शुक्ल बा० गुलाबराय एम० ए० और ला० शिव प्रसादजी, एम० ए० एल० टी० की पुस्तको से हमने विशेप सहायता ली है इसलिये इन महानुभावो के प्रति हम विनीत भाव से कृतज्ञता प्रकाश करते हैं।

वासुदेव शर्म्मा 'साहित्य-रत्न"
अध्यापक,
आर० ए० बी० हाई स्कूल रोशनपुरा
देहली

बलीपुर-इगलास-अलीगढ़
२-३-४०

वर्षा–विहार

विचार तालिकायें:—

(१) वर्षा ऋतु का आगमन
(२) वर्षा में प्रकृति-सौन्दर्य
(३) नदी और बागों की शोभा
(४) वर्षा काल की रात्रि
(५) उपसंहार

सूर्य की तीक्ष्ण किरणों ने पृथ्वी के शरीर को झुलसा दिया. ग्रीष्म के प्रबल झोंकों ने वसुन्धरा की आभा और छवि खसोट ली। भूमि ध्यान से त्राहि त्राहि कर उठी दयालु बादल को दया आई। दयालु मेघ सहस्रों हाथों से बूंदों की बौछार करने लगे शीतल बूंदों के स्पर्श से पृथ्वी ने एक ठंडी सांस ली और उसका मलिन मुख फिर जगमगाने लगा। वृक्ष और बेलों ने फिर नव रूप बदला चारों ओर वन उपवनों में बहार ही बहार दिखलाई पड़ने लगी। तालाब और नदियां उमड़ उमड़ कर उमंगें मारने लगीं। पेड़ पर लताओं ने हरी साड़ी ओढ़ ली। मतवाले मयूर मस्तानी चाल से इधर उधर फिरने लगे हंसों ने अपना राग अलापा, कोयल ने अपनी सुरीली स्वर

वर्षा-विहार

विचार तालिकायें:—

(१) वर्षा ऋतु का आगमन
(२) वर्षा में प्रकृति-सौन्दर्य
(३) नदी और बागों की शोभा
(४) वर्षा काल की रात्रि
(५) उपसंहार

सूर्य की तीक्ष्ण किरणों ने पृथ्वी के शरीर को झुलसा दिया. ग्रीष्म के प्रबल झोंकों ने वसुन्धरा की आभा और छवि खसोट ली। भूमि प्यास से त्राहि त्राहि कर उठी दयालु बादल को दया आई। दयातुर मेघ सहस्रों हाथों से बूंदों की बौछार करने लगे। शीतल बूंदों के स्पर्श से पृथ्वी ने एक ठंडी सांस ली और उसका मलिन मुख फिर जगमगाने लगा। वृक्ष और बेलों ने फिर नया रूप बदला चारों ओर वन उपवनों में बहार ही बहार दिखलाई पड़ने लगी। तालाब और नदियां उमड़ उमड़ कर उमंगें मारने लगीं। पेड़ और लताओं ने हरी साड़ी ओढ़ ली। मतवाले मयूर मस्तानी चाल से इधर उधर फिरने लगे। चातकों ने अपना राग अलापा, कोयल ने अपनी सुहानी मल्हार

बहती हुई किनारे के पेड़ो की जड़ उखाड़े ही डालती हैं और भीषण गड़गड़ाहट से कगारो को गिराती हुई अपने यौवन का परिचय दे रही हैं। घुमड़ते हुए घनों की गड़गड़ाहट, झरझराते झरनों की तड़तड़ाहट हृदय को दहलाये डालती है। मेघो की गरजन के साथ पहाड़ों की चोटियो से धड़-धड़ कर पानी गिरना किसके हृदय मे धड़कन पैदा नहीं करता।

वर्षा की रात्रि मे चपल चपला का नृत्य कितना सुन्दर लगता है: चपल चपला चपल-गति से चमकी कि अचानक बादलों की ओट में फिर जा छिपी। जुगनू की जगमगाहट तारे झलकने का भ्रम उत्पन्न कर रही है। झींगुरों का कल-रोर, दादुरों का टरटराना एक अनुपम ही दृश्य है। काली काली घिरी घटायें, प्रखर चकाचौंध से चमक, कड़कड़ाहट से बिजली का कड़कना रात्रि-काल मे कैसा प्रलयकारी दृश्य उपस्थित करता है! विशालकाय तालाब, मुँह फाड़े विकराल उबलती हुई नदियाँ किसके हृदय को नहीं थर्राती।

वर्षे! तुम धन्य हो! तुममें कैसा अलौकिक आनंद है! कैसा मनोरम आकर्षण है! कैसा अनोखा उन्माद है! कैसा अद्भुत उल्लास है! तुम मृतक हृदयों में सरसता और सजीवता लाती हो, तुम हृदय मे हृदयहारी हूक और कसक पैदा करती हो। तुम्हारे इस मनोज्ञ मनोहारी दृश्य को देख कर गृह-त्यागी, [illegible] तुलसीदास अपना हृदय वश में न रख सके और सहसा [illegible] उठे —

"घन घमंड नभ गरजत घोरा। प्रिया हीन डरपत मन मोरा।

निस्सन्देह वर्षा में ऐसी ही मादकता है। वर्षा सूखे वृक्षों को सजीव कर देती है। [illegible] पत्ते और फल उत्पन्न कर देती है। मृतक-हृदयों में नया जीवन [illegible] है [illegible] और [illegible] जीवन की झलक उत्पन्न कर देती है। मनभावनी वर्षे! तुम [illegible]

छेड़छाड़ आरंभ करदी है। हिलती हुई बेलें प्रेमाश्रुओं में अपने हार्दिक-भाव प्रकट कर रही हैं। प्राची इक्लित नेत्रों मे किसी के आगमन की बाट जोह रही है।

ऊपा ने अपनी लाल साड़ी उतार दी, अपना सुनहरो बाना बना लिया। भगवान् सूर्य ने अपनी प्रखर किरणें वसुन्धरा पर फेंकनी आरम्भ करदीं। पूर्व आकाश के पतले कुहर से बाल-सूर्य ने अपना मुख निकाला। अहा! पूर्व का यह सुन्दर दृश्य कैसा? तनिक निगाह उठाकर आकाश की ओर तो देखिये, कैसा अद्भुत, कैसा अनुपम और कैसा चित्ताकर्षक दृश्य है? जिस स्थान से अभी सूर्य ने जगत को पहली बार देखा था, उसी स्थान से सूर्य-किरणों का एक समूह ऊपर को निकल रहा है। ओहो! एकदम पर्वत की चोटियाँ सुनहरी हो गईं। पर्वत-स्थित पहाड़ी वृक्षों की चोटियों ने सुनहरी बाना बना लिया, बादलों का रंग बदल गया, सारा आकाश-मडल सुनहरी आभा से आलोकित हो उठा। पैशाचिनी वृत्ति ने अपना मुँह छिपा लिया, जिधर देखिये उधर आनन्द ही आनन्द है। वन, उपवनों की हरियाली ने हृदय हर्पित कर दिया। पक्षियों ने वृक्षों की डालियों पर बैठ कल-कुञ्जन आरभ कर दिया। फूलों से अपनी हँसी न रुकी वह खिलखिला कर हँस पडे। कोमल पत्तियाँ फूलों को हँसता देख आनन्द से हिलने लगीं, पवन ने फूलों का प्रेमापहार सबको भेंट किया। फलों का त्याग भी उमड पडा उन्होंने डाल से टप-टप गिरकर मालियों की टोकरियाँ भरदीं।

कोयल ने भली भाँति गला साफ कर पचम स्वर म गाना आरभ किया, मोर ने अपनी गर्दन उठाकर वह तान छेडी कि समस्त उपवन गूँज उठा। कमल की डाल हिला हिला कर हसों ने कल-कुञ्जन उठाया कि सारा सरोवर शब्दायमान हो गया। उधर शुक और सारिका ने भी आम की डाल पर बैठ अपना

प्रकृति-सौन्दर्य

मधुर सुर अलापा कि समस्त अमराइयाँ इन्द्र-लोक बन गईं। ओहो? सारी मंजु-मंजरी-मंडित अमराइयाँ मोरों से लदी पड़ी हैं। प्रकृति ने शस्य-श्यामल-मय अपना शृंगार बनाया। प्रकृति के आज्ञाकारी दूत बादल उसके प्रियतम के सुखद संदेशों को लेकर इधर उधर विचरण करने लगे। तनिक सघन विटपावली और लताच्छादित वन-कुंजों को तो अवलोकन कीजिये। कैसी सुन्दर, कैसी मनोरम और कैसी चित्ताकर्षक है कि सहज ही मन को खींचे लेती है।

श्वेत बर्फ से आच्छादित पर्वत अपनी सफ़ेद चादर बिछाकर प्रकृति नदी के स्वागतके लिये खड़े हैं। कमलोंसे भरे सरोवर श्वेत हंसों की पंक्ति लगाये. प्रकृति के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बडबडाती नदियाँ प्रेमोन्माद में पहाड़ों के पैर उखाड़े ही डालती हैं। ज़रा सान्ध्य कालीन पूर्व दिशा की मनोहर छटा को तो देखिये! पूर्व दिग्वर्ती समस्त आकाश-मंडल पर लालिमा छागई, अहा! चन्द्रदेव उदय होरहे हैं। आकाश में महीन बादलों की आड़ में छिपे हुए चन्द्रदेव ने लाल-मुख-मंडल से श्याम वस्त्र-धारिणी प्रकृति देवी को एक बार मुस्करा कर झाँका। ओहो! कैसा अनाखा दृश्य है! कैसी अलौकिक छटा है! कैसा सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य है!

आहा! नित्य नीले आकाश में विचरण करने वाले सूर्यदेव पश्चिम दिशा में पहुँच रहे हैं। दिनभर के घार परिश्रम से थककर विश्राम की आशा से पश्चिम की ओर बड़ी शीघ्रता से भागे जा रहे हैं। दिनभर के परिश्रम से उनका मुँह लाल तो हो ही रहा था, विश्राम के स्थान अस्ताचल को देख प्रसन्नता से और भी रक्त-वर्ण होगया। पश्चिम ने उषा-काल का वस्त्र पहन लिया और फिर वही नयनाभिराम दृश्य आँखों के सामने घूमने लगा।

अवलोकन कीजिये, कैसा मनोरम है। कैसा आकर्षक और कैसा उन्माद-कारी दृश्य है। खिले हुये फूल कैसे हृदय-हारी सौन्दर्य से हँस रहे हैं। विकसित कुसुमों को स्पर्श कर आने वाली हवा ने कैसा उन्माद बगराया है, कि कायल और भौंरे अपने हृदय पर वश न रख सके। मधु-मक्खियाँ और भौंरे उन्मत्त हो फूल फूल पर गुनगुनाते फिरते हैं। वसन्त के रसीले सौन्दर्य ने पक्षियों के कंठ को रसीला बना दिया है। उन्होंने अपनी मनोहर कंठ-ध्वनि से वह राग छेड़ा है कि सारा उपवन संगीतमय हो गया। नित्य सूर्यदेव मतवाली छटा लेकर उदय होते हैं। चन्द्रदेव की सुधामयी किरण प्रेमी व्यक्तियों के मन में एक अनुपम कान्ति उत्पन्न करती है। टमटमाते तारों की छटा पहले से अधिक आकर्षक हो गई है। अचेत जीवन चैतन्य हो गये, सब में जीवन धारा अबाध-गति से प्रवाहित हो उठी। कवि, भावुक और प्रेमी हृदय भड़क उठे, उनके हृदय बाँसों उछल रहे हैं, और लोकोत्तर आनद का अनुभव कर रहे हैं।

बागों में आम बौर रहे है जिससे समस्त वन-भूमि और वाटिकाये सुगंधित हो गई है। आमों से लिपटी सुहाग गर्वीली मालती-लता ऐसी फूली है कि उसके पत्ते तक नहीं दीखते। उधर गुलाब की नई कलिया, सुडौल सुन्दरता और चटक मटक को देख रसिक भौंरों के झुंड क झुंड खिचे चले आते हैं। अपनी ध्वनि मे मस्त वही मतवाले भौंरे न जाने क्या सोचते हुये नुकीली कलियों के ऊपर गुन गुनाते फिरते हैं। शायद वह गुलाब की मादकता को ढूँढ़ते हों। अहा, मधुकरों की सुरीली तान को तो सुनिये. कैसा हृदय-द्रावक सुरीला स्वर है। मोहन की मोहनी बंसी के सुर को भी लाञ्छित कर रहा है। गुलाब के काँटे कामदेव को नाश करने वाले शंकर जी के त्रिशूल से भी अधिक भौंरों को सता रहे है। प्रेम आकर्षण में

फैले प्रेमी भौंरे प्राणों की परवाह न कर प्रेम से उतावले हो, और भी अधिक प्रेम में लथ-पथ हो उन्हीं त्रिशूल-रूपी काँटों के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। अपने प्रेमी मधुकरों की ऐसी प्रेम-तल्लीनता देख गुलाब भी अपना गुन-ग्राहक पा ऐसे फूले हैं कि फूले अंग नहीं समाते। विकसित-पाटल-कुसुमों ने समस्त वन-भूमि को प्रेम और सौरभ से भर दिया है।

इस सहज सुहावनी ऋतु में मनुष्य का तो पूछना ही क्या? वसन्त को आता देख उसका मन बाँसों उछलने लगा है। उसे वन में, उपवन में, खेत और वाटिका में चारों ओर वसन्त ही नज़र आता है। उसके चित्र वसंत-मय, उसके काव्य वसंत-मय और उसके गीत वसंत-मय हैं। यह क्यों? इसलिये कि वसंत की अपूर्व छटा ने उसके हृदय को विमोहित कर दिया है। वसंत को आया जान उसे इतना आनंद हुआ है कि उसे अपने तन बदन तक की सुध नहीं। वसन्त के सौन्दर्य पर रीझ कर कभी गाता है, कभी गुनगुनाता है, और कभी उत्सव मनाता है। वसन्त-पंचमी के उत्सव से उसके हृदय में उल्लास तरंगें मारने लगी हैं, वह तरंगें होली आते-आते चरम सीमा को पहुँच जायँगी। होली पर मनुष्य प्रकृति के रंग में रंग कर, संसार के आनन्द से आनंदित होकर वसन्ती रंग और गुलाल की वह वर्षा करता है कि अपना और वसंत का रंग एक कर लेता है। कहीं मनोरंजन हो रहा है। कहीं सगीत छिड़ रहा है, और कहीं कहीं भाव-विभोर होकर नाच हो रहा है। उसके इन कृति को कोई कैसी ही कुदृष्टि से क्यों न देखे इसमें तो प्रकृति का ही दोष है मनुष्य का तो प्रकृति के उन्माद में उन्मत्त होना स्वाभाविक ही है। जब प्रकृति का रूप अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर जाता है तो उसके पुजारी मनुष्य की भावनायें क्या न अतर-मुखी हो जावें?

उद्यान के आनंद

विचार तालिकायें:—

(१) *प्रातःकालीन वाटिका का सौन्दर्य*
(२) *वाटिका की वृक्ष-लता और पक्षी-गायन*
(३) *वाटिका मे मनोरजन*
(४) *स्वास्थ्य और वाटिका*

चन्द्र की चन्द्रिका ने समस्त वाटिका के पेड और पौध
पर सौन्दर्य और आभा छिडक दी है। जिधर देखो उधर ह
पौधो और वृक्षों पर मोती बिखर रहे हैं। कुसुम-सरोवर
कमल हंसो के गुंजन के साथ ही साथ खिलखिला कर हंस र
है। हंस प्रकृति सौन्दर्य पर उन्मत्त हो अपने आपे को भूल कमल
से अठखेलियाँ कर रहे हैं। आम-मजरी की महक से कोकि
ऐसी मदमाती हो गई है कि उसका मदोन्मत्तकारी गाना समा
हो नही होता। भुनभुनाते भौंरे बार बार प्रेम-उद्वेग मे कमल कलि
काओ को चूम चूम कर हिलाते है। शीतल पवन ने फूलों
पराग और सुगध को अपनी झोली मे भर लिया है, जिसे व
बाटिका के विशेष-विशेष स्थानो पर बखेरता फिरता है। जिस
कारण उद्यान सुर-कानन के सदृश गधायमान हो गया है। वृ
मे आनद के विभोर से थिरकन पैदा हो गई है। वे अपने मृदु
पत्ते हिला हिला कर दर्शको को अपने पास बुलाते है, ओहो
चम्पा और चमेली कैसी ऐंठ मे खडी दर्शको को ताक रही है।

ओहो ! फूले गुलाब की तो सज-धज ही निराली है, वह फूलों से लदा झुका ही पड़ता है। मौलसिरी ने तो फूलों की वर्षा ही कर दी। केसर की क्यारियाँ अलग ही हृदय हरे लेती हैं। पौधों से लिपटी बेलों का प्रेम उमड़ा ही पड़ता है। सर्प सिर उठाये किसी को कुछ समझते ही नहीं। फुव्वारों ने वह झड़ी लगाई है, कि समस्त उद्यान में भादों का सा आनन्द आ रहा है। सघन कुंजों में बैठे पक्षियों का कलगान स्वर्गीय आनंद उत्पन्न कर रहा है। जलाशयों में बालक विनोद भरी क्रीड़ा करते हुये सावन गा रहे हैं। वाटिका के तख्तों में हरी दूब का मखमली बिछौना बिछा है जिसमें सुन्दर श्वेत मोती टंके हुए हैं। संगमरमर-निर्मित उद्यान वीथिकाओं पर पैर रपटे जाते हैं। आओ उद्यान के उस सुरम्य चबूतरे पर बैठकर थोड़ा विश्राम करलें। अरे ! यहाँ की तो शोभा ही निराली है। कैसे दूध से उज्ज्वल पत्थर पच्ची करके इसमें जड़े हैं, इसके अनूठे कटाव को तो देखिये, कैसे मनोहर बेल-बूँटे निकाले हैं। रौंसों पर खड़े रैलिया और इश्क-पेचा की फबन तो माली के परिश्रम का पूरा परिचय दे रहे हैं। प्रत्येक क्यारी अपनी अनूठी आभा से माली के सुन्दर अनुभव और उसकी विशाल समझ का प्रदर्शन कर रही हैं।

अहा ! रेडियो भी बोलने लगा। सब लोग गाना और खबरें सुनने के हेतु बेंचों पर जमने लगे। अहा ! सुरीली तान ने तो दर्शकों को मूर्ति की भाँति स्तम्भित कर दिया। अरे ! लो रिमझिम-बूँदें भी पड़ने लगीं, वृक्षों ने पौधों और बेलों का यौवन निखार दिया। वृक्षों पर से टप-टप कर गिरती बूंदें निराली छटा उपस्थित कर रही हैं। अरे ! सामने तो देखो, कैसा मनोरम इन्द्र धनुष आकाश में बन गया है। चमकते वृक्षों पर सूर्य-किरण पड़ने लगीं। देखो कैसा अनुपम दृश्य है, पेड़ों में कैसे सुन्दर गाने गा रहे हैं।

आहा ! यहां का पवन कैसा आकर्षक और स्वास्थ्य-वर्द्धक

है । यहाँ के पर्यटन ने तो जीवन में एक नई स्फूर्ति । उत्पन्न कर्
रक्त-प्रवाह कैसा तीव्र गति से बह रहा है, कैसी ताजगी आ
है । दर्शकों के मन कैसे फूलों के समान ही विकसित हो रहे हैं
उनका उल्लास और आनन्द दिखाई ही पड़ता है । धन्य, प्रकृ
के रंग मंच उद्यानो ! तुम मानवी जीवन के विकास की कौन
गुत्थी को नहीं सुलझाते । यदि तुम्हें इस पृथ्वी पर के स्वर्ग क
तो अतिशयोक्ति न होगी ।

वायुयान

विचार तालिकायें:—

(१) पुष्पक विमान और वायुयान
(२) हाइड्रोजन गैस का आविष्कार
(३) जैपलिंग का आविष्कार
(४) आकाश भ्रमण और व्यापारिक उपयोगिता
(५) रण-क्षेत्र मे वायुयान का उपयोग

पक्षियो को हवा मे उड़ते देख मनुष्य के हृदय मे भी
मे विचरण करने की स्पर्धा उत्पन्न हुई। मनुष्य अनत
से उड़ने का प्रयत्न करता आ रहा है, किन्तु सफ
आंशिक ही मिलती रही हैं। इस बीसवीं शताब्दि
योरोप निवासियो ने उड़ने की मानवी अभिलाषा को पूर
दिखाया। योरोप वालो के समक्ष यह आविष्कार बि
एक नवीन खोज है यद्यपि इस विषय मे भारतीय स
जानकारी प्राप्त कर चुके थे। पुष्पक विमान आदि की
इसका पुष्टिक प्रमाण हैं। कालान्तर मे यह कला भा
विलुप्त हो गई। आज मे बीस तीस वर्ष पहले विमान
उडन खटोलो की कहानियो को कपोल कल्पित गाथाये मा
उनकी हँसी उड़ाई जाती थी किन्तु आज आकाश मे मँ
और घरघराते वायुयानो को देख सारी कल्पनाये वास
मालूम होती हैं।

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में गुब्बारो मे हाइड्रोजन गैस भर कर लोग आकाश मे विहार करते थे किन्तु यह गुब्बारे हवा से हल्के होते थे अतः वायु के प्रबल धक्कों का सामना नहीं कर सकते थे। थोड़े ही समय पश्चात् इन गुब्बारो का यह भय भी दूर कर दिया गया और ये गुब्बारे हवा में निर्विघ्न इधर उधर फिरने लगे।

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् मिस्टर काउन्ट जैपलिन ने इस कार्य मे एक नया आविष्कार किया जिससे गुब्बारो का मोटर मशीन द्वारा चलाना संभव हो गया और गुब्बारे पानी के जहाजो की भाँति आसानी से चलने फिरने लगे। यह जैपलिंग गुब्बारे वायुयान नहीं कहलाते। गुब्बारे सर्वथा हवा से हलके होते हैं। किन्तु वर्तमान हवाई जहाज हवा से भारी होते हैं। गुब्बारो मे एक अवगुण यह भी था कि वे केवल हवा की दिशा के अनुकूल ही चल सकते थे, जिससे मनुष्य को हवा का दास बना रहना पड़ता था, किन्तु वायुयान अब हवा के मुहताज नहीं हैं वे इंजन द्वारा मनुष्य की इच्छानुसार चाहे जिधर चलाये जा सकते हैं। मिस्टर ओर्विल और विल्बर राइट ने एक नये आकार के वायुयान निर्माण किये जिनकी आकृति बिलकुल चिड़ियों से मिलती जुलती है। इन्हे एयरप्लेन (Aero plane) कहते है। इनमे एक ही साथ वायु का दबाव डाल कर ऊपर उठाया जाता है, इसका प्रोपैलर मोटर द्वारा चलाया जाता है, जो दाये बायें और आगे पीछे भी हटाया जा सकता है।

कुछ हवाई जहाज सिगार की आकृति के होते है, जो एल्यूमीनियम और फौलाद के बने हुए होते है। इन्हे एयरशिप (Air Ship) कहते है। इसमे हलके डंडो की गाड़ियाँ लगी होती है, जिनके डंडो पर रेशम मढ़ा होता है। इन एअरशिपो (Air Ships) मे कई कई कमरे होते हैं। इन कमरो मे यदि

किसी कारण से छेद हो जाय तो यह नीचे नहीं गिरते अपितु शनैः शनैः नीचे उतर आते हैं। वायुयान में सबसे बड़ी आवश्यक इंजिन का छोटा और शक्तिशाली होना है। इंजन जि ही हलका और शक्तिशाली होगा उतना ही वायुयान होगा। एक प्रकार के वायुयान जो समुद्र पर भी चल सा और हवा में भी उड़ सकते है निर्माण हुए हैं; इन्हें स वायुयान कहते हैं। इसके आविष्कार ने समुद्र तल पर ज का उतरना और उड़ना सुगम कर दिया है।

विगत महासमर में इङ्गलैंड २०-२२, फ्रांस ५००-६००, अ ६००-६५०, और बेलजियम ४० वायुयान लेकर रण-क्षेत्र में थे। योरोपीय राष्ट्रों में अब यह हवाई होड़ हो रही है संसार उन्हें देख भौंचक्का हो रहा है। वर्तमान काल में हवाई लड़ाइयाँ लड़ी जा रही हैं। अन्य 'सबमेरीन' और 'सी जैसे क्रान्तिकारी हवाई जहाज तैयार हो रहे हैं। जो समु नौका की भाँति, पृथ्वी पर मोटर की भाँति और आका वायुयान की भाँति उड़ सकते हैं।

वायुयान के आविष्कार ने अगम्य मार्गों को सुगम दिया। कोई स्थान ऐसा नहीं रहा जहाँ पर वायुयान न सकते हो। वायुयान के आविष्कार ने एक संसार के सामने मार्ग तैयार किया है, जिसमें किसी तरह का रुकाव और काव नहीं। संसार के सहस्रों मील के सफर घंटों में होने एक ऐसा हवाई जहाज तैयार किया जा रहा है कि सुबह से चले और शाम को लंदन के ऊपर जा मंडराय। वायु के आविष्कार ने संसार के सामने जितना शीघ्र और व्यापी उन्नति की है उतनी किसी आविष्कार ने नहीं की।

लड़ाई के मैदान में वायुयान बड़े उपयोगी सिद्ध हुए वायुयानों की बम-वर्षा ने संसार में कोई स्थान सुरक्षित

—ोड़ा। समुद्री शक्ति रखने वाले राष्ट्र आज वायुयानों की शक्ति
—ख बिल्ली बन रहे हैं। वर्तमान योरोप में जो वायुयानों द्वारा
—यङ्कर नर-संहार किया जा रहा है उसे सुन कर हृदय में धैर्य
—हीं रहता, तथा आविष्कार के प्रति घृणा के भाव उदय होने
—गे हैं। आज वायुयानों का आविष्कार संसार को काल रूप हो
—हा है। आज के वैज्ञानिक विश्व संहारक बन रहे हैं। भगवान
वैज्ञानिकों की बुद्धि का नर-संहार-कारी आविष्कारों से राक
—र संसार की शान्ति, सुख और समृद्धि के आविष्कारों की
—ओर लगाये।

वायुयानों ने मनुष्यों की उड़ने वाली अभिलाषा को तो
—पूरा कर ही दिया, किन्तु अभी वायुयानों से अनेक संभावनायें
संभव है जो भविष्य में अपना रूप दिखायेंगी। वह दिन दूर
—नहीं जो आकाश में वायुयानों के ऊपर प्रदर्शिनी और मेले
—लगा करेंगे, उत्सव और खेल तमाशों का आयोजन होगा। इन
—कार्यों को कार्यान्वित करने के लिये केवल वायुयानों को
आकाश में स्थिरता ही लाना तो शेष है। देखिये —
वैज्ञानिक युग क्या क्या तमाशे दिखाता है।

ौर रामेश्वर धाम की यात्रा कर मुक्ति लाभ प्राप्त कीजिये।
ीं जाइये रेलों ने मार्ग बहुत छोटे कर दिये हैं। अब भारत
कोने कोने में रेलो का जाल बिछ गया है।
अब से ७०-८० वर्ष पूर्व संसार का व्यापार ऊँट, खच्चरों
ादि पर होता था, जिसमें जान जोखिम का सदैव भय रहता
।। तिस पर भी दुर्गम मार्गों की कठिनता और हिंसक पशुओं
। मार अलग नाक में दम किये रहती थी। नदियों में नौका
ा व्यापार होते थे। एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त को माल
हुँचाना बड़ा कठिन था। दुर्भिक्ष आदि कुसमय होने पर लाखों
नुष्य भूखों मर जाते थे, क्यों कि वहाँ तक नाज की सहायता
हुँचाना कठिन था। उस काल में व्यापार की भी यह गति-
ाधि न थी जो आज देखने में आती है। परन्तु रेलो के
ाविष्कार ने व्यापार में जान डाल दी, सर्वत्र माल का पहुँचना
ुगम हो गया। आज वहीं की पैदावार अन्यत्र बहुत शीघ्र
ुँचा दी जाती है। आज रेलो की कृपा से लाहौर की वस्तुओं
कलकत्ते में लाहौर के ही भाव ले लीजिये। पेशावर का
ाजा अंगूर आज ही शाम का शौक से लखनऊ में खा लीजिये।
िलीगढ़ का आलू गाभी दूसरे ही दिन मद्रास के बाजारों में
बिकता देख लीजियेगा शाम का दिल्ली के गोयल होटल में
ाना खाकर सुबह अपने घर बम्बई शहर में नाश्ता कीजियेगा।
कहने का अभिप्राय यह है कि रेलों के प्रचलन से आशा से
अधिक उन्नति की है। अभी वह दिन दूर नहीं कि कश्मीर के
ाजे सेव एक ही समय लाहौर बम्बई कलकत्ता और मद्रास
। शाम को खाये जाय यह कुछ असम्भव नहीं।
आयात और निर्यात के साधन न होने के कारण जिन स्थानों
ो चीज़ें पड़ी सड़ा करती थीं आज वही चीज़ें दूसरे स्थानों पर
ौगुने दाम को बिकती है। कुसमय में देशों को अन्न आदि से

सहायता पहुँचाने में रेलों ने बड़ा सराहनीय कार्य किया है।
जब तक रेलों का प्रचार नहीं हुआ था तब तक एक प्रान्त दूस
प्रान्त को किसी भी प्रकार की सहायता करने में असमर्थ थ
परिणाम यह होता था कि करोड़ों व्यक्ति भूख से तड़प तड़प क
मर जाते थे। किन्तु अब रेलों के प्रचार हो जाने से कष्ट जा
रहे है। अकाल के अवसरों पर रेलगाड़ियां करोड़ों मनुष्यों की
जान बचाती है। करोड़ों बेकार आदमी केवल रेल की मजदूरी
अपना पेट पालते हैं। करोड़ों की संख्या में कारीगर और मजदू
का खाना रेलों द्वारा चलता है। भारत में कुल ५ करोड़ व्यक्ति
ऐसे हैं जिनको केवल रेलों द्वारा भोजन प्राप्त है। रेलों के प्रचा
ने गवर्मेन्टों को अपने अपने देशों के प्रबन्ध करने में बड़ी सहा
यता पहुंचाई है। अचानक उठ खड़े होने वाले अवसरों पर ए
स्थान की फौज दूसरे स्थान पर रेलों द्वारा भेज कर शान्ति स्थापि
करने में बड़ी सरलता हो गई है। भारतीय रेलों से इंडि
गवर्मेन्ट को लगभग ३० करोड़ रुपया साल की आमदनी है
इसमें से कुछ कम २० करोड़ रुपया रेलों के प्रबंध पर गवर्मे
व्यय करती है, तथा लगभग १० करोड़ रुपया साल की एवरे
(Average) नेट इन्कम गवर्मेन्ट को रेलों से है।

रेलों के प्रचार ने संसार के सामाजिक और राजनीति
विकास में बड़ा सहयोग दिया है। रेलों के प्रचार ने भारतव
का तो एकदम कायाकल्प ही कर दिया है। भारत के बड़े ब
नगर योरोप के बड़े बड़े नगरों से सुन्दरता में कहीं कहीं ब
चले है, यह क्यों? केवल रेलों द्वारा सुगमता से वस्तु प्राप्त
साधनों से। समाज में देख भाल करने और देशाटन करने
की प्रवृति एक मात्र रेलों ने जागृत की है। तीर्थ स्थानों, मेलों
और सभा सोसायटियों में काफी जमाव और भीड़ भाड़ होने
लगी है। वैवाहिक दृष्टि कोण भी रेलों के प्रचार से सामान्यत

संकीर्ण हो गया है। दिल्ली, कलकत्ता और बम्बई, मथुरा के बंध अब समाज में प्रचार पा रहे हैं। व्यक्ति और समाज में मनोरंजनार्थ सैर सपाटे की मनोवृत्ति दिनों दिनों वृद्धि करती जा रही है। भारतवर्ष में, रेलों के प्रचार ने प्रान्तिकता के भाव को मिटा कर भारतीय समाज में एकता और राष्ट्रीयता के भाव अधिक मात्रा में उत्पन्न कर दिये हैं, जिससे भारतीय संगठन कुछ परिपक्व हो चला है। आपस के अधिक सम्पर्क और सभा सोसाइटियों के प्रचलन ने भारतीय मनोवृत्ति में प्रेम और भ्रातृ-भाव के भाव एक दम उठा दिये हैं। भाषा, वेश और संस्कृति की प्रान्तिक विभिन्नता दिन ब दिन मिटती जा रही है, और समाज राष्ट्र-भाषा और संस्कृति में अपेक्षाकृत बहुत निकट आता जा रहा है। यह सब रेलों की कृपा का फल है। रेलों के प्रचार ने डाक का जितना सुन्दर प्रबंध किया है वैसा किसी अन्य वस्तु का नहीं किया। जहाँ सहस्रों रुपया व्यय कर के भी समाचार पाना दुर्लभ था वहाँ अब चंद पैसा के द्वारा घर बैठ समाचार पा लेना कितने सुखद नहीं। आज सिंगापुर और अदन, लंदन और न्यूयार्क घर आँगन में मालूम होते हैं। केवल =)॥ पैसे में सातवें दिन न्यूयार्क से अपने आत्मीय के समाचार दहला मंगा लीजिये, आज हम विचार भी नहीं कर सकते कि १०० वर्ष पहले लोग क्या कर और कैसे समाचार पाते होंगे? समाचार पत्रों को जो आज बाट आ रहा है, वह भी रेलों की ही कृपा है। आज स्थान स्थान से समाचार पत्रों की खबरें केवल एक पैसे में चाहे जहाँ बैठे पढ़ लीजिये। कहने का अभिप्राय यह है कि रेलों से जनता और गवर्मेन्ट दोनों ही को अपरिमित लाभ हुये हैं। हमें इनके आविष्कारकों और प्रचारकों के प्रति कृतज्ञता के भाव रखना चाहिये।

मुद्रण-यंत्र

विचार तालिकायें—

(१) *विषय प्रवेश*
(२) *जन्म और क्रमशः उन्नति*
(३) *मशीन-युग*
(४) *मुद्रण-यंत्र की उपयोगिता*
(५) *मुद्रण सम्बन्धी अन्य विचार*

संसार के उपयोगी आविष्कारो मे से मुद्रण-यंत्र का आविष्कार बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ है। व्योमयान, रेडियो आदि आविष्कारो मे व्यक्तिगत लाभो की प्रधानता है किन्तु मुद्रण-यंत्र के आविष्कार मे सार्वजनिक लाभ ही निहित है। पुराने समय मे विचारो का विकास व्यक्ति तक ही सीमित था। उससे समाज को कोई लाभ नहीं हो सकता था; किन्तु मुद्रण यत्र के आविष्कार ने ससार की यह कठिनता सुलझा दी। अब विचारो के विकसित करने मे बडी आसानी होगई है। आज व्यक्ति अपने विचार-धारामे बडी सुगमता से जनता को प्रवाहित कर सकता है।

आधुनिक-मुद्रण-कला के प्रादुर्भाव का श्रेय योरोपीय जातियो को है। कहते है कि इस कला का जन्म ईसा के जन्म के ६०० वर्ष बाद चीन मे हुआ था। जो हो किन्तु आधुनिक मुद्रण-कला का श्रेय मिस्टर गर्टेनवर्ग और कोस्टेर महोदयो को

जिन्होंने क्रम से १४२६ व १४३६ में अपने आविष्कारों को [ज]न्म दिया।

ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी में जर्मनी के एक विद्वान ने [धा]तु के अक्षर बनाकर छापने का काम लिया और उसे इस [का]र्य में समुचित सफलता भी प्राप्त हुई। कुछ समय पश्चात् [क्रे]न होयर महाशय ने एक लोहे का यंत्र बनाकर उसका सुधार [कि]या। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भाप द्वारा चलने [वा]ला मुद्रण-यंत्र इङ्गलैंड वालों ने तैयार किया जिससे २००० [का]गज एक घन्टे में एक ओर छपते थे। कुछ दिनों बाद भाप [के] स्थान पर मशीनें बिजली द्वारा चलने लगीं। बिजली द्वारा [सं]चालित मुद्रण-यंत्र में सोलह पेजी समाचार पत्र की ५५,००० [प्र]तियाँ तक छपने लगीं। इस कला में नित्य नये सुधार [हो]ते जा रहे हैं। अभी तक वैज्ञानिकों को इसके विकास पर पूर्ण [सं]तोष नहीं है। जब से लीनो टाइप मशीन का आविष्कार हुआ [है] तब से कम्पोजीटरों के काम को बड़ी सहायता मिली [है], इससे अक्षरों का ढलना, छपना आदि कार्य सब साथ ही [सा]थ होते चलते हैं। हिन्दी का लीनो टाइप यंत्र बनाने में बड़ी [क]ठिनाइयों का सामना करना पड़ा था, क्योंकि देव-नागरी अक्षरों [क]ी संख्या अधिक है। दूसरे मात्रा और संयुक्ताक्षरों की अलग [क]ठिनाई थी। हिन्दी-लीनो-टाइप का श्रेय एकमात्र हरी गोयल [सा]हू को है जो एक भारतीय व्यक्ति है। हिन्दी समाचार पत्र [भ]ी अब अंग्रेजी पत्रों की भाँति लीनो-टाइप मशीन से छपते हैं।

मुद्रण यंत्र के आविष्कार ने परिश्रम और व्यय दोनों में [क]मी की है। नई प्रगति और विचारों के विकसित करने में मुद्रण-कला ही ने बड़ा योग दिया है। इस लाभोपकारी आविष्कार के ऋणी सब समाज और व्यक्ति हैं। आज मुद्रण-यंत्र का ही प्रभाव है कि लोगों के घर बड़े-बड़े महापुरुषों

के विचारों से भरे पड़े हैं । साधारण व्यक्ति भी कालीदा कणादि और वाल्मीकि के विचारों से लाभ उठा सकता है। इ कला के द्वारा समाज में बड़ी भारी जागृति हो रही है । शि का प्रचार भी बहुत कुछ अंश मे मुद्रण-कला पर अवलंबित है संसार की आधुनिक नवीन प्रगतियें और स्वतन्त्रता के भा मुद्रण-यंत्र के प्रताप ही से जनता के हृदय मे बैठे है।

संसार के समस्त राष्ट्र और समाज केवल मुद्रण-कला प्रसार से सुसंस्कृत हुये हैं। क्या ही अच्छा हो कि इस क द्वारा समस्त संसार एकता की अटूट जञ्जीर मे बँध जाय औ सहोदर भाव को एक लहर समाज के दूरवर्ती कोनों तक दौ जाय।

मानवी-शक्ति बहुत ही कम है, संसार मे मानवी शक्ति बहुत ही कम काम हो पाता है; जब से मनुष्य ने भौ शक्तियों को अपना वशवर्ती बनाना आरंभ किया है, त नित नये आविष्कारो के जन्म ससार मे होने लगे हैं। आविष्कार ने पृथ्वी को यात्रा बहुत सरल करदी व्योमयान के उदय ने आकाश पर मनुष्य का पूरा अधि स्थापित कर दिया है, अब वह आकाश पर देवताओ की विचरण करता है। विजली के आविष्कार ने तो रही सही मानवी निर्बलताओ को दूर कर दिया, विजली के भयसे अंध गुफाओ मे छिपता फिरता है। पानी का तो पूछना ही क वह विजली के भय से देखिये किस गति से दौड़ता है। क्या कहे? अब तो कोई ऐसी मशीन नहीं जो विजली संचालित न होती हो। विद्युत के आविष्कार ने मनुष्य वर्षों के काम को घटो मे परवर्तित कर दिया है।

भाप, गैस, विद्युत और ईथर भौतिक शक्तियाँ है जिन मनुष्य अपने बुद्धिवल से अधिकार जमाता चला जा रहा। सारा विज्ञान इन्हीं चारो महाशक्तियो पर निर्धारित है। संस मे जितने आविष्कार हुये है वे सब इन्हीं चारो शक्तियो रूपान्तर है। इन्हीं शक्तियो द्वारा जड़ पदार्थो मे गति उत्पन्न जा सकती है, इन्ही के द्वारा समाचार भेजे जा सकते है, इ के द्वारा दूर की वस्तुयें निकट देखी जा सकती हैं। ये शक्ति भगवान की अपूर्व देन है, जिनसे मानव-समाज का ब उपकार हो रहा है। भगवान के इन गोपनीय कार्यो को मनु की बुद्धि धीरे धीरे समझ पाई है। ज्यो ज्यो मनुष्य की ज्ञा शक्ति बढ़ती जाती है, त्यो त्यो वह इन भौतिक शक्तियो अपना अधिकार जमाता जाता है। आर्य-वैदिक काल

...ावरण के पास केवल एक पुष्पक विमान था, किन्तु आज
...विमान सर्वसाधारण के विचरण की वस्तु हो गये हैं।
कुछ समय पहले साधारण किलो पर अधिकार करना बड़ा
...दुष्कर कार्य था, जिस पर अधिकार करने में करोड़ों मानवी
...शक्तियों का क्षय होता था, किन्तु आज डाईनामाइट के द्वारा
मिनटों में बड़े-बड़े विशाल किलों को ढाया जा सकता है।
...डाइविंग बेल' के द्वारा बड़े बड़े विशाल-काय जहाजों को बात
की बात में गहरे समुद्रों से निकाला जा सकता है। बड़े बड़े
...विशाल और ऊँचे मकानों में लिफ्ट के द्वारा सैकिन्डों में चढ़ा
जा सकता है। आज कृत्रिम बादलों द्वारा जलवृष्टि की जा
...सकती है। मुद्रण-यंत्र से घंटे में लाखों प्रतियां छापी जा सकती
हैं। विज्ञान के अनूठे आविष्कार ने मनुष्य जाति का क्या क्या
...उपकार नहीं किया? यदि गानों का शौक रखते हो तो तनिक
ग्रामोफोन का रिकार्ड चढ़ा दीजिये, बड़े बड़े गायकों के
...उत्तमोत्तम गाने सुनिये। यदि घूमने फिरने में कष्ट न हो तो
...कम्पनी गार्डन जाकर रेडियो पर अनूठी संगीत की तान सुनिये।
कहिये ये समस्त सौलन्य विज्ञान ही के चमत्कार हैं न! लाउड-
...स्पीकरों के आविष्कार ने तो व्याख्यानों का आनंद ही बढ़ा
...दिया। लाखों की भीड़ में सुख से एक आदमी का व्याख्यान
...सुन लाभान्वित हूजिये।

इधर कपड़ा विभाग में तो विज्ञान के आविष्कारों ने कमाल
ही किया है। यदि कपड़ा बुनने की मशीनों का प्रचलन न हुआ
...होता तो लगभग संसार का आधा भाग नग्न होता। आज
...संसार में सस्ते से सस्ता कपड़ा तैयार करके इस आविष्कार ने
...अपरिमित उन्नति की है। हाथों द्वारा भी उत्तम प्रकार के कपड़े
...तैयार होते थे, और हो भी रहे हैं किन्तु वे संसार के कपड़े की
आवश्यकता को पूरा नहीं कर सकते। तिस पर भी समय और

लागत इतनी बढ़ जाती है कि बाजार मे उसके दाम उठाना
हो जाता है। हाथ के द्वारा तैयार किये हुए कपड़े का
अधिक होने के कारण सर्वसाधारण व्यक्ति खरीद भी
सकते हैं। ससार मे अत्युत्तम श्रेणी तथा बहु-प्रकार के
मिलो में तैयार हो रहे हैं जिनकी स्वच्छता और सुन्दरता
हाथ के बने कपड़े नहीं पा सकते।

मनुष्य की यह लौकिक ईषणा बढ़ कर आकाश मार्ग
ओर घूमी और इस दृष्टिमान जगतान्त के अवलोकन की
अभिलाषा ने उसे दूर दर्शक यत्र (दूरबीन) बनाने के
विवश किया। इस दूरबीन के आविष्कार ने तो लोक लो
का अन्तर ही कम कर दिया। जहाँ मनुष्य नंगी आँख से
मील की दूरी की वस्तु को नहीं देख सकता था, वहाँ अ
करोड़ो मील के ग्रहो की गतिविधि निरीक्षण करता है
कला मे इतनी उन्नति हो जाना असभव नहीं कि लो
ग्रह उपग्रहो के समाचार सिनेमा के पर्दे के भाँति अवलोकन
करें। एक ग्रह से दूसरे ग्रह मे पहुँचने के यत्रा की खोज में
निक लगे हुए है। किन्तु अभी आशिक सफलता ही उन्हे
कार्य मे मिली है। किन्तु वह दिन दूर नहीं कि लोग एक
दूसरे ग्रह में ऐसे ही जाने लगेंगे जैसे आजकल व्योमयान से
महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप मे जाते है। भगवान वह शुभ
शीघ्र लायें।

विज्ञान ने जहाँ ससार के मनुष्यो के लिये अनेक
समृद्धि उपस्थित की है, वहाँ बडे-बडे विशाल और सहार
गेस और यत्रा का भी आविष्कार किया है। भयकर बम, ल
व्योमयान और विषैले गैस केवल मनुष्य जाति के सहार
निर्माण हुए हैं। वर्तमान युद्ध क्षेत्र मे केवल वैज्ञानिक ल
लड़ी जा रही है। इस विज्ञानिक सिद्धान्तो पर लडी जाने व

ई में कितना नर-संहार हो रहा है. इसका विचार बेचारे
ष्कारों के ध्यान में भी न आया होगा, क्योंकि उनके
ाल्क में इनका तनिक भी विचार होता तो वे कदापि ऐसा
संहारकारी आविष्कार न करते। बेचारे एडीसन और
न्यूटन के हृदय में कभी यह विचार न आया होगा कि हमारे
ष्कारों का ऐसा दुरुपयोग किया जायगा।

अब तो वैज्ञानिक युग है. प्रत्येक कार्य में विज्ञान की
यता ली जा रही है। अभी न मालूम क्या क्या और
कैसे आविष्कार भविष्य हमारे सामने लायेगा। परन्तु हम
स परमात्मा से यही प्रार्थना करते हैं कि वह इन विज्ञान
ओं को सद्बुद्धि प्रदान करे जिससे वह कोई ऐसा
विष्कार न करें जो संहार तथा नष्टता का कारण बने।

त्रपट या सिनेमा

चित्रपट के समस्त कार्य विद्युत-शक्ति द्वारा ही संचालित ते हैं। चित्रपट में विविध मानवी चेष्टायें, भावव्यंजनायें और गतियों के विभिन्न चित्र यथाक्रम चित्रित किये हुए होते हैं। क एक मानवी चेष्टा और गतिविधि को प्रदर्शित करने के लिये हस्रों ही चित्र अपेक्षित होते हैं। दूसरे शब्दों में यों कहिये कि क चेष्टा इंगित करने के लिये एक चित्र चित्रित करना पड़ता है। क साधारण सी घटना दिखाने के लिये सहस्रों ही चित्र चित्रित रने पड़ते हैं। इसी प्रकार एक आख्यायिका, उपन्यास अथवा हानी को चित्रपट पर दिखाने के लिये करोड़ों चित्रों की आवश्यकता होती है। इन चित्रों का सामूहिक नाम ही फिल्म है। क मामूली फिल्म तैयार करने में लाखों रुपया व्यय होता है। छाया-चित्रों ने जगत में एक क्रान्ति उपस्थित कर दी है। बड़े संगीत घरों और अभिनय-शालाओं के ताले बन्द करा दिये हैं। सिनेमा नित्य जनता की अभिरुचि को अपने वश में करते जाते हैं। आधुनिक सिनेमा-शालाओं में एक से एक बढ़कर अभिनय दिखाया जाता है। एक से एक आकर्षक और मनोहर दृश्य दिखाये जाते हैं, जो जनता के हृदय पर अपना विचारिक प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहते। फिल्म व्यवसाय संसार में बड़ी तीव्रगति से उन्नति कर रहा है। इस व्यवसाय में अमेरिका सब से अग्रगामी रहा है। यह व्यवसाय पिछले न साल से भारत में भी चल पड़ा है। भारत में भी फिल्म व्यवसाय दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर रहा है। र से एक बढ़िया खेल रंगमंच पर लाये जाते हैं जिससे भारतीय फिल्म व्यवसाय का भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल प्रतीत होता है। सिनेमाओं ने भारतीय मनोवृत्ति में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है भारतीय जनता का रहन सहन अपेक्षाकृत सिनेमाओं के प्रभाव के कारण ऊंचा उठ रहा है।

...ी यथोचित प्रचार है । आज भारतीय रंग मंच पर ऐसे हा... सेन्स पाने वाले हैं । तब ही व्यक्ति और समाज का हित होगा ...गंदे अभिनय भारत में यद्यपि उठने न देंगे । अतः वर्तमान पार्लमेन्ट को इन सिनेमाओं की गंदे साहित्य पर पर्याप्त दृष्टि रखनी चाहिये ।

रेडियो द्वारा सुविधा

विचार तालिकायें —

(१) प्रस्तावना
(२) रेडियो का परिचय
(३) रेडियो द्वारा समाचार पाने की सुविधा
(४) रेडियो मनोरंजन का साधन है
(५) व्यापार और व्यवसाय में रेडियो की सहायता
(६) सशंक धारणाओं का निवारण
(७) आक्रमण और अन्य भय से सावधानी
(८) उद्योग धंधों को जीवित करने में सहायता

जब मनुष्य दिन भर के परिश्रम से थक जाता है, तब उस हृदय मे एक प्रकार की अभिलाषा उठती है कि किसी प्रकार यह मानसिक क्लान्ति दूर हो। इस क्लान्ति को दूर करने के लिये ही मनुष्य अनेक मनोरंजनो को ढूँढता है। कोई सुमधुर राग अलापता है तो कोई सिनेमाओं मे जाकर मन बहलाता है। कोई यदि पहाड़ी दृश्यो की मन भावनी छटा देख कर प्रफुल्लित होता है तो कोई कल कल गान करती हुई सरिता के दुकूल पर ही आनंद अनुभव करता है, कोई क्लब घरो मे जाकर नृत्य-कला मे सुख का साज देखता है तो कोई रेडियो से अपना मनोरंजन करता है।

संसार मे जितने मनोरंजन के साधन हैं उनमे से रेडियो भी एक है। यह एक यंत्र है जिसका महाशय मारकोनी ने १६०० मे आविष्कार किया था। इस यत्र का उपयोग एक स्थान से समाचार और संगीत दूसरे स्थानो मे भेजने के लिये किया जाता है। बड़े बडे शहरो मे रेडियो स्टेशन होते हैं जहाँ से समाचार या सगीत भेजे जाते हैं। इस यत्र के द्वारा ससार के समाचार सुने जा सकते है और घर बैठे अच्छे से अच्छे गायक के मधुर कण्ठ का आनद लूटा जा सकता है।

जहाँ रेडियो मशीन रहती है वहाँ ससार के समाचार उपस्थित रहते है। किन्तु यह यत्र केवल धनवान लोगो का ही उपकार करता है। निर्धन और ग्रामीण बेचारे इस आनंद से वचित रहते है। उनके पास ऐसे साधन नहाँ जो यह यंत्र क्रय कर सके।

ससार को रेडियो द्वारा जो लाभ पहुँचे है उनकी कोई सीमा नही है। यह बात देखने मे आई है जहाँ प्रोपेगेन्डा (प्रचार) दूसरे साधनो से असफल रहा है वहाँ रेडियो बड़ा सफल रहा है। कोई प्रचार जो रेडियो द्वारा सुगमता से होता

है वैसा किसी अन्य साधन से नहीं होता। अब इस ब्राडकास्टिंग (Broad Casting) यंत्र द्वारा घर बैठे एक स्थान से खबरें, सुन्दर लेख, कहानियों और तरह तरह की मनोरंजक सामग्री भेजने का प्रबन्ध हो गया है और यह निश्चय हो गया है कि यह बहुत लाभदायक वस्तु है। भारतवर्ष अभी भौतिक उन्नति में इतना अग्रसर नहीं जैसा यूरोप। अतः इनके लिये रेडियो ही ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा इन्हें ऐसे प्रकार की शिक्षा दी जा सकती है। रेडियो द्वारा गाँव तथा नागरिकों के लिये हर तरह की बातें बताई जा सकती हैं। कृषि, व्यापार, कला कौशल आदि के प्रबंध में अनेक अच्छी अच्छी बातें रेडियो द्वारा सुनाई और बताई जा सकती है, जो कि यूरोप, अमेरिका और दूसरे अन्य देशों में प्रचलित हैं। जिससे भारतीय जनता पर्याप्त लाभ उठा सकती है।

व्यापार, व्यवहार, कृषि, पशु पालन और दूध की बनी वस्तुओं के व्यापार के सम्बन्ध में बहुत सी बातें रेडियो द्वारा समझाई जा सकती है, जो अब तक भारत आदि स्थानों में इसकी प्रथा बिलकुल नहीं है।

यदि इनका प्रचार अपने देश में हो जाय तो बहुत लाभ हो सकता है। मवेशी और दूसरे जानवरों की बीमारियों के संबंध में बहुत कुछ समझाया जा सकता है और उनके ऐसे सीधे नुस्खे भी बताये जा सकते हैं, जिन्हें पशुओं को देकर लाभ उठा सकते हैं। इसी भाँति कृषि की बीमारी व कीड़ों के संबंध में भी सुविधा प्राप्त की जा सकती है।

घर मुहल्ला गाँव और नगरों की स्वच्छता के संबंध में रेडियो द्वारा बहुत कुछ समझाया जा सकता है क्योंकि स्वच्छता के अभाव में अनेक रोग आये साल अनेक कष्ट देते हैं। रेडियो द्वारा बताया जा सकता है कि अमुक रोग का अमुक इलाज

है और उसके लिये अमुक सावधानी रखनी चाहिये।
अमुक रोग के लिये अमुक स्थान से औषधि प्राप्त हो सकती।

बहुत से अशिक्षित और अनपढ़ आदमियों के हृदय में धारणा बैठी हुई है कि सरकारी कानून केवल जनता को दुःख देने और अपना स्वार्थ साधन सिद्ध करने को ही बनाये। उनकी यह धारणा रेडियो द्वारा बड़ी सुगमता से मिटाई सकती है, क्योंकि समाचार पत्रों का प्रचार तो केवल शिक्षित जनता तक ही परिमित रहता है।

जब केन्द्रीय गवर्नमेन्ट अथवा प्रान्तीय सरकारें जनता को कोई कानूनी रियायत अथवा छूट अथवा कोई अधिकार देती तो साधारणतया गाँव के निर्धन किसान तथा साधारण अशिक्षित जनता पर यह खबर नहीं पहुँचती और साधारण कर्मचारी किसी समय इसका अनुचित लाभ उठा कर बेचारे किसानों तथा दीन जनता पर मनमाने अत्याचार करते है। रेडियो से ऐसे समस्त बातों की सच्ची खबरें और सरकार की कृपा के किसानो तथा साधारण जनता तक पहुँच जाती है जिनके रेडियो से पहले पहुँचने का कोई प्रबन्ध न था।

किसी वैरी के हमले, चोर और डाकुओं के गिरोह के आ का समाचार अल्प समय में ही रेडियो द्वारा जनता तक पहुँ दिया जाता है। इन समस्त लाभकारी बातों के अतिरिक्त सम पारके देश देशान्तर की खबरें घर पर बैठे बिठाये मिल जा हैं। रेडियो के प्रचार से पूर्व अनेक झूठी धारणायें उ ...य करते थे जिससे जनता में क्षोभ उत्पन्न हो जाता। ज.. से पारस्परिक विद्वेष और लडाई झगडे उत्पन्न हो जाते किन्तु अब बात की बात में रेडियो द्वारा उन झूठी सूचना का निवारण कर दिया जाता है जिससे जनता की अशान्ति और क्षोभ एक दम मिट जाता है।

रेडियो द्वारा सुविधा

रेडियो के आविष्कार से पहले व्यापारी लोग वस्तुओं का भाव ठीक न बता कर जनता को भर पेट ठगते थे और जनता को प्रत्येक दशा में व्यापारी की बात सच्ची मान आर्थिक घाटा सहना पड़ता था, किन्तु अब नित्य जब वह रेडियो पर बाजार के सही भाव सुनते हैं तो धोखा नहीं खा सकते और दूकानदार को अपने खून से सींचा हुआ पैसा मुफ्त में कदापि नहीं दे सकते।

गाँव तथा नगर वालों की अपनी आर्थिक दशा सुधारने के लिये बहुत कुछ बताया जा सकता है। उदाहरणार्थ बेंत की चीजें बनाना भाँति भाँति के अचार और मुरब्बे तैयार करना, शहद की मक्खियाँ पालना, रस्सियाँ बनाना तथा अनेक प्रकार की दस्तकारियाँ सिखाना और चमड़ा बनाना इत्यादि इत्यादि।

भारतीय उद्योग धन्धे जो लगभग लुप्त प्राय: हो गये हैं उनका पुन: प्रचार करने के लिये रेडियो द्वारा समुचित प्रचार किया जा सकता है। यह बात भी रेडियो द्वारा बड़ी सरलता-पूर्वक बताई जा सकती है कि कौन कौन सी वस्तुओं की खपत कहाँ कहाँ है, जिससे उस स्थान पर उन वस्तुओं को भेज अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

निस्सन्देह रेडियो का आविष्कार मनुष्यों का बड़ा उपयोगी है। इससे शारीरिक या मानसिक और आत्मिक सब ही प्रकार का लाभ उठाया जा सकता है। रेडियो मनोरंजन की तो सर्वोपरि वस्तु ही है। इस से बढ़कर संसार में मनोरंजन का और कोई साधन नहीं। संसार मारकोनी के इस आविष्कार का चिर ऋणी रहेगा।

क्या हिन्दी राष्ट्-भाषा हो सकती है ?

जो भाषा समस्त राष्ट्र में बोली जाती हो, जिसका साहि राष्ट्र की संस्कृति को प्रकट करने वाला हो, लिखने बोलने सरल हो, जिसको अधिक संख्या में जनता बोल और सम सकती हो, जो सामाजिक और आर्थिक व्यवहार में लाई ज सकती हो, वही भाषा राष्ट्र भाषा होने की अधिकारिणी हे सकती है।

भारत के प्रान्तों की विविध भाषाओं का आदि स्रोत संस्कृ से निसृत हुआ है। उनकी लिपि भी नागरी लिपि ही है। गुजराती महाराष्ट्री और बगाली भाषाओं मे केवल क्रिया पादों में अतर है अन्यथा वह हिन्दी जैसी भाषा ही है अत इन प्रान्तों मे हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने मे कोई आपत्ति नही । ससार की जितनी लिपियाँ है उनमे नागरी लिपि सब से स्पष्ट और सरल है। नागरी अक्षरो का लिखना बडा सुगम है । अत. जिन भाषाओं की लिपि नागरी है उन्हे हिन्दी अपनाने मे किसी प्रकार की बाधा नही हो सकती । कुछ लोग उर्दू को राष्ट्र भाषा बनाने के पक्ष में है, उनकी दलीलें भी अपने पुष्टि प्रमाण में सबल है किन्तु उर्दू भाषा और हिन्दी भाषा मे कोई भेद नही है । हिन्दी उर्दू दोनों के क्रिया पाद एक है । हिन्दू महाशय हिन्दी मे सस्कृत शब्दो का पुट दे कर बोलते हैं और मुसल्मान सज्जन अरबी, फारसी के शब्दो

पुट देने में अपना गौरव समझते हैं। अरबी, फ़ारसी और
स्कृत के विशेष प्रभाव से बची हुई भाषा विशुद्ध हिन्दी
, इसे अपनाने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। हाँ, एक
गापत्ति अवश्य हो सकती है वह लिपि की आपत्ति है और
गरी लिपि अरबी लिपि की अपेक्षा सरल है और शीघ्र सीखी
ा सकती है। मुसल्मानों को इसे निष्पक्ष भाव से अपनाने में
ोई आपत्ति नहीं होनी चाहिये। कुछ लोग कहते हैं कि रोमन
ापि सबसे सरल है. इसे अपनाने से हिन्दू मुसल्मानों का
श्न भी नहीं रहता। इसके अक्षर भी कम हैं। शार्ट-हैन्ड मशीन
आदि की मशीन तैयार करने में आसानी होती है। इसके संबंध
में हम यही कहते हैं कि रोमन लिपि भारत की मौलिक परिस्थिति
में पनप नहीं सकती। वह भारतीय कंठ ध्वनि से उच्चरित होने
वाले शब्दों को स्पष्ट उच्चारण करने में सफल नहीं हो सकती।
भारतीय प्रान्तीय भाषाओं में हिन्दी की अपेक्षाकृत व्याप-
त्व अधिक है। भारत की जनता हिन्दी बोल और लिख
सकती है. अन्य प्रान्तीय भाषाओं का क्षेत्र बहुत परिमित और
छोटा है। बंगाली भाषा का प्रचार केवल ५ करोड़ आदमियों
पर अवलंबित है. गुजराती भाषा भाषी केवल ३ करोड़ हैं. इन
भाषाओं के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के क्षेत्र बड़े संकुचित हैं
किन्तु हिन्दी भाषा को १८ करोड़ आदमी समझ और बोल
सकते हैं। भारत के पवित्र स्थान सब के सब लगभग हिन्दी
भाषी प्रान्तों में हैं अत हिन्दी भाषा ही ऐसी है जिसके सम्पर्क
में अधिक से अधिक भारतीयों को आना पड़ता है हिन्दी में
संक्षिप्त लिपि का प्रचलन हो रहा है हिन्दी टाइप राइटर और
लीनो टाइप यन्त्र हिन्दी अक्षरों में तैयार हो चुके हैं जो उर्दू में
सर्वथा असम्भव है। रोमन और अरबी लिपियाँ भारतीय संस्कृति
की परिचायक नहीं है और न हो सकती है. जिस भाषा और

लिपियों की गुद्धि उत्पत्ति जिस देश में नहीं होती वह उस देश कम पनप पाती है। दक्षिणी भारत हिन्दी के संपर्क और व वरण से दूर था। किन्तु अब दक्षिण में पिछले बीस वर्ष में ला व्यक्ति हिन्दी जानने वाले हो गये हैं और होते जा रहे हैं। वह दिन दूर नहीं कि वहां हिन्दी का व्यापकत्व ऐसे शीघ्र हो जावे जैसा सी० पी० आदि प्रान्तों में है। ऊंची कक्षा के माध्यम बनाने जाने के लिये भी हिन्दी में अब पर्याप्त साम वर्त्तमान है। अतः अब कोई बात ऐसी नहीं रहती जिससे हि राष्ट्र-भाषा न हो सकती हो। अतः भारतीय भाषाओं में हि ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है दूसरी अन्य भाषा नहीं हो सक रहा हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी का प्रश्न यह बड़ी सुगमता सुलझ सकता है नागरी लिपि अपना ली जावे और भाषा अरबी, फारसी सस्कृत के सस्कृत गर्भित शब्दों को अछूता रख जाय। राष्ट्र-भाषा की भाषा सरल से सरल हो। उसे न और सस्कृत का रूप न दिया जावे। भारत को राष्ट्र-भाषा बड़ी आवश्यकता है। राष्ट्र-भाषा अपनाये बिना राष्ट्र का उत्थान कठिन है। अत भारतीय भाषाओं में हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा की अधिकारिणी है। अन्य प्रान्तिक भाषायें नहीं।

पाश्चात्य शिक्षा के गुण-दोष

चार तालिकायें:—

(१) मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करना और उन्हें कर्तव्य पालन करने के योग्य बनाना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

वर्तमान शिक्षा का सम्मान विशेष कर मानसिक शिक्षा की ओर अधिक है। वर्तमान शिक्षा में एक दोष यह है कि वह ालकों के दृष्टि-कोण को व्यापक नहीं बनाती। वर्तमान शिक्षा लोकोपकारी महापुरुष पैदा करने की क्षमता नहीं रखती यही कारण है कि अरस्तू और सुकरात कम पैदा हो रहे हैं। विदेशी भाषाओं का माध्यम ज्ञानार्जन करने में बड़ा भयानक सिद्ध हुआ है। होनहार विद्यार्थियों की सारी शक्ति विदेशी शब्दों की जानकारी प्राप्त करने में ही व्यय हो जाती है तथा वास्तविक विषय-ज्ञान की सर्वदा कमी रह जाती है। विदेशी भाषा के माध्यम के कारण ज्ञान के स्थूल सिद्धान्त भी दुरूह प्रतीत होते हैं। विद्यार्थी अपने भावों को व्यक्त करने में ना सर्वदा अयोग्य ही सिद्ध होते हैं। विदेशी भाषा के माध्यम के कारण विचारों में वह मौलिकता नहीं आती जो अपनी भाषा के माध्यम से आती है। यह निर्विवाद सिद्ध है कि विदेशी भाषा के मर्मज्ञ कम पाये जाते हैं अतः विदेशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा को रुचिकर बनाना कठिन हो जाता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में [illegible] विज्ञान की ओर बहुत

ही कम ध्यान दिया जाता है। वर्तमान शिक्षा के प्र
विद्यार्थियों में आलस्य और प्रमाद की भावनायें उत्पन्न होती
रही है। शारीरिक श्रमों की ओर से प्रायः विद्यार्थियों की प्र
रुचि उदासीन रहती है। सादगी नाम को नहीं आती फैशन
अपव्ययता शैतान की आँत की भाँति नित्य बढ़ती दृष्टिगोचर हो
है। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्म शिक्षा को कोई स्थान ही
अत विद्यार्थी कोरे प्रकृति-वाद के उपासक हो जाते हैं जिन्हें
शान्ति नाम मात्र को भी नहीं मिल सकती। वर्तमान शि
आत्म-संयम में कमी तो लाती ही है साथ ही दास मनोवृत्ति को
जन्म भी देती है। जहाँ जातीय भावनायें नष्ट होती जा रही
वहाँ वर्तमान शिक्षा धर्म से तो नितान्त उदासीन ही बन रही है
वर्तमान शिक्षा ने भाव भाषा और सस्कृति का पर्याप्त क्षे
पहुँचाई है।

वर्तमान शिक्षा ने हमारे रहन सहन को अवश्य कुछ ऊँचा
उठाया है किन्तु आर्थिक सकट के कारण वह हमारे लिये
अनुपयोगी ही सिद्ध हुआ है। जिस शिक्षा में स्वावलवन की
शिक्षा नहीं वह वास्तव में निरर्थक है। वर्तमान शिक्षा हमें
धनोपार्जन करने में कुछ सहायता नहीं पहुँचाती। यह
वर्तमान शिक्षा से जनता का विश्वास हटता जाता है।

वह दिन दूर नहीं कि जनता इस विदेशी भाषा के लबादे
को उतार कर फेंक देगी। शिक्षा ऐसी हो जो हमारे भावी भविष्य
को उज्ज्वल बनावे। वर्तमान शिक्षा आज भारत को अनुपयोगी
सिद्ध हो रही है। इसने हमारे भारतीय दृष्टि कोण को बिलकुल
बिगाड दिया है। इसने हमारी जातीय भावनाओं को बिलकुल
कुचल दिया है। इसका जितना ही शीघ्र आवर हालिंग
(जीर्णोद्धार) किया जाय उतना ही हितकर है।

शेष नहीं जो नगरों मे प्राप्त न हो । अत. नगरो को मैं अ
पुरी के नाम से पुकारूँ तो कुछ अनुचित नहीं होगा। निस्सन्देह न
निवास बड़े पुण्यो से प्राप्त होता है। किसी ने कहा है कि "न
बसे सो देवावास गॉव बसे सो भूतावास"

भारतवर्ष के गॉव, आधुनिक सभ्यता से कोसों दूर हैं। न
पर न जन कोलाहल और न गमना गमन का हू हल्ला। प्रात
काल होने से पहले ही से प्रकृति अपनी घड़ी लिये खड़ी र
है। जिधर दृष्टि डालिये उधर आनंद ही आनंद है। प्रह
अपनी निराली छवि से सब के हृदय मे बैठी जाती है। प्रात
कालीन शीतल समीर कैसा स्वर्गीय आनंद प्रदान कर रहा है
पवन से हिलते हुये पत्ते रास्ते चलते हुये पथिकों का आह्वान
रहे हैं।

पवन पुष्पो से पराग लेकर चारो ओर बखेर रहा है।
चिड़ियाँ सुरीलीतान मे चहचहा रही हैं । भगवान सूर्यदे
नित्य मुस्कराते हुये उदय होते है। पर्वत उपत्यकाओं, न
किनारे और अथाइयो पर बच्चे कोलाहल करते हुये आन
उपभोग कर रहे हैं । उधर देखो अब नगे किसा
किस तत्परता से अपने कार्यों मे जुटे है। उनका बन्धु वात्स
भाव उमडा ही पडता है। सादगी की तो मानो वह साक्षात् मू
ही हैं। पारस्परिक सहानुभूति और प्रेम से उनका हृदय कै
लथ पथ है उसे नगर वासी अनुभव नही करते। आडम्बर दो
मिथ्या दिखाने का तो वहाँ नाम नहीं है। इनकी धर्म-नि
तो पराकाष्ठा को पहुँची हुई है। इनकी अटूट श्रद्धा का तो वर्ण
ही नहीं हो सकता। विश्वास की मात्रा उनमें इतनी है कि उन
शिकार बनते रहते है। इस स्वर्गीपन सुखद वाता
वरण मे कपट, पाप और दुराचार का नाम नहीं है । ससार
अनेक परिवर्तन हुये और हो रहे है किन्तु वह ससार के परिव

शान्तिमय है। अनाचार और कपट का गाँव मे नाम तक
है। सरल और उत्तम जीवन गाँव ही मे बनाया जा सकता
इसके लिये नगर कदापि सभव नही हो सकते।

आज के नगर जो सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र
जाते है वे, आज षडयंत्र, डकैतियाँ, विकराल पाप
अनाचार के अड्डे बने हुये हैं। नगर की अत्य
मिथ्याडम्बर, चरित्रभ्रष्टता उसके सारे गौरव पर पानी फेर
है। नगर का विपाक्त वायुमंडल सर्वथा त्याज्य और अ
होता चला जा रहा है। नगरो की घनी जन सख्या, कारख
का अस्वास्थ्यकर धुआँ, गाड़ियो की गडगड़ाहट, घोड़ो
टापों की टपटप, कोलाहल पूर्ण भीड़ो को कल-कल सदैव
मे मानवी-जीवन के शारीरिक अवयवो को क्षीण करते रहते
नगर मे न तो वन उपवनो की सुखद, स्वच्छ और स्वास्थ्य
हवा ही मिलती है और न लहलहाते खेतो का मनोहारी सु
दृश्य ही अवलोकन करने को मिलता है। नगर की जलव
सदैव जीवन को गिराती ही रहती है। जब देखो लोगो
अजीर्ण और मंदाग्नि की शिकायत रहती है। आँखें नगर
वातावरण मे १० वर्ष पहले अपनी शक्ति खो बैठती हैं। न
का जीवन इतना महँगा है कि २४ घटे की हाय हाय के पर
भोजन प्राप्त होता है। इस हाय हाय का फल यह होता है
स्वास्थ्य बिलकुल चोपट हो जाता है। कार्य बाहुल्य के का
सार्वजनिक उत्सवो मे भाग नही ले सकते। विलासिता
कारण क्षय आदि रोग नगरो मे बसने लगे हैं। नये नये
शात्र मनुष्य सहारी सक्रामक रोगो का जन्म नित्य शहरो
मे होता है अत नागरिक जीवन अब नित्यप्रति बिगडता च
जा रहा है।

यदि हमारी वर्तमान गवर्मेन्ट जितना नगरो की सफाई

यत्र करती है उसका शतांश भी ग्रामों की सफाई पर व्यय करे तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि गाँव स्वर्ग बन जावें। परन्तु ए तो उनकी स्वच्छता पर एक पाई भी व्यय करना नहीं चाहती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि गांव में सुर-मुनि-मोहक मधुरिमा है और सौन्दर्य है। यदि हम मिथ्याडम्बरों के झमेले में न पड़ें तो निस्सन्देह गांव का जीवन स्वर्गीय जीवन है। ग्राम्य-जीवन स्वाभाविक है; यहां शान्ति है; यहां प्रकृति नित्य मान भाषा में अपना शान्ति पाठ पढ़ाया करती है। मुझे तो इन रूप-नान, किसानों में भगवान विचरते दृष्टि गोचर होते हैं।

गांव स्वर्ग है, अमरलोक हैं और यहीं कहीं इन्द्र निवास करता है। गुप्तजी ने कैसा सुन्दर कहा है:—

जगती कहीं ज्ञान की ज्योती,
शिक्षा की यदि कमी न होती।
तो ये ग्राम स्वर्ग बन जाते,
पूर्ण शान्ति-रस से सन जाते॥

विद्यार्थियो का छात्रावास मे रहना अच्छा है या घ

विचार तालिकायें:—

(१) *आदर्श छात्रावास*

(२) *छात्रालय मे रहने से हानि*

(३) *घर पर रहने से हानि*

(४) *छात्रावास मे शिक्षा का सौलभ्य*

(५) *आदर्श छात्रावासों की आवश्यकता*

शिक्षा का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि पुस्तकें रट परीक्षा पास करली जाय। आज हमारा विद्यार्थी समुदाय पु रट कर परीक्षा पास कर लेने ही मे शिक्षा की इति श्री सम है। भारत के विद्यार्थियो को मनोवृत्ति पिछले १०० वर्ष से रही है कि शिक्षा पाकर कहीं नाकरी मिल जाय। शिक्षा का उद्दे आजकल केवल यही तक सीमित है। इसी मनोवृत्ति ने भा के शिक्षित समुदाय को एक बडे ववडर मे डाल रक्खा शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ऊँचे आदर्शों का पालन, निय जीवन वनाना और ससार मे प्रवेश करने की क्षमता प्र करना है। कुछ काल विद्यार्थी गुरुओ के सम्पर्क मे रहकर शिक्षा प्राप्त करे जिससे जीवन रूपी समुद्र सुगमता से किया जा सके। विद्यार्थी मनुष्य जीवन की क्षमता छात्रा से ही सीखना आरंभ करता है। छात्रा मे छात्रालय से

त्तम गुणों का विकास होता है। किन्तु आज कल के छात्रालय मिथ्याडम्बर, अमिताचार और विलासिता के अड्डे बने हुये हैं। अतः शिक्षित समाज को चाहिये कि बच्चों को बोर्डिंग हाऊस में प्रवेश करने से पहले भली भाँति जाँच लें क्योंकि अभिभावक अथवा अध्यापकों की किंचित असावधानी विद्यार्थी के समस्त जीवन को नष्ट कर सकती है। भारत में पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव दिन पर दिन दृढ़ होता जा रहा है। चूँकि पश्चिमी सभ्यता विलासतापूर्ण है अतः भारत में भी विलासिता जड़ पकड़ती जाती है।

आधुनिक बोर्डिंग हाऊस पूर्णतया पश्चिमी वातावरण में रंगे हुये हैं जो किसी भी तरह भारत वर्ष जैसे देश के लिये लाभप्रद सिद्ध नहीं हो सकता।

बोर्डिंग हाऊस में सब ही अवस्था और सब ही परिस्थिति के बच्चे रहते हैं। बच्चों में चपलता स्वाभाविक ही है। साथ ही बच्चों में अनुकरण प्रकृति बड़ी प्रबल होती है, जो वस्तु उनके सामने आती है उसके प्राप्त करने की अभिलाषा उनके हृदय में उठती है। ये अभिलाषायें इतनी विकृत हो जाती है कि बालक अपने चपल स्वभाव पर वश नहीं रख सकता। १४ वर्ष से १८ वर्ष तक के विद्यार्थियों में ऐसी अभिलाषायें विशेष रूप से देखने में आती हैं। अतः इस युग में बच्चों के ऊपर समुचित देख रेख की आवश्यकता है। बच्चे की इस अवस्था की बनी हुई आदतें उसे जीवन पर्यन्त उसी साँचे में रक्खेंगी। अध्यापकों और अभिभावकों को उचित है कि वह इस अवस्था में छात्रों की मनोवृत्ति को उज्ज्वल बनायें। उनकी चंचलता और भावनाओं को उत्तम मार्ग पर चलने वाली बनायें। बालक की अनुकरण-प्रियता में सरलता और सादगी का पुट दें। तब

ही छात्रावास बालकों के जीवन को सुखद बनाने में सफल होते

घर पर रहकर पढ़ना, अपेक्षाकृत छात्रावास के कठिन है। घर पर अनेक घरेलू काम नित्य ही ऐसे आते रहते हैं जि पर बालक को जाना पड़ता है। घर में गृहस्थ के संघर्ष नित्य ही चलते रहते हैं जिनका असर विद्यार्थी पर पड़ना स्वाभावि है। संघर्षमय वातावरण में विद्यार्थी का पढ़ना बड़ा कठिन है विद्यार्थी को भी कुछ न कुछ हिस्सा उस संघर्ष का लेना पड़ है। जिसके वशवर्ती होकर विद्यार्थी को झंझट में पड़ना प है। ये झंझट स्वाभावतः उसके मन में क्षोभ उत्पन्न किये बि नहीं रह सकते। क्षोभों के कारण पढ़ाई लिखाई में विघ्न आ आवश्यक है।

किन्तु छात्रावास में इस प्रकार के कोई झंझट सम्मुख न आते। वहाँ कोई न क्लेश उसको उत्पीड़ित करेगा और न कि प्रकार की कलह ही विद्यार्थी को सतायेगी। विद्यार्थी का मस्ति शान्ति-पूर्वक पढ़ने ही में संलग्न रहेगा। इधर उधर के वाद-विव और निन्दा स्तुति के रोगों से भी सुरक्षित रहेगा। इस औ उसे पढ़ने लिखने का भी अधिक समय मिलेगा प्राय देखने आया है कि घर पर पढ़ने लिखने का कोई नियम नहीं बन सक किन्तु छात्रालय में प्रत्येक नियम सुचारू रूप से निभाया सकता है। बोर्डिङ्ग हाउस की देख रेख और नियमित स जीवन में सङ्घयिता, संलग्नता और रमणीयता लाता है। घर पर रहने से कभी सम्भव नहीं। छात्रालय में अध्यापकों संसर्ग और पुस्तकालय इत्यादि के कारण प्रत्येक समय शिक्षा वातावरण रहता है जिससे ज्ञान का भंडार नित्य बढ़ता र है। छात्रावास में प्राय बच्चे होड़ा होड़ी भी अधिक काम क के अभिलाषी रहते हैं। उनके हृदय में स्पर्धा के भाव जागृत हो है जो उनके जीवन को बड़े ही उपयोगी सिद्ध होते हैं। बोर्डि

जातीय त्योहारों का महत्व

विचार तालिकायें —

(१) त्योहार क्यों मनाए जाते हैं?
(२) त्योहारों का गौरव
(३) वसन्त के त्योहार
(४) त्योहारों की उपयोगिता
(५) अन्य विचार

प्रत्येक समाज ने प्रत्येक वर्ष के कुछ दिनों को विशेष मह
दे रक्खा है। उन विशेष दिनों में समाज सार्वजनिक उत्
मनाता है। प्रत्येक जाति एवं समाज इस प्रकार के उत्सव म
कर अपनी सजीवता का परिचय दिया करते हैं। जातीय त्योह
का जन्म केवल उन्हीं मानव-प्रवृत्तियों का फल है। कुछ त्योह
ऐतिहासिक घटनाओं के स्मारक हैं, कुछ जातीय महापुरुषों
जन्म दिन हैं, और कुछ ऋतु-परिवर्तन और कृषी सबधी होते
जातीय त्योहार धार्मिक रंग के रूप में ही अधिक रंगे रहते
जातीय त्योहार धार्मिक भावनाओं को उभारते और सगठन
भावों को जगाते हैं। त्योहारों का आधार समाज में पारस्परि
प्रेम, सहानुभूति और सगठन का स्रोत उत्पन्न करता है। एक्य
सगठन, और समता के भाव जितने समाज में यह त्योहार भ
है इतना अन्य कोई साधन नहीं भर पाते। जातीय त्यो
समाज की भावनाओं, भाषाओं और सस्कृतियों को स्था
रखने में बड़े सहायक हैं। जिस समाज में जितने ही अ

ामाजिक त्योहार मनाये जाते हैं, उतनी ही उस समाज की
ावनायें और संस्कृति ऊँची होती है।
हिन्दू जाति में मनाने के जातीय त्यौहार का बड़ा मान है।
ह हिन्दू आर्य जाति का राष्ट्रीय दिन है, यह बड़ पवित्र दिन है
जिस दिन आर्य जाति के नेता आर्य जाति में प्रेम, सहानुभूति
और संगठन की रूह फूंकते थे। कहीं जाति में राष्ट्रीयता के भावों
ी कमी न आजाय, इसी भय से आज के दिन फिर समाज में
ातीय जीवन भरा जाता था। राष्ट्र के बच्चे राष्ट्रीय रंग मंच
र आ आकर राष्ट्र-सेवा की शपथ लेते थे। भारतीय आदर्श को
ऊँचा रखने वाला दूसरा त्यौहार हमारा जन्माष्टमी है, यह
त्यौहार हमें प्रत्येक वर्ष सिखाता है कि राष्ट्र एवं समाज को
अत्याचारी राजाओं के अत्याचार से छुड़ाने के लिये कैसी कैसी
क्रान्तियाँ करनी चाहिए? कृष्ण और ग्वालों के से बल-संचय
और संगठन का आदर्श समाज में लाना चाहिए। समाज और
राष्ट्र कदापि क्रान्ति किये बिना उन्नत नहीं हो सकते। समाज के
बढ़े हुए स्वार्थ उसे नष्ट करके ही छोड़ते हैं। उनके निवारण के
लिये गीता का पाठ समाज का कितना उपयोगी सिद्ध होगा, यह
सारे स्मरण जाति में कृष्णाष्टमी संचारित करती है। समाज
की उच्छृङ्खलताओं को जातीय के विकारों का समूल नष्ट कर
सुंदर व्यवस्था स्थापन करने के लिये कृष्ण चरित्र का आदर्श
समाज के लिये कितना उपयोगी सिद्ध होगा उसे राष्ट्र निर्माण-
कारी नेता ही भली भाँति समझ पाते हैं।

भारतीय-आर्य संस्कृति का अस्तित्व रखने वाला तीसरा मुख्य
त्योहार दशहरा है यह त्योहार श्री रामचन्द्र जी के अत्याचारी
राजाओं पर विजय पाने के उपलक्ष में मनाया जाता है। यह
त्योहार क्षत्रियों का विशेष त्योहार माना जाता है। आज के दिन
नदी, हथियार और घोड़ों का पूजन होता है। इस अवसर पर

रामचन्द्र जी के पवित्र आदर्श को स्मरण कराने के लिये वर्ष प्रत्येक भारतीय नगर में रामलीला महोत्सव . जाता है।

वर्षा व्यतीत हो जाने पर जब प्रकृति में एक अनोखी . और मनोहरता आजाती है, मलेरिया, विशूचिका और . आदि रोग जगत का पीछा छोड़ देते हैं, तब मानवी जीवन एक उल्लास एक स्फूर्ति और एक अनूठी सजीवता जागृत उठती है। शीतल पवन का स्पर्श शरीर में गुदगुदी पैदा . है। तब ऐसे स्फूर्ति और उल्लास के समय मानव-समाज . विशेष उत्सव के मनाने में तत्पर हो जाता है, यह दीपावली उत्सव है जिसको भारतीय समाज कार्तिक कृष्णा १५ . को मनाता है।

दीपावली से हफ्तों पहले लोग अपने अपने मकानों को सा. करने में लग जाते हैं। फिर नाना प्रकार की वस्तुओं से . अपने घरों को सुसज्जित करते हैं। नाना प्रकार के खेल तमा. और अन्य उत्सवों का आयोजन करते हैं, अपनी अपनी . और सम्प्रदाय के अनुकूल दीपावली उत्सव मनाते हैं, कोई लक्ष. पूजन करता है, कोई महावीर प्रभू की जन्म तिथि मनाता और कोई दयानन्द की निधन तिथि हो को मनाता है, समाज . एक सजीवता, चैतन्यता और तत्परता दिखलाई पड़ने लग. है, निस्सन्देह जातीय त्योहार समाज में एक जीवन की . फूंकते हैं।

शिशिर ऋतु के अन्त में जब भगवान सूर्यदेव की प्रखर रश्मि मानव-समाज में एक अनूठे जीवन की झलक लाती है प्रकृति अपने नये शृङ्गार में लगती है, लहलहाती खेति. जब मानव-हृदयों में आनंद का संचार करती है, तब ऐसे अनू.

और पतित जातियों में त्यौहारों का अभाव होता है। जा...
त्यौहारों का आयोजन प्रत्येक सुसभ्य राष्ट्र का कर्तव्य है। जा...
त्यौहारों के द्वारा समाज और राष्ट्र में सजीवता और सं...
भाव जागृत होते हैं। समता, प्रेम और सहानुभूति की...
जाग उठती है। आधुनिक हिन्दू जनता में त्यौहारों के अव...
पर जो निंदित रूढ़िवाद चल पड़े हैं उनको समूल नष्ट ...
चाहिए। जातीय त्यौहारों के अवसरों पर सार्वजनिक व्या...
कवि सम्मेलन, साहित्यिक मेले और सार्वजनिक खेल तमाशों
आयोजन बड़ा ही मांगलिक सिद्ध होगा। ऐसे शुभ आयोजन
जहाँ समाज और राष्ट्र का मनोरंजन होगा वहाँ कला कौशल
भी प्रोत्साहन मिलेगा।

वड़े राष्ट्रों और राज्यों को बिगाड़ना बनाना कृष्ण के दाहिने का काम है। भारत का कोई ऐसा देश शेष नहीं रहा श्री कृष्ण का लोहा न मानता हो। बड़े-बड़े पराक्रमी श्री कृष्ण के सामने आते हैं, किन्तु सब मुँह की वापिस होते हैं। सारा लोकमत कृष्ण के साथ है। जनता के इशारे पर सब कुछ उपस्थित करने को प्रस्तुत है। यही का कि हम कृष्ण की सर्वत्र विजय देखते हैं। कृष्ण की सेवा शत्रुओ के हृदय पर भी अपना स्थान जमा लिया है। कृष्ण व्यवहार और शिष्टाचार इतना उच्च कोटि का है कि समाज बड़े २ नेता उनका सम्मान देवता की भाँति करते है। ऐसे सेवी आदरणीय कृष्ण का जन्म कंस के कारागार के रोहिणी नक्षत्र मे भाद्र-पद-कृष्णा अष्टमी को हुआ। गाँ गोप ग्वालो के साथ उनका बाल-जीवन व्यतीत हुआ, भारतीय सस्कृति का पाठ श्री कृष्ण ने जंगलों मे गाय च चराते सीखा। उसी परम आदरणीय श्री कृष्ण के संबंध जन्माष्टमी का इतना मान है।

कंस के अत्याचारो मे व्रज भूमि त्राहि त्राहि कर उठी है। ऋषी, मुनि और समाज के नेताओ के साथ भोषण अत्याचा हो रहे है, वर्ण व्यवस्था का ढाचा ढीला होता जा रहा है स्वेच्छाचारी प्रजा पीडक राजा मनमाने अत्याचार कर रहे हैं स्त्रियो के सतीत्व पर बराबर हमले किये जा रहे हैं। भाई भाई के जान का ग्राहक हो रहा है। अत्याचारी लडको ने अपने पिताओ का राज्य छीन कर स्वय राज्य करना आरभ कर दिया है। ऐसी दशा मे एक महापुरुप जन्म लेता है, समाज की कुरी तियो को समूल नष्ट कर पुन धर्म की व्यवस्था स्थापित करता है। कौन-सा ऐसा कृतघ्न समाज होगा जो ऐसे सुधारक के प्रति

न्मान के भाव न रक्खे। कृष्ण कंस तथा उसके अत्याचारों को
ट समाज में शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करते हैं; हम
गरतवासी उसी को पुण्य-स्मृति में आज तक कृष्ण जन्माष्टमी
त्सव मनाते हैं। जन्माष्टमी के दिन प्रत्येक हिन्दू परिवार
ष्ण-जन्मोत्सव उनकी सुंदर स्मृति में मनाता है, उसकी स्मृति
श्रद्धा-पूर्वक व्रत रखता है, और घर-घर गीता पाठ होता है।
ष्ण के पवित्र आदर्श और आचरण की चर्चा होती है। आधी
त तक मंगल गान करते हुए जागरण होता है। चन्द्रोदय पर
गवान् का पूजन कर लोग अपना-अपना पारण खोलते हैं।
प्राज के समस्त कार्य-क्रम से भारतीय जनता में एक नवीन जाग-
ण, एक नवीन सुंदर भावना भर जाती है। कृष्ण-चरित्र
के अनुकरण की सद्भावनायें तरंगे मारने लगती हैं।

श्री कृष्ण का आदर्श एक बहुत ऊँचा आदर्श है, उनका
आदर्श समता, सहानुभूति और प्रेम से लबालब भरा हुआ है,
कृष्ण के निकट शत्रु और मित्र एक हैं। उनकी मनोवृत्ति में
सर्वत्र विश्व-बन्धुत्व के भाव प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ रहे हैं। उनका
पवित्र आचरण लोक-सेवा और लोक-रंजन में ही सर्वत्र दृष्टि-
गोचर होता है। ममता का भाव उन्हें छू तक नहीं गया है,
जिसे एक बार त्याग दिया उसका फिर कभी आकृति में भी
ध्यान नहीं किया। जिधर कृष्ण को देखते हैं उधर दुखी निर्धन
अनाथों के दुःख मिटाते और सुव्यवस्था स्थापित करते ही देखते
हैं। समस्त राजक्रान्तियाँ में स्वार्थ भाव का लेश नहीं सर्वत्र
सामाजिक व्यवस्था को ठीक करने के ही भाव विद्यमान है
ऐसे ही पवित्र आदर्शों पर चल कर हम अपने जीवन को सुंदर
बनावें, यही उत्सव के मनाये जाने का एक-मात्र उद्देश्य है।

प्रत्येक जीवित जाति और राष्ट्र का कर्तव्य है कि वह अपने

महापुरुषों के आदर्शों को जीवित रक्खे ; उन आदर्शों को
में जीवित रखने के लिये प्रति वर्ष उनके उत्सवों का
प्रबंध करे। जिससे भविष्य में समाज उन आदरणीय आ
को याद रख उनसे पूरा लाभ उठाये। आज के सुधारवा
की दृष्टि इन परम्परागत उत्सवों के उपयोगता-वाद की ओर
जाती, उन्हें सर्वत्र रुढ़ि-वाद का ही भूत नजर आता है। ज
जीवन को जगाने के लिये जातीय-उत्सवों का आयोजन
योगी और आवश्यक है, अत प्रत्येक हिन्दू मात्र का कर्त
कि कृष्ण के आदर्शों को स्थापित रखने के लिये जन्माष्ट
उत्सव को अवश्य मनायें।

मेलों का गौरव

सार तालिकायें:—

(१) मेलों का स्वरूप
(२) कला कौशल का प्रदर्शन
(३) मेलों से सामाजिक लाभ
(४) यात्रा लाभ और विचार विनिमय
(५) विविध विचार

सभी जाति और राष्ट्रों में मेले होते हैं, मेले समाज और राष्ट्र का प्रतिबिम्ब हैं। सभ्य समाज और राष्ट्रों ही में मेलों का अधिक प्रचार है। मेले राष्ट्रीय महासभाओं के विकृत रूप हैं। ऐसे ही सुन्दर अवसरों पर राष्ट्र के नेता जनता को प्रेम और एकता के सूत्र में बांधते थे। इन्हीं अवसरों पर विभिन्न सिद्धान्तों और विचारों का विनिमय होता था। भारत वर्ष में सम्भवतः जितने मेले होते हैं उतने संसार के किसी भी सभ्य देश में नहीं होते। छोटे छोटे पूर्णमासी और अमावस के मेलों से लेकर कुम्भ जैसे बड़े बड़े मेले भारतवर्ष में होते हैं। भारत के लगभग सभी मेले धार्मिक कृत्य अथवा त्योहारों के अवसरों पर ही सम्पन्न होते हैं। यह अवसर भारतीय समाज में बड़े ही उत्सव और गौरव के होते हैं। इन अवसरों पर प्रायः जनता एकत्रित रहती है। भारतीय आर्य नेताओं ने सामाजिक और राजनैतिक गुत्थियों को ऐसे ही अवसरों पर सुलझाना अधिक उपयुक्त

समझा था। किन्तु आज विजाती जातियों के संसर्ग से
यह संगठन और रूप बदल गया है। राष्ट्रीय सम्मेलनों
स्वतंत्रता विजित जातियों ने अपहरण करली, जिसके
उसमें से राष्ट्रीयता के भाव निकल गये हैं और केवल
भाव शेष रह गये हैं। अब भी भारतीय पुरानी परम्परा
अनुकूल एकत्र होते हैं परन्तु अब उनका रूप राष्ट्रीय न
केवल वर्तमान मेले जैसा रह गया है।

मेलो मे जहाँ राजनीति और समाजनीति की चर्चायें
थीं, वहाँ कला कौशल का प्रदर्शन भी होता था। कला
मे प्रतिद्वद्विन्ता होती थी, जिनमें उत्तम कारीगरों
पर्याप्त पारतोषिक भी दिये जाते थे, जिससे कलाकौशल
प्रोत्साहन मिले। यही कारण है कि हम उस काल में कला
की वृद्धि पाते हैं। कारीगरों के हृदयों मे प्रतिद्वंद्विता
के भाव जब तक जागृत नहीं होते, तब तक राष्ट्र
कलाकौशल कभी उन्नति नहीं कर सकता। कलाकौशल ही
क्या? साहित्य निर्माण के लिये भी ऐसे अवसरों पर बड़ी
साहित्य परिषद् हुआ करती थीं। राष्ट्र के बड़े बड़े मर्मज्ञ
साहित्यक अपने अपने विचारो को ऐसे ही अवसरों पर
के सामने रखते थे। विद्वानो और कवियो को पारतोषिक
उपाधियाँ वितरण की जाती थीं, जिससे वह अति उत्साह से
साहित्य निर्माण कार्य मे लग जाते थे। भारत का कोई
और त्योहार न था। जिस पर ऐसे मेलों के आयोजन का प्रबन्ध
न हो। आज की प्रदर्शनी पुराने सम्मेलनों का रूपान्तर मात्र
भारत के आज के मेलो में यह बात नहीं है। इसका कारण
की पराधीनता और विदेशी शासन है। हमें अब भी
हैं कि उनके नाम और रूप विकृत अवस्था में उपस्थित हैं
उनमें अवसर आने पर आवश्यक सुधार भी किये जा सकते

३—व्याख्यात्मक निबन्ध

१—मित-व्ययता

ार तालिकायें:—

(१) मित-व्ययता क्या है

(२) अप-व्यय से हानि

(३) मित-व्ययता का आवश्यकत्व

(४) मित-व्ययता जीवन को सुखी बनाती है

(५) मित-व्ययी बनने के साधन

जीवन के सुन्दर दिनों में आगामी आवश्यकताओं को पूरा रने के निमित्त धन-संग्रह करना बुद्धिमानी और प्रशंसनीय र्य है। संसार में रुपया कमाना इतना कठिन नहीं है जितना से उचित रूप से व्यय करना कठिन है। यह सत्य है कि रुपया वल जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के निमित्त कमाया ाता है; किन्तु उसको उपयोगी कामों में व्यय करना भी दूर-र्शिता है अन्धाधुन्ध व्यय करने से एक दिन कुबेर का भंडार ी खाली हो सकता है। अतः उचित यही है कि धन सदैव उचित ामों में ही व्यय किया जाय। राष्ट्र और समाज की सेवा के िमित्त जो धन व्यय किया जाता है उसे सदुपयोग कहा जाता । उसमें भी अपनी स्थिति का विचार रखना वाञ्छनीय

है। मित-व्ययता का मतलब यह [illegible] है कि आप आवश्यकताओं में भी [illegible] न करें। ऐसा भी न हो कि आप [illegible] को निकाल कर फेंक दिया जाय, ऐसी [illegible] कृपणता के [illegible] करती है। वस्तु की उपयोगिता [illegible] समझे व्यय करना मित-व्ययता नहीं कहलाता।

जो लोग धन के व्यय करने में [illegible] से काम ले उनका जीवन प्रायः संकटमय हो जाता है। युवावस्था में को परिश्रम और संलग्नता के साथ धनोपार्जन करना च क्योंकि युवा-अवस्था में जो शक्ति और पुरुषार्थ होता है प्रौढ़ावस्था में शेष नहीं रहता। बुढ़ापे की तो चर्चा ही बूढ़ा मनुष्य तो एक असमर्थ बालक की भांति निरा पराधीन होता है। मनुष्य को अपने बुढ़ापे का विचार क परिश्रम से धनोपार्जन में जुट जाना चाहिये। साथ ही मि व्ययता का पूरा ध्यान रख कुछ न कुछ बचा कर संग्रह क का व्यसन भी डालना चाहिये। युवावस्था की अप-व्ययता अमिताचार आगामी जीवन को एक संकट में डालता है। अपना जीवन एक जंजाल भासने लगता है। अतः मनुष्य युवावस्था में मित-व्ययता पूर्वक रह कर धन-संग्रह में दत्तचि रहना चाहिये।

असभ्य जातियां मित-व्ययता की सीमाओं को लांघ स हैं, किन्तु सभ्य जातियां इस सुसंस्कृत काल में मित-व्ययता सिद्धान्तों का उल्लंघन कर परेशानी में पड रही है। अब मनु का विकास काल है, उसके अन्दर अब बहुत सी व्यवस्थि विधायक वृत्तियाँ विकसित हो चुकी है। पहले की अपेक्षा उसमें विचारशीलता, दूरदर्शिता और कर्तव्य बुद्धि का पर्याप्त मात्रा में समावेश हो गया है। आज वह केवल अप ही लिये नहीं जीता वरन परिवार, राष्ट्र और समाज स

विचार से जीता है। यदि वह अपनी सामर्थ्य के समक्ष बिना
ही व्यय करता चला जावे तो वह अपने उत्तरदायित्व को पूरा
न कर सकेगा। ऐसी परिस्थिति में वह स्वयं तो कष्ट उठायेगा
ही, किन्तु वह अपने आश्रितों को भी घोर संकट में डाल
जावेगा। अतः मनुष्य का परम कर्तव्य है कि वह अपने को
मित-व्ययता के साँचे में ढाले। तब ही उसका जीवन और
उसके आश्रितों का जीवन सुखी और शान्त बन सकेगा।

मित-व्ययता की बान हमारे जीवन ही को नियमित नहीं
बनाती वरंच वह हमारे हृदय में सद्गुणों का विकास करती
है। हमारे दुर्व्यसनों को रोकती है। कलुषित मनोवृत्तियों का
उन्मूलन करती है। हमें सादगी और स्वावलंबन का पाठ
पढ़ाती है। मिता-चरण का सुन्दर उपदेश देकर हमारे जीवन
को उत्तम बनाती है। हमें संकट और दैवी आपत्तियों को
सहन करने के लिये तैयार करती है। हमारे हृदय में सद्
असद् का भाव जागृत करती है। हमारी मानवी मनोवृत्तियों
को सदैव सन्मार्ग में ले जाने का प्रयत्न करती है। राष्ट्र और
जातियाँ मित-व्ययता के सिद्धान्तों पर चल कर ही उन्नति-शील
बन सकती है।

मित-व्ययता के अभ्यासियों को यह आवश्यक है कि वह
कभी आवश्यकता से अधिक व्यय न करे और आवश्यकता से कम
व्यय करना कंजूसी (कृपणता) के भावों को उत्पन्न करता है।
कंजूसी में वस्तु की उपयोगिता पर विचार नहीं किया जाता वरन्
तो केवल यह भाव होता है कि अपनी गाँठ से पैसा न निकले
और काम हो जाय। मानव जीवन में कृपणता एक भयानक
रोग है, एक भयंकर बीमारी है। कृपणता स्वार्थ और परमार्थ
किसी भी उद्देश्य को पूरा नहीं करती। बुद्धिमान व्यक्तियों को
इस रोग से जहाँ तक सम्भव हो दूर रहना चाहिये

मितव्ययी बनने के लिये मनुष्य में सभी बुद्धिमानी [illegible] काम होना चाहिये। आय व्यय का दैनिक लेखा रखना इस के अनुसरण करने में बड़ा हितकर सिद्ध होगा। दैनिक आय लेखा रखने से इस बात का भी ठीक पता चलता रहेगा कि खर्च की कौनसी मद आवश्यक है तथा कौनसी अनावश्यक जान लेने के बाद अनावश्यक मदों का अधिक भाग बढ़ रहा है, तो कोई-सी मद बन्द कर देना चाहिये। जहाँ तक सम्भव हो आय आमदनी और व्यय का लेखा स्वयं ही लिखे। यदि सम्भव न हो, और समय का अभाव हो तो हिसाब किताब रखने का विश्वास-पात्र नौकरों के हाथ में भी दिया जा सकता है, पर नौकरों के हिसाब किताब की जाँच भी रखना बड़ा आवश्यक है जिससे नौकरों को धोखा देने का साहस ही न हो सके। आवश्यकतानुसार नौकरों के अदलते बदलते रहने से भी काम [illegible] सुन्दर रहता है क्योंकि नये नौकर पुरानों की अपेक्षा धोखा क देते हैं।

खाद्य भण्डार के नौकरों पर पर्याप्त देख रेख की आवश्यक होती है, क्योंकि नौकर थोड़ी-सी उपेक्षा में इच्छानुसार खर्च क देते हैं। गार्हस्थ्य-जीवन में कपड़ा खाते में बड़ा दुरुपयोग हो है, कोई-कोई कपड़े तो ऐसे बन जाते हैं जिनका कभी जीवन उपयोग भी नहीं होता, इस कपड़ों के तैयार कराने में पूरी सा धानी रखनी चाहिये। कपड़े केवल वही तैयार कराये जायँ जि की आवश्यकता हो। सन्दूकों के अलंकृत करने के लिये नहीं। कु सैर सपाटे और बाग बगीचों पर अनावश्यक व्यय हो जाता है उसमें समुचित प्रबन्ध और कमी की जा सकती है। यदि मोट रखने से व्यय अधिक होता हो, तो सिनेमा में जान बन्द कर देना चाहिये। क्योंकि यदि सभी मदों में जी खोल क व्यय किया जावेगा तो कुबेर का घर जैसा भी खाली हो जायग

-हुधा देखने मे आता है कि लोग विवाह आदि अवसरों पर
ऋण लेकर थोड़ी वाह वाह की खातिर व्यय कर देते हैं, और
ऋण के बोझ से दब जाते हैं। उनका यह कार्य सर्वदा निन्दनीय
, यह उनके लिये अशान्ति-उत्पादक ही सिद्ध होता है। यहाँ
र तो यह लोकोक्ति ही चरितार्थ होती है—"क़र्ज़ लेकर
स्तरख़ान आरास्ता करने के बजाय फ़ाका रहना बहतर है।"

प्रत्येक बुद्धिमान मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह बहुत सोच
समझ कर व्यय करे, व्यय करते समय इस बात का अवश्य
ध्यान रहे कि हमारे व्यय से लाभ और आदर समान रूप से
मेल रहा है। ऐसे कामो मे जिसमे लाभ और प्रसन्नता कुछ भी
ाप्त न हो उसमें कभी एक भी पैसा व्यय न करे। जीवन की
आवश्यक और सुखदायक वस्तुओं को ख़रीदना चाहिये।
निष्प्रयोजन वस्तुओं के संग्रह मे रुपया नष्ट करना ठीक नहीं।

स्वावलम्बन

विचार तालिकायें:—

(१) *स्वावलम्बन की व्याख्या*
(२) *स्वावलम्बन की क्यों आवश्यकता है*
(३) *स्वावलम्बन जीवन को सुखी बनाता है*
(४) *परावलम्बी व्यक्ति और समाज उन्नति नहीं कर सक*
(५) *अन्य विचार*

संसार मे मनुष्य के सब काम एक दूसरे के सहयोग और सहानुभूति से चलते हैं। मनुष्य के जीवन मे ऐसे भी अवसर अवसर आते है जिसमे मनुष्य को वाह्य सहायता कठिनता से प्राप्त होती है, या सहायता मिलना नितान्त असंभव हो जाता है। ऐसी स्थिति मे परावलम्बी व्यक्ति की दशा भयकर शोचनीय हो जाती है। वह कि कर्तव्य-विमूढ़ होकर आगे बढ़ने मे असमर्थ हो जाता है। वह सहायता पाने को फड़फडाता है, किन्तु उसे किसी ओर से कोई सहायता नहीं मिलती। तब उसे अपने ही अवलंब की शरण लेनी पड़ती है। जो मनुष्य अपने ऊपर विश्वास रखते है, उन्हे अपनी शक्ति का पूर्ण ज्ञान होता है, वह सदैव अपने ही पैरों पर खड़े होकर अपना कार्य करते हैं। वे कदापि दूसरों का अवलंब नहीं तकते। ऐसे लोग कहीं भी विकल होते नही देखे गये। सच्चा स्वावलम्बी व्यक्ति वह है जो संसार से निर्लिप्त रहता हुआ जीवन के कार्य सुचारु रूप से

सम्पादन करे और दूसरे मनुष्यों के जितने सहयोग और सहायता की आवश्यकता हो उनसे ग्रहण करे।

वही मनुष्य, देश और जाति उन्नति के शिखर पर पहुंची है, जिसने स्वावलम्बन की मात्रा अधिक है, जिन मनुष्य, देश और समाज ने दूसरो का आश्रय तका, बस वही अवनति के गर्त मे पड़ी सड़ती देखी जाती हैं। जब-जब राष्ट्रों में स्वावलम्बन के भाव जागृत हुए, तब-तब ही वह राष्ट्र की अपेक्षा अधिक सबल, धनी और उन्नतोन्मुखी हुआ। राष्ट्रो मे कला कौशल, व्यापार, सभ्यता और संस्कृति सब स्वावलंबन के द्वारा ही प्राप्त होते हैं। जब हम स्वावलम्बी थे तब तक योरोप की जातियों मे हम पूजे जाते थे। योरोप के सारे बाजार भारतवर्ष की बनी वस्तुओं की ओर मुँह बाँधे खड़े दृष्टिगोचर होते थे, किन्तु जब से हमने अपने पैरो पर खड़ा होना छोड़ा तब ही से हमारी दशा दिनों-दिन गिरती ही गई।

जापान आज स्वावलम्बन की जीती जागती मूर्ति है। उसने अपने को इतना ऊँचा स्वावलम्बी बनाया है कि संसार उसे बड़ी आश्चर्य की दृष्टि से देख रहा है। स्वावलम्बी जर्मन आज संसार को हिला रहा है, हिटलर ने संसार के सामने स्वावलम्बन का सब से ऊँचा आदर्श रक्खा है। कितने थोड़े काल मे राष्ट्र को अपने पैरो पर खड़ा करके संसार की महान शक्तियों को चक्कर मे डाल दिया है। इसमें कोई सन्देह नहीं जब तक समाज और राष्ट्र स्वावलम्बी हो अपने पैरो पर खड़े नहीं होते तब तक उन्हे अवश्य पराधीनता को शृंखला मे बँधा रहना पड़ता है।

जिन-समाज और राष्ट्रों ने स्वावलम्बन के महत्त्व को समझा, उन्होने ही संसार के सामने अपना गौरव स सिर

उठाया। वही समाज और राष्ट्र पतित राष्ट्रों के आदर्श गुरु ; और उन्हें पराधीन करके रक्खा। साक्षात् स्वावलम्बन के मूर्ति महाराज शिवाजी ने और शौर्य ने देश को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। उसने अपने प्रबल प्रताप और साहस द्वारा मुग़ल साम्राज्य का तख्ता उलट दिया। गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्खों को अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। पंजाब स्वयं परतंत्रता की बेड़ी का काट फेंका और एक स्वतं साम्राज्य की स्थापना कर डाली। इसमें कोई सन्देह नहीं स्वावलम्बन के पथ पर पैर रखना बड़े साहस का काम है, इस पर चलने के लिये अपार साहस और अपरमित धैर्य की आवश्यकता है। इस पथ पर विरले साहसी और आत्म विश्वासी व्यक्ति ही चलने का प्रयास करते हैं। आत्म करने वाला व्यक्ति कठिनाइयों का बड़ी क्षमता से मुकाबला करे। परिश्रम और तत्परता से कभी मुँह न मोड़े।

संसार में जितने महापुरुष हुए हैं उनमें स्वावलम्बन की मात्रा अधिक थी, हमारे समस्त पूर्वज बड़े स्वावलम्बी थे। वे अपने ऊपर पूर्ण विश्वास रखते थे। कठिन परिश्रम से कभी घबड़ाते न थे। आपत्तियों का सामना वे बड़े साहस और धैर्य से करते थे। प्रत्येक कार्य का अपने हाथों द्वारा सम्पादन करने में गौरव समझते थे। राजे महाराजे तक परिश्रमी और अध्य वसायी होते थे। राजा विक्रमादित्य सरीखे क्षिप्रा नदी से नित्य अपने पीने का पानी स्वयं भरकर लाते थे, उनकी रानी स्वयं भोजन बनाती थीं। औरंगजेब बादशाह इतना स्वावलम्बी था कि वह अपने हाथ की बनी हुई 'वस्तु की बिक्री से अपना जीवन निर्वाह करता था। राज्य का एक पैसा भी अपने जीवन पर व्यय न करता था। उनकी बेगम साहिबा टोपी सीकर अपना खर्चा चलाती थी, आप कुरान मजीद लिखा करते थे।

भारतीय संस्कृति का आधार ही स्वावलम्बन पर रक्खा गया। राजा महाराजाओं का भी अन्तिम जीवन में स्वावलम्बी बनना अनिवार्य था।

स्वावलम्बन मनुष्य को मिताचारी बनाता है। मितव्ययता स्वावलम्बन की सहचरी संगिनी है। क्रमबद्धता और पूर्णता स्वावलम्बन के सच्चे सखा हैं। क्रोध और आलस्य इससे घबराते हैं, कर्तव्य पालन और आज्ञाकारिता इसके मंत्री हैं जो सदैव इसके साथ रहते हैं। स्वास्थ्य, शान्ति और आनंद स्वावलम्बी के दायें बायें ही अपने घर बनाते हैं। जो सदैव उनके आज्ञाकारी बने रहते हैं। हर्ष और प्रसन्नतायें बारी बारी से नित्य उसके घर नृत्य करती रहती हैं। शूरता और साहस उसके यहाँ चौकसी का काम करते हैं। आपत्तियाँ और कठिनाइयाँ उसके आगे नत मस्तक हाथ जोड़े खड़ी रहती हैं। श्रेय और सफलतायें उसके चरणों पर लोटती रहती है।

जैसे मनुष्यों का सफल जीवन बनाने के निमित्त स्वावलंबी होना आवश्यक है वैसे ही समाज और देशों को स्वावलंबी बनने की आवश्यकता है। कोई जाति और देश तभी उन्नत हो सकते हैं जब वे अपनी आवश्यकताओं की वस्तु का स्वयं निर्माण कर लेने की क्षमता रखते हों। यदि कोई जाति और देश अपनी आवश्यकताओं की वस्तुओं को दूसरे देशों से मांगकर पूर्ण करते हैं तो वह स्वावलम्बी नहीं हो सकते और न वे उन्नत देशों के समक्ष अपना सिर ऊँचा करने का गौरव रखते हैं। समाज और जातियों का उत्थान और पतन केवल इन्हीं सिद्धान्तों पर अवलंबित है। व्यक्ति और समाज अपने भाग्य स्वयं निर्माण करते हैं। व्यक्ति और समाज जितना ही दूसरा

का आश्रय लेंगे उतने ही परतंत्रता की श्रेणी में जाएँगे परामुखापेक्षी समाज और राष्ट्र घृणा की वस्तु हैं, वे कभी उन्नत नहीं हो सकते। उन्हें कभी सुख समृद्धि और शान्ति नहीं प्राप्त हो सकती। उनका जीवन संसार में व्यर्थ है वे समाज के भार रूप हैं।

फूट

विचार तालिकायें:—

(१) फूट क्या है
(२) फूट के भयंकर परिणाम
(३) प्रेम और त्याग के सामने फूट नहीं ठहर सकती
(४) फूट संबंधी विविध विचार

इस दो अक्षर के शब्द से भगवान किसी का पाला न डाले, इसने जिस परिवार, समाज और देश में प्रवेश किया बस उसको तो चौपट ही कर डाला। यह विष-लता जहाँ ही फली फूली बस उसे ही रसातल में पहुँचाकर छोड़ा। जिन व्यक्तियों और समाजों ने इसका आदर किया, बस वहीं विद्वेष का साम्राज्य स्थापित हुआ। जिस समाज में फूट का पदार्पण होता है उसके ज्ञान भंडार को तो वह प्रथम आक्रमण ही में शून्य कर देती है। सद्भावनायें और सहानुभूतियाँ फूट के देश के अन्दर पहुँचते ही इधर उधर भागने लगती है। बन्धुत्व-भाव का तो गला ही घुट जाता है। इसके विषय में किसी का कथन कैसा अक्षरशः सत्य है— खेत में उपजै सब कोई खाय, घर में उपजै घर बहि जाय।

फूट वह भयंकर रोग है। जिसने बड़े २ सुन्दर साम्राज्यों को क्षण भर में नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। फूट की प्रचंडता बड़े बड़े प्रबल शक्तिशाली राष्ट्रों को कम्पायमान कर देती है। अनेक समृद्धिशाली राष्ट्र फूट की एक ही चपेट में औंधे मुँह

होते देखे गये हैं। भारत मे जब फूट का पदार्पण हुआ तो
जयचंद के रूप मे प्रकट हुई। जयचंद ने पृथ्वीराज के
से इनकार किया, तक्षशिला नरेश अम्भी ने विद्वेष के
होकर अलकचेन्द्र का साथ दिया। यह सब क्यो? यह
फूट महारानी के खेल के इतिहास हैं। यदि भारतीय
आपस मे विद्वेष-भावना की नीति से काम न लेते, उसमे
भी भ्रातृ-भाव बना रहता और तनिक भी उनके हृदय मे
के प्रति सहानुभूति होती तो आज भारतीय साम्राज्य का
न होता और देश मे विदेशी सत्तायें शासन न करती होतीं।

फूट बड़े बड़े अनर्थों की जननी है। भय, शोक,
और क्रोध तो इसके सगी साथी सखा हैं। अनेक राष्ट्रों,
और समाजो का रक्त-मांस चूस कर फूट ने केवल
अस्थिपंजर मात्र छोड़ा है। आप बड़ी मन्द गति से
और राष्ट्रो मे अपने पैर फैलाती है। फूट का प्रवेश बड़ा
होता है, किन्तु जब यह जड़ पकड़ जाती है तब तो समाज
राष्ट्रों मे प्रलय-काल ही का दृश्य उपस्थित कर देती है। फू
प्रथम दर्शन ईर्षा और द्वेष के रूप मे होते है। जिन व्यक्ति
समाजो मे फूट का बीज वपन हुआ बस सर्वनाश का ही
रंग मंच पर आ जाता है। इस विप-लता का तो राष्ट्रों
समाजो मे आना ही अशान्ति का आह्वाहन करना है।

फूट, जाति और राष्ट्रो के अभ्युदय मे एक सक्रामक रो
जो जाति और राष्ट्र को पनपने नहीं देता। जिन जातियों
राष्ट्रों मे इस रोग का प्रवेप हो जाता है, उन जातियो और
का तो अन्त्येष्टि सस्कार ही करके दम लेती है। जो राष्ट्र
समाजें इस विप वेल को अपने यहाँ बढ़ने नही देतीं,
उन्नति के पथ पर अग्रसर देखी जाती है। राम के ऊपर
के रूप मे आई हुई फूट अपना प्रवाह न डाल सकी।

क्रोध

विचार तालिकायें:—

(१) क्रोध का वास्तविक रूप
(२) परिमित क्रोध और परिमित शान्ति का आचरण ही श्रेयस्कर है
(३) क्रोध में प्राणी की दशा
(४) अन्य विचार

काम, क्रोध, मद, लोभकी, जब लग मन में खानि।
तब लग पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान।

मानसिक मनोभावों में क्रोध सब से प्रबल है। क्रोध मनुष्य ही में नहीं देखने में आता, इसकी अभिव्यक्ति पशु प्राणियों में भी देखने को मिलती है। क्रोध के समय प्राणी की आकृति विचित्र हो जाती है, उसकी मुखाकृति से क्रोध का ज्ञान हो जाता है। क्रोध के समय मनुष्य दाँत पीसने लगता है, मुख और नेत्र लाल हो जाते हैं, गला रुँध जाता है, अनर्गल प्रलाप इस दशा को पहुँच जाता है कि उसे पता भी नहीं रहता कि मैं क्या कर रहा हूँ। मनुष्य की भाँति क्रोध में पशु पक्षियों की भी मनोवृत्ति ऐसी ही देखने में आती है। क्रोध की दशा में बन्दर दाँत पीसने लगता है। भैंस के नथने फूल जाते हैं और दीर्घ श्वास छोड़ने लगता है। गाय, बैल की भी आँखें लाल हो जाती हैं। सर्प फन उठाकर फुँसकार मारने लगता है।

इका वास्तविक रूप प्रायः कुत्तों में देखने को मिलता है। सामाजिक-संरक्षण-क्रोध में सामाजिक स्वार्थभावना होती है, समें समष्टि रूप से सामाजिक स्वार्थों की रक्षा ही अनिवार्य प से देख जाती है। सामाजिक क्रोध की प्रवृति मधुमक्खियों में शेष रूप से देखने को मिलती है। जिसमें अपने वर्ग की रक्षा ी भावना ही प्रधान होती है। मधुमक्खियों का सा क्रोध त्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार की प्रवृति समाज को बड़ी पयोगी होती है। समाज में इस प्रकार के क्रोध की मात्रा जितनी ही अधिक होगी, उतनी ही वह समाज सर्वोत्तम होगी। माज राष्ट्र के प्रति किये गये अत्याचारों के लिये जो क्रोध दर्शन करती है, वह राष्ट्र में उन्नति और शान्ति लाती है। जाति विशेष को ऊँचा उठाता है। उत्तम कोटि का क्रोध वही हलाता है जो प्राणी मात्र के साथ किये गये अत्याचारों के तिकार के लिये किया जाता है। व्यक्तिगत स्वार्थों की रक्षा रने वाला क्रोध अधम कोटि का है। उसका समाज यथेष्ट आदर नहीं करता। समाज उसी क्रोध को श्रद्धा की दृष्टि से खता है जो क्रोध समाज की मर्यादा स्थापित रखने के लिये किया जाता है। अत वही क्रोध सम्मान्य और आदरणीय है जो केवल समाज की रक्षा के निमित्त किया जाय।

निर्बलों, असहायों और अनाथों पर अत्याचार सब ही को असह्य हो जाता है सहृदय व्यक्तियों के हृदय में उसका प्रतिकार करने के निमित्त क्रोध का अभ्युदय अवश्यम्भावी है। क्योंकि अत्याचार क्रोध ही की सहायता से दमन किया जा सकता है।

अत्याचारों को देखकर चुप रहना नीचता है और सहन करना पाप है। द्रौपदी के सतीत्व की रक्षा केवल भीम के क्रोध मात्र ने की थी। हिन्दू-आर्य जाति के मान की रक्षा वीर

रा जितनी आकर्षक नहीं होती जितनी कि स्वयं अवलोकन रने से मन को मुग्ध करती है। देशाटन करने में बड़े डे मनोहर चित्ताकर्षक दृश्य देखने को मिलते हैं। विशाल गन चुम्बी अट्टालिकायें, स्वच्छ चमचमाती सड़कें, सुथरे लंकृत उपवन और वाटिकायें, चपल चपला के प्रकाश से मचमाते मनोहर सुन्दर नगर किसके मन को नहीं आकर्षित रते। भला ऐसा आकर्षण, ऐसा खिंचाव, भूगोल की पुस्तकों कहाँ, पुस्तकें तो केवल संकेत मात्र का साधन हैं। वास्तविक आनंद और अनुभव तो देशाटन द्वारा ही प्राप्त होता है।

देशाटन-प्रिय योरोपीय जातियाँ देशाटन के कारण ही आज संसार की मुकुटमणि बनी हुई हैं। विश्व का व्यापार आज उनकी मुट्ठी में है। समस्त संसार में विशाल साम्राज्यों की जड़ देशाटन प्रिय जातियाँ ही जमा सकीं। भारत, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका प्रभृति देशों में आज सर्वत्र अंग्रेजों की धाक है, क्यों? इसलिये कि उन्होंने देशाटन को अपनाकर इन देशों पर अपना अधिकार जमाया। भारत ने जो कुछ कला-कौशल अनार्जित है, उसका श्रेय एक मात्र देशाटन ही को प्राप्त है। राष्ट्र और जातियों की कला कौशल अन्य राष्ट्र और जातियाँ देशाटन द्वारा ही प्राप्त करती हैं सभ्य जातियाँ अपने भाव और अपनी सभ्यता से पारस्परिक व्यवहार के कारण ही एक दूसरे का प्रेम वन करता है

देशाटन में जहाँ ज्ञान की अभिवृद्धि होती है वहाँ मनो-रञ्जन भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है देशाटन में घूमने फिरने और कठिन परिश्रम करने के कारण स्वास्थ्य-सुधार में भी बड़ी सहायता मिलती है। मानवी स्वभाव है कि किसी काम को अधिक समय तक करने के कारण दिल ऊब जाता है अत वह

द्वारा जितनी आकर्षक नहीं होती जितनी कि स्वयं अवलोकन करने से मन को मुग्ध करती है। देशाटन करने में बड़े बड़े मनोहर चित्ताकर्षक दृश्य देखने को मिलते हैं। विशाल गगन चुम्बी अट्टालिकायें, स्वच्छ चमचमाती सड़कें, सुथरे अलंकृत उपवन और वाटिकायें, चपल चपला के प्रकाश से चमचमाते मनोहर सुन्दर नगर किसके मन को नहीं आकर्षित करते। भला ऐसा आकर्षण, ऐसा खिंचाव, भूगोल की पुस्तकों में कहाँ, पुस्तकें तो केवल संकेत मात्र का साधन हैं। वास्तविक आनंद और अनुभव तो देशाटन द्वारा ही प्राप्त होता है।

देशाटन-प्रिय योरोपीय जातियाँ देशाटन के कारण ही आज संसार की मुकुटमणि बनी हुई हैं। विश्व का व्यापार आज उनकी मुट्ठी में है। समस्त संसार में विशाल साम्राज्यों की जड़ देशाटन प्रिय जातियाँ ही जमा सकीं। भारत, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका प्रभृति देशों में आज सर्वत्र अंग्रेजों की धाक है, क्यों? इसलिये कि उन्होंने देशाटन को अपनाकर इन देशों पर अपना अधिकार जमाया। भारत में जो कुछ कला-कौशल अवशिष्ट है, उसका श्रेय एक मात्र देशाटन ही को प्राप्त है। राष्ट्र और जातियों का कला कौशल अन्य राष्ट्र और जातियाँ देशाटन द्वारा ही प्राप्त करती हैं। सभ्य जातियाँ अपने भाव और अपनी सभ्यता से पारस्परिक व्यवहार के कारण ही एक दूसरी को प्रभावित करती हैं।

देशाटन से जहाँ ज्ञान की अभिवृद्धि होती है वहाँ मनोरंजन भी पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है। देशाटन में घूमने फिरने और कठिन परिश्रम करने के कारण स्वास्थ्य-सुधार में भी बड़ी सहायता मिलती है। मानवी स्वभाव है कि किसी काम को अधिक समय तक करने के कारण दिल ऊब जाता है अतः वह

मधुर-भाषण

विचार तालिकायें:—

(१) मृदुभाषी सर्व प्रिय होता है

(२) अप्रिय भाषण पतन की ओर ले जाता है

(३) महापुरुषों का भूषण मधुर भाषण है

(४) मधुर भाषण में छल कपट न होना चाहिये।

(५) अन्य विचार

विनय और मधुर भाषण दोनो ही से मनुष्य को सुख और शान्ति मिलती है। मधुर भाषण मे एक प्रकार का आकर्षण है जो श्रोता के हृदय पर क्रम क्रम अधिकार जमाता जाता है। मधुर-भाषण मानवी जीवन मे एक ऐसी शक्ति है जो समाज पर वशीकरण का प्रभाव डालती है। मधुर भाषी मनुष्य जहाँ समाज को शान्ति देता है वहाँ वह अपनी अन्तरात्मा मे भी पूर्ण शान्ति उपलब्ध करता है। मानव जीवन मे एक दूसरे के प्रति घृणा के भाव केवल ईर्ष्या और द्वेष के कारण उत्पन्न होते हैं। मानवी हृदय मे प्राय व्यक्तियो के प्रति घृणा के भाव उदय होते, हैं जिनकी बातें अरुचिकर प्रतीत होती हैं। विनयी और मधुर भाषी व्यक्ति के प्रति घृणा के भाव उदय हो ही नहीं सकते, क्योंकि उसका कोई व्यवहार समाज के लिये अरुचिकर नहीं होता। वह समाज मे शीघ्र आदर का वस्तु हो जाता है। समाज उसके प्रति अपनी पूर्ण सहानुभूति रखता है।

संसार मे जितने महापुरुष अवतीर्ण हुए हैं, जिन्होंने समाज मे आदर पाया, और समाज की गौरव की वस्तु रहे उसका सबसे बड़ा गुण उनमें विनय और मधुर भाषण था। महापुरुष कठोर से कठोर प्रश्न का उत्तर सदैव मधुर शब्दो मे ही देने का प्रयत्न करते रहे हैं। वे कठोर अत्याचारियों द्वारा सताये जाने पर भी अपने अत्याचारियों के प्रति सदैव क्षमायुक्त वाक्य कहते रहे हैं। "पिता क्षमा कर क्योंकि यह नही जानते हम क्या कर रहे हैं" ईसा। "जगन्नाथ तुझे नहीं मालूम अभी मुझे कितना काम करना था, ले यह रुपये जिसके लिये तुझे इस नीच काम में प्रवृत किया, यहाँ से कहीं दूरस्थ देश मे चला जा अन्यथा तेरे प्राण संकट मे पड़ जावेंगे" स्वामी दयानन्द। महापुरुषों का मूल्य उनके श्रेष्ठ-आचरण और उनके सद्व्यवहार ही से आंका जाता है। राम, परशुराम के कठोर शब्दो से विचलित नहीं होते, वे परशुराम के अग्नि तुल्य कठोर शब्दो के आगे पानी तुल्य मधुर शब्दो द्वारा ही बुझाने की चेष्टा करते हैं।

अन्ततः अपने मधुर शब्दो द्वारा राम, परशुराम पर विजय पाते हैं, श्री कृष्ण भगवान संसार मे सर्वोत्कृष्ट मधुर-भाषी कहे जाते हैं। उन्होंने घोर से घोर परिस्थिति मे अपने इस गुण को नहीं त्यागा। कौरवों के पक्ष से कहे गये कठोर से कठोर शब्दो को उन्होंने मधुर मुस्कान द्वारा ही ग्रहण किया। कभी उनके चहरे पर क्रोध अथवा उदासीनता के भाव देखने को नहीं मिले। अतः हम श्रीकृष्ण को सर्वत्र विजयी पाते है जो मनुष्य घोर संकट काल उपस्थित होने पर अथवा विकट क्रोधावस्था मे अपने माथे पर बल नहीं पडने देते और सदैव मुस्कराते हुए आपत्तियो का सामना करते है वही महापुरुष है, वे ही संसार मे महात्मा आदि सर्व श्रेष्ठ उपाधियो से विभूषित किये जाते हैं। उन्हीं का आचरण संसार ग्रहण कर कल्याण और श्रेय उपलब्ध करता है।

ईर्ष्या वा जलन

विचार तालिकायें —

(१) ईर्षा का अर्थ
(२) ईर्षा और स्पर्धा
(३) ईर्षा के भाव परिचितों ही में होते हैं
(४) ईर्षा अनेक अनर्थों की जननी है
(५) ईर्षा कैसे शमन की जा सकती है

किसी की धन-सम्पति, ऐश्वर्य विभूति और यश-कीति को देख कर अथवा सुनकर वैसे ही बनने की भावना हृदय में उत्पन्न होना स्पर्धा कहलाती है। स्पर्धा में सदैव दूसरों के गुण, विभूति और कीति को देख वैसे ही गुण अपने में लाने की प्रवृत्ति का उदय होता है। स्पर्धा में दूसरों के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न नहीं होते। स्पर्धा में सदैव दूसरों के अनुकूल अपने में गुण आने की ही अभिलाषा होती है, किन्तु ईर्षा में सदैव स्पर्धा के विपरीत भाव होते हैं। ईर्षा में दूसरों के सुख सम्पति अथवा मान, प्रतिष्ठा को देख वा सुनकर खेद व जलन के भाव उदय होते हैं उसे ईर्षा व जलन कहते हैं। इस मनोवृत्ति में किसी गुणी को सुनकर वा देखकर वैसा बनने के बजाय वह व्यक्ति और गुण नाश हो जायँ तब उसे संतोष होता है। दूसरों की धन, सम्पति और कान्ति उसके हृदय में काँटे की भाँति चुभती रहती है। वह अपने प्रति-द्वन्द्वी का यश उसके हृदय में असह्य-वेदना

सब से निर्बल वह होता है जो बात-बात में निंदावाद के भाव प्रकट करता हो। निंदावाद ईर्षा का सगा छोटा भाई है। निंदावाद अपनी सहोदरा ईर्षा का कभी साथ नहीं छोड़ता। ईर्षा में मनुष्य सदैव अपने विपक्षी को अहित चिंतन और निंदा करने ही में निरत रहता है। व्यक्ति अपनी सोसाइटी में अपने को सब से ऊँचा देखना चाहता है समाज में मेरा ही सम्मान अधिक हो, समाज मेरे ही बताये मार्ग का अनुसरण करे, अपने ही बड़े बनने के भावों में वह नित्य कुढ़ता और दुःखी होता रहता है। जब समाज उसकी इच्छानुसार उसे नहीं समझता या उसका आदर नहीं करता, तो उसके हृदय में समाज के प्रति घृणा के भाव उत्पन्न होने लगते हैं जो समाज को तो नहीं वरंच उसे ही जलाते रहते हैं, यह स्वाभाविक बात है कि ईर्ष्या के भाव अपनी सोसाइटी, परिवार, कुटुम्ब और अपने परिचित व्यक्तियों ही के साथ देखने में आते हैं. जिन व्यक्तियों से हमारा कोई संबंध नहीं प्रायः उनके प्रति ईर्षा के भाव नहीं होते। इस पिशाचिनी ने तो परिचित व्यक्तियों ही को अपना शिकार बनाया है।

ईर्षा बडा भयंकर रोग है. जिस समाज अथवा राष्ट्र में इसका प्रवेश होता है वह नष्ट होकर ही रहता है। ईर्षा [illegible] संक्रामक रोगों की भांति शीघ्र और सब [illegible] होता है। इस रोग से बचने के लिये समाज और राष्ट्र को संक्रामक रोगों से बचने की भांति अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता है यदि यह रोग समाज के [illegible] भी व्यक्ति को [illegible] तो उसका प्रभाव सारे समाज पर हुये बिना न रहेगा। [illegible] तक संभव हो इस रोग से बचना चाहिये। समाज में [illegible] लोभ, मद, क्रोध, वैर द्वेष आदि दुर्गुण मानसिक भावों से इसका

यमान रहते हुए समाज में शान्ति कदापि नहीं आ सकती।
न्दू मुसलिम समस्या ने देश में विद्वेष फैला रक्खा है।
का विद्वेष राष्ट्र की उन्नति में भयंकर बाधा उपस्थित कर
हा है। आज योरोप की सभ्य कहलाने वाली जातियाँ भी
द्वेष की अग्नि से अपने को सुरक्षित नहीं रख सकी हैं, वे आज
क दूसरे के रुधिर की प्यासी हो रही हैं। उनके विद्वेष की प्रचंड
नि भड़क-भड़क कर आस पास के राष्ट्रों को भी जलाये डालती
। भगवान् कुशल ही करें, क्योंकि यह विद्वेषानिल कहीं
लयकांड न उपस्थित करदे। यह पिशाचिनी ईर्षा सुरसा के
दन के समान जहाँ ही पदार्पण करेगी तहाँ-तहाँ वह अपना
यंकर रूप बनाये बिना नहीं रह सकती।

ईर्षा का जन्म संसार में विषम भावनायें ही उपस्थित करती
। जब तक समाज में छोटे-बड़े के भाव बने रहेंगे, तब तक
र्षा के भाव कदापि नहीं जा सकते। जहाँ तक सम्भव हो समाज
समता के भाव बर्ते जायँ और ऊँच नीच भाव की मनोवृत्ति
ो यथा शक्ति दबाया जाय तो बहुत अंश में शान्ति का
ाम्राज्य स्थापित हो सकता है। समाज में असन्तोष की मात्रा
[illegible] बढ़ जाता है तब विद्वेष की भावनायें जड़ पकड़ने
गती हैं। समाज में असन्तोष की मात्रा बढ़ने न होने देना
ाहिये। समाज में स्वार्थ भावनाओं की [illegible] हो जाना
, तब भी एक दूसरे के स्वार्थ [illegible] बहुधा [illegible]
[illegible]ती है। इसके लिये समाज [illegible]
[illegible]ने से ही श्रेय प्राप्त हो सकता है।

जो व्यक्ति और राष्ट्र अपना स्वार्थ [illegible]
[illegible] लेता है वहाँ संसार का [illegible] हो सकता है। [illegible]
[illegible]न्तियों ने स्वार्थ-भावनाओं को बढ़ा दिया है, [illegible] आज समाज

ऐसे ही सुन्दर राष्ट्र अपने नागरिक को निःस्वार्थ बना लें।
जिन कुटुम्बों और परिवारों में अपने स्वामी की आज्ञा-
करने की प्रवृत्ति है। उन्हीं कुटुम्बों और परिवारों में सुख-
शान्ति वर्तमान है। आज्ञापालन का गुण भी अन्य गुणों
भाँति अभ्यास की अपेक्षा रखता है। आज्ञापालन में उ
और हठ से अपनी मनोवृत्तियों का दूर रखना अनि
कर सिद्ध हुआ है। आज्ञापालन के अभ्यासियों को च
कि वे अपने जीवन की व्यवस्थाओं और नियमों के अ
बनाने की भरसक चेष्टा करें तब ही वह अपने लक्ष्य-स्था
पहुँचने के अधिकारी होंगे। दुराग्रह और हठ प्राय अ
और असभ्य जातियों ही में विशेष रूप से देखने में आते
सभ्य और सुसंस्कृत जातियों में आज्ञा पालन के गुण
रूप से होते हैं। इन्हीं विशेष गुणों के कारण उनकी प
छूट जाती है और उनमें मानव-जीवन के दिव्य गुण वि
होने लगते हैं। मानवी-उत्तम गुणों का विकास जीवन
आज्ञा पालन के सूत्र में बंधे रहने पर ही उत्पन्न होता है
आज्ञा पालन करने वाला चतुर सैनिक ही उत्तम सेनापति है
सकता है। आज्ञापालक आरुनी कणादि पातंजलि बन सक
हैं। आज्ञाकारी वाशिंगटन ही सिपाही पद से राष्ट्र-पति के
तक पहुँच गया था। कहाँ तक कहें मानवी-गुणों के विक
होने के लिये आज्ञा पालन ही सर्वोत्तम कसौटी है। जिस प
कस कर ही खोटे खरे की परीक्षा होती है। जो इस कसौ
पर सच्चा उतर गया बस उसका मनुष्य जीवन स
हो गया।

'परशुराम पितु आज्ञा राखी, मारी मातु लोक सब साखी'।

आज्ञापालन का उदाहरण इससे ऊँचा क्या हो सकता है
राम, आज मर्यादा पुरुषोत्तम पिता की आज्ञा पालन करने

। कारण कहलाते हैं। पिता की अनुचित काम-वासना की तृप्ति लिये भीष्म-पितामह को आजन्म ब्रह्मचारी रहना पड़ा। ाज्ञापालन के इन ज्वलन्त उदाहरणों के कारण भारतीय न्दू जाति संसार में अपना गौरव रख रही है। हिन्दू आर्य ाति मे आज्ञापालन के जितने ऊँचे आदर्श विद्यमान हैं वैसे ंसार की अन्य जातियो मे देखने तक को नहीं मिलते।

जहाँ तक आज्ञा पालन का संबंध है वहाँ, अनुचित और उचित ा प्रश्न ही नहीं रहता। कभी यह संभव नहीं कि योग्य स्वामी, तुर अध्यक्ष और कुशल सेनापति अनुचित प्रस्ताव हमारे ामने रक्खेंगे। कदाचित् किसी कारण वश हमारे सामने उनका नुचित प्रस्ताव आ भी जाय तो हमारा कर्तव्य आज्ञा पालन रने ही में होना उत्तम है उसके दोष अदोष पर विचार करना मारा कर्तव्य नहीं। हाँ, ऐसे प्रस्ताव जो धर्म और सदाचार के विपरीत हो उन्हें कदापि मानने को तैयार न होना चाहिये। इस प्रकार के प्रस्तावों को स्वीकार कर लेने से हम अधर्म और अनाचार की मात्रा बढाने मे सहायक सिद्ध होंगे, जो व्यक्ति और समाज मे बुराइयाँ ला सकता है। पुलिस और फौज की सर्विसें इस प्रकार की हैं जिसमें आज्ञापालन करना बड़ा ही आवश्यक है। इसमें उचित और अनुचित का विचार करने मात्र ही से सारी व्यवस्था अस्तव्यस्त हो जाती है। यहाँ उचित और अनुचित का विचार नायक अथवा सेनानायक ही कर सकता है, सिपाही का कार्य तो केवल आज्ञा मिलते ही काम पर जुट जाना है, यही सिद्धान्त आज्ञा पालन का वास्तविक स्वरूप है। इसी मार्ग के अवलंबन करने से व्यक्ति और समाजों मे शान्ति आती है और सारी व्यवस्थायें अपना अनुकूल फल दिखाती है।

———

कर्तव्य-पालन

विचार तालिकायें :—

१—(क) कर्तव्य का क्षेत्र

(ख) कर्तव्य पालन की आवश्यकता

२—कर्त्तव्य पालन मनुष्य मात्र का धर्म है

३—कर्त्तव्य पालन में कठिनाइयों से मनुष्य को घबरा[illegible]
चाहिये

४—कर्त्तव्य पालन की सच्ची शान्ति को कर्मवीर ही जानते [illegible]

५—कर्तव्य परायणता के उदाहरण

६—हमें कर्तव्य निष्ठ होना चाहिये

मनुष्य का जन्म संसार में कुछ करने के लिये हुआ है, [illegible] में असंख्य कार्य हैं जो नाश के साथ आते जाते रहते हैं [illegible] सामर्थ्य के अनुसार उन कार्यों का भली भाँति सम्पादन [illegible] कर्तव्य-पालन है। कुछ कार्य तो ऐसे हैं जिनका करना मनुष्य [illegible] का धर्म है, उन कार्यों में उदासीनता का परिचय देना [illegible] कर्तव्य कर्म से गिर जाना है। हमारे सामने आर्थिक, सामा[illegible] और राजनैतिक क्षेत्र में अनेक काम हैं जिनका भली प्रकार कार्यान्वित करना ही प्रयोजनीय है। उदासीनता वाञ्छ[illegible] नहीं है।

प्रकृति का प्रत्येक कार्य नियमित रूप से हो रहा है, सूर्य नियमित रूप से उदय और अस्त होते हैं। ऋतुयें अपने अपने समय समय पर आती हैं और चली जाती हैं। चन्द्रमा अपनी परिमित मात्रा में नित्य घटता बढ़ता रहता है। प्रकृति की किसी भी वस्तु को लीजिये वह अपने कार्य में नियमित रूप से लीन है किसी को भी अपने कर्तव्य कर्म से विचलित न पाओगे। क्या मजाल कि प्रकृति का कोई कान भी ढीला हो, अथवा थोड़ी देर भी उसमें अनियमता का आभास हो। जहाँ जैसी भी ड्यूटी पर प्रकृति ने उसे लगा रक्खा है, वहीं वह अटल रूप से अपने-अपने कर्तव्य पर डटा है। वृक्ष और पौधे अपने कर्तव्य पथ पर डटे नियमित समय पर फलते और फूलते हैं। वे कहीं खड़े हों, कैसी भी स्थिति में खड़े हों अपने कर्तव्य पथ से किञ्चित भी विचलित नहीं होते। कर्मवीर व्यक्तियों को प्रकृति के इस कर्तव्य पालन से शिक्षा लेनी चाहिये। उन्हें भी प्रकृति की भाँति कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण होना चाहिये, कैसी ही कठिनाइयाँ और आपत्तियाँ उपस्थित हों किन्तु कर्मवीरों को अपने नियम और सङ्कल्पों से किञ्चित भी विचलित न होना चाहिये। कर्मवीरों को भी पौधों और वृक्षों की भाँति नियमित रूप से समाज को सौरभ और सुन्दर फल प्रदान करना है

कर्तव्य-पथ में कितनी ही आपदायें और सङ्कट आयें किन्तु उनसे मनुष्य को कभी घबराना न चाहिये मनुष्य जीवन में ऐसे-ऐसे अवसर आते हैं जिनमें अपने पुत्र और कुलत्र तक को त्यागना पड़ता है बड़े-बड़े साम्राज्यों से हाथ धोना पड़ता है ऐसी विकट परिस्थितियों में धैर्य से काम करते हुये मनुष्य को अपने कर्तव्य पथ से किञ्चित भी विचलित न होना चाहिये। कर्तव्य पथ पर डटे रहने वाले व्यक्तियों के सफलता पीछे-पीछे लगी फिरती है। राम, प्यारी माता को अपने हृदय पर पत्थर

कर्तव्य-पालन

विचार तालिकायें .—

१—(क) कर्तव्य का क्षेत्र

(ख) कर्तव्य पालन की आवश्यकता

२—कर्त्तव्य पालन मनुष्य मात्र का धर्म है

३—कर्त्तव्य पालन मे कठिनाइयो से मनुष्य को घबराना न चाहिये

४—कर्त्तव्य पालन की सच्ची शान्ति को कर्मवीर ही जानते हैं

५—कर्तव्य परायणता के उदाहरण

६—हमे कर्त्तव्य निष्ट होना चाहिये

मनुष्य का जन्म ससार मे कुछ करने के लिये हुआ है, ससा म असख्य काय है जो जोव के साथ आते जाते रहते हैं अपन सामर्थ्य के अनुसार उन कार्यों को भली भांति सम्पादन करना कर्तव्य-पालन है। कुछ काय तो ऐसे है जिनका करना मनुष्य मात्र का धर्म है, उन कार्यों मे उदासीनता का परिचय देना अपने कर्तव्य कर्म मे गिर जाना है। हमारे सामने आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र मे अनेक काम है जिनका भली प्रकार से कार्यान्वित करना ही प्रयोजनीय है। उदासीनता वाञ्छनीय नहीं है।

प्रकृति का प्रत्येक कार्य नियमित रूप से हो रहा है, सूर्य नियमित रूप से उदय और अस्त होते हैं। ऋतुयें अपने अपने समय समय पर आती हैं और चली जाती हैं। चन्द्रमा अपनी परिमित मात्रा मे नित्य घटता बढ़ता रहता है। प्रकृति की किसी भी वस्तु को लीजिये वह अपने कार्य मे नियमित रूप से लीन है किसी को भी अपने कर्तव्य कर्म से विचलित न पाओगे। क्या मजाल कि प्रकृति का कोई काम भी ढीला हो, अथवा थोड़ी देर भी उसमे अनियमता का आभास हो। जहाँ जैसी भी ड्यूटी पर प्रकृति ने उसे लगा रक्खा है, वहीं वह अटल रूप से अपने-अपने कर्तव्य पर डटा है। वृक्ष और पौधे अपने कर्तव्य पथ पर डटे नियमित समय पर फलते और फूलते हैं। वे कहीं खड़े हों, कैसी भी स्थिति मे खड़े हों अपने कर्तव्य पथ से किञ्चित भी विचलित नहीं होते। कर्मवीर व्यक्तियो को प्रकृति के इस कर्तव्य पालन से शिक्षा लेनी चाहिये। उन्हे भी प्रकृति की भाँति कार्य क्षेत्र मे अवतीर्ण होना चाहिये, कैसी ही कठिनाइयाँ और आपत्तियाँ उपस्थित हो किन्तु कर्मवीरो को अपने नियम और सङ्कल्पो से किञ्चित भी विचलित न होना चाहिये। कर्मवीरो को भी पौधो और वृक्षो की भाँति नियमित रूप से समाज को सौरभ और सुन्दर फल प्रदान करना है

कर्तव्य-पथ मे कितनी ही आपदायें और सङ्कट आये किन्तु उनसे मनुष्य को कभी घबराना न चाहिये मनुष्य जीवन मे ऐसे-ऐसे अवसर आते है जिनमे अपने पुत्र और कुलत्र तक को त्यागना पड़ता है, बड़े-बड़े साम्राज्यो से हाथ धोना पड़ता है ऐसी विकट परिस्थितियो मे धैर्य से काम करते हुये मनुष्य को अपने कर्तव्य पथ से किञ्चित भी विचलित न होना चाहिये। कर्तव्य पथ पर दृढ रहने वाले व्यक्तियो के सफलता पीछे-पीछे लगी फिरती है। राम, प्यारी सीता को अपने हृदय पर पत्थर

कर्तव्य-पालन

विचार तालिकायें :—

१—(क) कर्तव्य का क्षेत्र
(ख) कर्तव्य पालन की आवश्यकता

२—कर्त्तव्य पालन मनुष्य मात्र का धर्म है

३—कर्त्तव्य पालन में कठिनाइयो से मनुष्य को घबराना चाहिये

४—कर्त्तव्य पालन की सच्ची शान्ति को कर्मवीर ही जानते हैं

५—कर्तव्य परायणता के उदाहरण

६—हमे कर्त्तव्य निष्ट होना चाहिये

मनुष्य का जन्म ससार मे कुछ करने के लिये हुआ है, संसार मे असख्य काय है जो जीवन के साथ आते जाते रहते हैं वे सामर्थ्य के अनुसार उन कार्यों को भली भाँति सम्पादन करना कर्तव्य-पालन है। कुछ काय तो ऐसे है जिनका करना मनुष्य मात्र का धर्म है, उन कार्यों मे उदासीनता का परिचय देना कर्तव्य कर्म से गिर जाना है। हमारे सामने आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक ऐसे अनेक काम है जिनका भली प्रकार कार्यान्वित करना ही प्रयोजनीय है। उदासीनता वान्छनीय नहीं है।

...चन्न करता है। जिस मार्ग पर समाज के आदर्श पुरुष चले हैं ...सी पर जनता का चलना वास्तविक धर्म है। सच्चे कर्तव्य-वीरों ...ा चरित्र समाज का अवलम्बन है जिस पर चढ़कर समाज ...त्थान के शिखर पर चढ़ना है। कर्मवीर एक प्रकार से समाज के ...काश स्तम्भ हैं जो समाज रूपी जहाज को अदृश चट्टानों से ...कराने से रोकते हैं। संसार में कोई ऐसा कार्य नहीं जो ...र्मवीरो से सम्पादन न हो सका हो। वे समाज धन्य हैं जो ...र्मवीरो को जन्म देती हैं. संसार मे वही समाज सभ्यता और ...संस्कृति मे अपना उपमान नहीं रखतीं जिन्होने योग्य कर्मवीरों ...को जन्म दिया है। जिस जाति में जितने ही कर्मवीरों की संख्या अधिक होती है उतनी ही वह जाति सुसंस्कृत और समुन्नत होती है। योरोप की कर्तव्य निष्ठ जातियाँ आज संसार में अपना सिर गौरव से उठा संसार को आदर्श उपस्थित कर रही हैं। कर्मनिष्ठ जापान एशिया मे अपना प्रतिरूप नहीं रखता। अतः पतित जातियों और समाजों को कर्तव्य निष्ट होना चाहिये। तब ही वह ससार में अपना अस्तित्व स्थापित रख सकेंगी।

———

रख कर जंगल में [illegible] आने की आज्ञा [illegible] को देते हैं। प्रताप भूप [illegible] अपने [illegible] को कार्य[illegible] देखते हैं। राजा हरिश्चन्द्र [illegible] शैव्या [illegible] की अन्त्येष्टि क्रिया नहीं करने देते। [illegible] के [illegible] में नहीं सब धर्मीजन हैं किन्तु हरिश्चन्द्र अपने धर्म से एक इंच भी विच-लित नहीं होते। यह है वास्तविक कर्तव्य-परायणता, और इसी को कहते हैं कर्तव्य पालन का निष्ठा।

कर्तव्य पालन की अनूठी शान्ति, निराली सान्त्वना अनुपम आनन्द को कर्मवीर ही जानते हैं। कायर उसका [illegible] भी नहीं बता सकते। जिस मार्ग पर कर्मवीर मनुष्य चल जाता कर्तव्य पालन में मानसी-मनोवृत्तियाँ एकाकार हो जाती हैं अपने पराये का भाव नहीं रहता। उसमें स्वार्थवाद की संकु भावनायें बिलकुल नहीं रहतीं। सर्वत्र समता और विश्वबन्धु के भाव जगमगाते रहते हैं। कर्मयोगी का हृदय सब के लि समान रूप से खुल जाता है, जिसमें जाति पाँति, रंग रूप वर्ण-अवर्ण का कोई भेद नहीं रहता। मजदूर अपनी मेह करने के पश्चात् कैसी सुख की नींद सोता है। प्रजा सुखी देख कर राजा के हृदय में सुख की सीमा नहीं रह डाक्टर का हृदय रोगी का स्वास्थ्य देख कर बाँसों उछ लगता है। मास्टर लड़के को पढ़ा कर कैसा सुख अनुभव क है। इस सुख का उनका अन्तरात्मा ही बता सकती है— सुख उन्होंने कर्तव्य श्रम से उपार्जन किया है।

कर्तव्य मार्ग में वही लोग चतुर और बुद्धिमान समझे जाते हैं, और उन्हीं लोगों का समाज में आदर और सम्मान होता है जो अपने कर्तव्य का भली भाँति पूरा करते हैं जो अपने कर्तव्य का पूरा पालन करते हैं उन्हीं का संसार में नाम अमर हो जाता है। उन्हीं के पद चिन्हों पर चलने का संसार

आजीविका साधन हो चला है। व्यापार में भी पत्रों ने पर्याप्त उन्नति की है। प्रायः व्यापारियों की रहती है कि हमारा माल अधिक मात्रा मे बिके किन्तु यह दशा मे संभव है कि उसकी दूकान को अधिक ग्राहक जानें और यह भी जानते हों कि अमुक दूकान पर अमुक इस भाव मे मिलता है। यह सामर्थ्य किसी व्यापारी में है कि वह घर-घर और गाँव-गाँव कहता फिरे कि हमारी पर सब से सस्ता सौदा मिलता है। इस कार्य को बड़ी सरलता पूर्वक सम्पन्न करते हैं और बहुत थोड़े व्यय मे व्यापारी को जान लेती हैं। समाचार पत्रों द्वारा विज्ञापन माल बेचने मे बड़ी उन्नति हुई है, यह काम दिन-दिन ही चला जारहा है। इस विज्ञापन प्रणाली ने व्यापारी जगत एक क्रान्तिकारी युग उपस्थित कर दिया है।

इस वैज्ञानिक युग मे प्रत्येक स्वेच्छाचारी शासक को उत्तरदायित्त्व जनता के सम्मुख रखना पड़ता है। जनता की अभिलाषा भी रहती है कि वह अपनी आवाज को वर्तमान शासकों तक भेजे। दोनों ही दशाओं मे प्रत्येक को अभिलाषा रहती है कि हमारी आज्ञा या आवाज का सम्मान किया जाय। जनता और सरकार अपनी सम्मति का स्पष्टीकरण समाचार पत्रों द्वारा ही करते है। निर्वाचन काल मे समाचार-पत्रों की माँग अधिक बढ़ जाती है। निर्वाचक महाशय बड़े-बड़े आकर्षक और युगान्तरकाली लेख समाचार-पत्रों मे प्रकाशित कराकर अपने मतदाताओं को अपनी ओर तोड लेते है। उनके प्रतिद्वन्द्वी महाशय उसके विपरीत विज्ञापन देकर जनता से उनका सम्मान कम करने का प्रयत्न करते है। यह निर्विवाद सिद्ध है कि जिस उम्मेदवार का समाचार-पत्र समर्थन करदें वह अवश्य ही सफल हो जाता है। समाचार-पत्रों द्वारा मनुष्य दूसरे मनुष्यों को अपने

पहिचानते हैं वे मन की अनन्त शक्तियों को मानसिक और सत्ता में विरोध करते है। उनका प्रत्येक काम ... व्यतीत होता है वे विघ्नों को अपने पास नहीं फटकने आपत्ति काल सम्मुख आने पर वह कभी नहीं घबराते, अपने साहस को खोते है। प्राय देखने में आया है कि पुरुष उत्तरदायित्व के काम को ऐसा जुम्मेवरी से नहीं जैसे कि धैर्यवान पुरुष उस सुन्दरता से सम्पादन करते हैं। के बड़े और उच्च कार्यों पर स्थिरचित्त मनुष्यों का ही नियत चाहिये। क्योंकि उनमें आपत्तियों के सामना करने की ... होती है। वे अपने आश्रितों का उचित मार्ग का अवलंबन ... हैं। वे समय को प्रगति को समयानुकूल बनाकर वैसा चलने लगते हैं।

प्राय. देखने में आया है कि आपत्तिकाल के आने पर बड़े बुद्धिमान और धैर्यवान व्यक्ति अपना साहस खो देते और घबराहट में ऐसा कार्य कर बैठते हैं जिससे उनके उस ... पर सारा ससार हॅसता है। आपत्तिकाल में घबराहट और कर्तव्य का त्याग ऐसे निदनीय हे जो कभी व्यक्ति को पनपने नहीं देते।

यदि देश के नेता घोर सकट आने पर अपना साहस और धैर्य छोड़दे तो सर्वनाश हो जाय। राजभक्त योग्य सेनापति यदि युद्ध क्षेत्र में अपना साहस और धैर्य खो दे। तो बस सारा कार्य चौपट हो जाय और उसको राजभक्ति और ईमानदारी रक्खी ही रह जाय। ऐसी अवस्था में न उस सेनापति का कुछ मूल्य है और न वह सेनापति बनाये जाने योग्य है।

धैर्यवान और दृढ़चित्त व्यक्ति ही ससार में सफलतायें पाते है। वे कैसी भी अवस्था में अपना धैर्य नहीं छोड़ते। सदैव वे दृढ़ चित्त हो कर्तव्य पथ पर आरूढ़ रहते है। उनका लक्ष्य

संतोषी सदा सुखी

विचार तालिकायें.—

(१) क—परिश्रम और प्रयत्नों द्वारा जो प्राप्त हो उसे प्रसन्न रहना संतोष है

ख—अभिलाषायें मनुष्य को दासता में बांधती हैं

(२) कर्तव्य क्षेत्र से विमुख होकर बैठना कायरता है

(३) आलस्य जातियों और राष्ट्रों को नष्ट कर देता है

(४) महासंतोषी डायोजिनीज और सिकन्दर

(५) अभिलाषायें मानवी ज्ञान-शक्तियों को निकम्मा कर देती हैं

(६) सेवा, परोपकार, और विद्योपार्जन में जितना असंतोष है उतना ही उत्तम

(७) मनुष्य को चाहिये कि वह संतोष को हाथ से न जाने दे

गोधन, गज धन, बाजि धन, और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान॥

परिश्रम अध्यवसाय और प्रयत्नों द्वारा जो प्राप्त हो, उसे आनंदित रहने का नाम संतोष है, संतोष में अनाधिकार ...यें, व्यर्थ अभिलाषायें और अप्राप्त वस्तु की ओर आकर्षण ... होता। किसी कार्य विशेष में उसकी सफलता की धारणा पहले से ही बना लेना संतोष की गणना में नहीं आता। किसी से याचना करना संतोष के सिद्धान्तों से गिरना है। व्यर्थ का वादविवाद, अनर्गल प्रलाप और व्यर्थ के मत भेदों से ... बना

संताप की मात्रा में वृद्धि करना है। ईर्षा और द्वेष, कपटाचार और अभिमान संतोष के विद्यार्थियों को नहीं सुहाता। हाँ, निर्द्वन्द्वता और निर्भयता का एक छत्र-साम्राज्य संतोषियों के हृदय में लहर मारता रहता है। व्यर्थ की चाटुकारी से सतोषी सदैव घृणा करते हैं। कुबेर का अपरमित भंडार संतोषी के हृदय में विचलित नहीं कर सकता। सुरम्य मन भावनी अट्टालिकायें, आकर्षक वस्त्राभूषण और मनमोहक षटरस भोजन संतोषी के हृदय में परिवर्तन नहीं कर सकते। साधारण वेष भूषा, साधारण रहन सहन जैसे संतोषी व्यक्ति को आकर्षक हैं ऐसी कोई अन्य वस्तु उसके लिये आकर्षक नहीं है। संतोषी के निकट साधारण जीवन और उच्च विचार के भाव ही अधिक आदर पाते हैं। संसार में वही व्यक्ति दुःखी है, जिसकी आवश्यकतायें अधिक हैं। ससार में वही अकिंचिन है, वही तुच्छ है और उसीका जीवन कंटकमय है जिसकी ससार में अभिलाषायें अधिक हैं। मानवी अभिलाषायें मनुष्य को दासता की शृङ्खला में जकड़ती हैं। रहा असंतोष वह आलस्य को उत्तेजना देता है, अकर्मण्यता को बढ़ाता है और व्यर्थ की अभिलाषाओं को जन्म देता है। ये असंतोष में काटें के समान खटकता है। स्वार्थ-भावना का खरा नृत्य असंतुष्ट अवस्था में ही देखने को मिलता है। समस्त विश्व की सम्पत्ति और वैभव मेरे ही निकट एकत्र हों, सबका मैं ही उपभोग करूँ यही भावना असंतोषी के हृदय में उथल पुथल मचाती रहती है। असंतोषी अपनी स्वार्थ-साधना में जघन्य से जघन्य कार्य करने पर उतारू रहता है। संसार के भीषण अत्याचार, रोमांचकारी-हत्याकांड सब इस असंतोष की आड़ में हो रहे हैं। संसार के विश्व व्यापी युद्ध और विकट क्रान्तियाँ असंतोष ही के कारण मच रही हैं।

कुछ लोग कार्य-क्षेत्र में विमुख होकर रहने का आशय

संतोष लेते हैं । मैं उन्हे कहूँगा उनका यह संतोष नहीं है, यह एक ऊँचे दरजे की कायरता है । भाग्य भरोसे पर बैठ कर पर हाथ रखे रहना कदापि सतोष नहीं है ।

"दैव दैव आलसी पुकारा, कादर मन कर एक अघारा।"

मनुष्य जीवन मे निरुद्यम और आलस्य बडे बुरे परि लाते है। ये दोनो ही अवस्थायें मनुष्य को गहरे गर्त मे डा वाली हैं । आलस्य ने बड़े बड़े साम्राज्यो को ससार से मि दिया। जो जातियाँ इसे आदर देती है, वह बहुत शीघ्र अस्तित्व मिटा लेती है । आलसी व्यक्ति परिवार के लिये भार रूप है ही किन्तु वह समाज के लिये भी एक तरह से हो है। आलसियो के लिये तो संसार मे कोई आकर्षण ही है। उनके लिये तो संसार नीरस है। शुभ कर्म उनके लिये हैं। उन्हे किसी काम मे दिलचस्पी नही। वे तो जीवित ही के समान है। "मनुष्य-रूपेण-मृगयाश्चरन्ति"। किन्तु संतोषी मे यह दुर्गुण देखने को नहीं मिलते। किन्तु संतोषी जीवन मे बद सुख है, शान्ति है और कार्यतत्परता मे सलग्नता है। संसार प्रत्येक पदार्थ उसके लिये आकर्षक है, सतोषी के लिये यह जग कर्म भूमि है। जिसमे वह फलाशा को छोड जगत का काम करता है। प्रसन्नतायें सतोषी के साथ सदैव अठखेलियाँ करती हैं, भा भावना और कुत्सित मनोवृत्तियाँ उसके निकट नहीं आ सकतीं। प्रलोभन उसकी साम्य प्रवृत्ति मे विकार उत्पन्न नही कर सकते। संतोषी अपने सतोष क बल पर बड़े चक्रवर्त्तियो को भी नीच दिखाने मे समर्थ हो सकता है। विजयोन्मत्त सिकन्दर ने डाय जिनीज से कहा कि तू मुझ से कुछ माग । डायोजिनीज ने विनम्र शब्दो मे उत्तर दिया मुझे कुछ नही चाहिये। सिकन्दर ने पुन डायोजिनीज से मागने का कहा, किन्तु डायोजिनीज ने ब गंभीरता से उत्तर दिया कि कृपया आप मेरे सामने से ह

[illegible] की [illegible] नहीं
जब तक लौकिक पदार्थों से प्रेम [illegible]
जब तक हम आवश्यकताओं पर विजय नहीं पा सकते। जब तक
मार्गों में चलने के [illegible] कि वह
आवश्यकताओं को जहाँ तक सम्भव हो कम करें
और [illegible] पदार्थों में विशेष अनुराग न रखें। के-
वल गति का अभ्यास करें, जिन जिन वस्तुओं की ओर
अधिक मन खिंचे उनसे आराम लेने का अभ्यास करें। [illegible]
वृत्तियों पर पूरा आधिपत्य रखा जाय। अपनी अभिला[illegible]
को सदैव इच्छानुवर्तिनी बनाया जाय। तब ही वासनाओं
विजय पाना सम्भव हो सकेगा।

सांसारिक दुःखों का मूल कारण मन है। यदि मन
संयमी बना कर संतोष के मार्ग पर डाल दिया जाय तो कु
कुछ शान्ति मिल सकती है। जब तक मन पर पूरा अधिकार
जमाया जायगा तब तक मानसिक शान्ति कदापि सम्भव
है। मानसिक शान्ति के लिये बड़े बड़े प्रयत्न किये जाते हैं। त
कहीं जाकर शान्ति मिलती है। यहाँ मेरा अभिप्राय यह
नहीं है कि मनुष्य संसार से उपराम प्राप्त करके जंगल
चला जाय। यहाँ मेरा अभिप्राय यह है कि मनुष्य अपनी चि
वृत्तियों पर पूर्ण आधिपत्य रखते हुए जीवनयापन करे। स्व
इच्छाओं की पूर्ति के लिये पशु प्रवृत्ति न उत्पन्न होने दें। ज
इस प्रकार मन पर अधिकार हो जायगा तो संतोष की मात्रा हृद
में जमने लगेगा और शान्ति का आनन्द अनुभव हो
लगेगा।

संतोष मानवी-जीवन को जहाँ उत्कृष्ट बनाता है वहाँ इस
दुरुपयोग बड़ा भयावह परिणाम उपस्थित करता है। संतोष
भी एक सीमा है जहाँ वह अपने सुखद दृश्य उपस्थित क

कता है। जहाँ देश, जाति और समाज का प्रश्न है वहाँ तक
तोष होना चाहिये। देश और समाज के लिये तो तृष्णा और
तम आकांक्षायें भी बड़ी श्रेयस्कर हैं। सेवा, परोपकार और
वद्या-उपार्जन में ही असंतोष हो उतना ही उत्तम। इन कामों में
ी असंतोष की अपरमित मात्रा ही लोक-हित-कारिणी सिद्ध
ई है।

आपत्ति काल सन्मुख होने पर, विकट संकट उपस्थित होने
र जब मनुष्य आपत्तियों से विचलित होता है, घबड़ाता है
अथवा संतोष करके बैठता है तो यह उसकी कायरता है, नीचता
और भीरुता है। संतोष तो जीवन का ऊँचा आदर्श है, जो
डे संयम के पश्चात प्राप्त होता है। अतः यह कहना कि वास्तव
संतोष ही परम सुख है, अतिउक्ति न होगी। अतः मनुष्य
ात्र का कर्तव्य है कि वह थोड़े में निर्वाह करता हुआ अपने
जीवन को संयमी बनाये। चित्त वृत्तियों पर पूरा अधिकार
रखे। सतत् उद्यम शील रहे और संतोष को कभी अपने हाथ
ी न जाने दे। तब ही मनुष्यजीवन सार्थक हो सकता है
अन्यथा नहीं। कबीर का संतोष कितना ऊँचा आदर्श उपस्थित
रता है :—

"साईं इतना दीजिये, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

सहानुभूति

विचार-तालिकायें—

(१) भ्रातृ भाव

(२) पारस्परिक समता

(३) प्राणीमात्र का समान अधिकार

(४) उपसहार

पारस्परिक ममता, प्रेम और भ्रातृभाव के भाव सहानुभूति में महायता करते है। त्याग की प्रवृत्ति और सहृदयता सहानुभूति के पौधे का सींचते है। दूसरों के सुख दुःख उन्हीं के समान सुख दुःख अनुभव करना सच्ची सहानुभूति है। ईर्ष्या, द्वेष और पारस्परिक मनामालिन्य सहानुभूति के मार्ग में बाधा उपस्थित करते हैं। जो सहानुभूति के वृक्ष को विकसित नहीं होने देते।

यह समस्त वसुधा भगवान की है, प्रकृति की प्रत्येक देन पर प्राणीमात्र का समान अधिकार है। कोई किसी से अधिक न भोग करे यह प्रकृति के नियम विरुद्ध है। सारा जगत भगवान ने प्रेम-वश हो निर्माण किया है। अत सारा जगत प्रेम पर अवलम्बित है। मनुष्यों में नहीं वरच पशु पक्षियों में पारस्परिक सहायता और प्रेम के भाव उपस्थित हैं। प्रकृति में अपनी जाति के प्राणी को न कोई पशु मारता है और न उसके प्रति विद्वेष रखता है। किन्तु मनुष्य सर्व श्रेष्ठ प्राणी होता हुआ भी अपने स्वजातीय
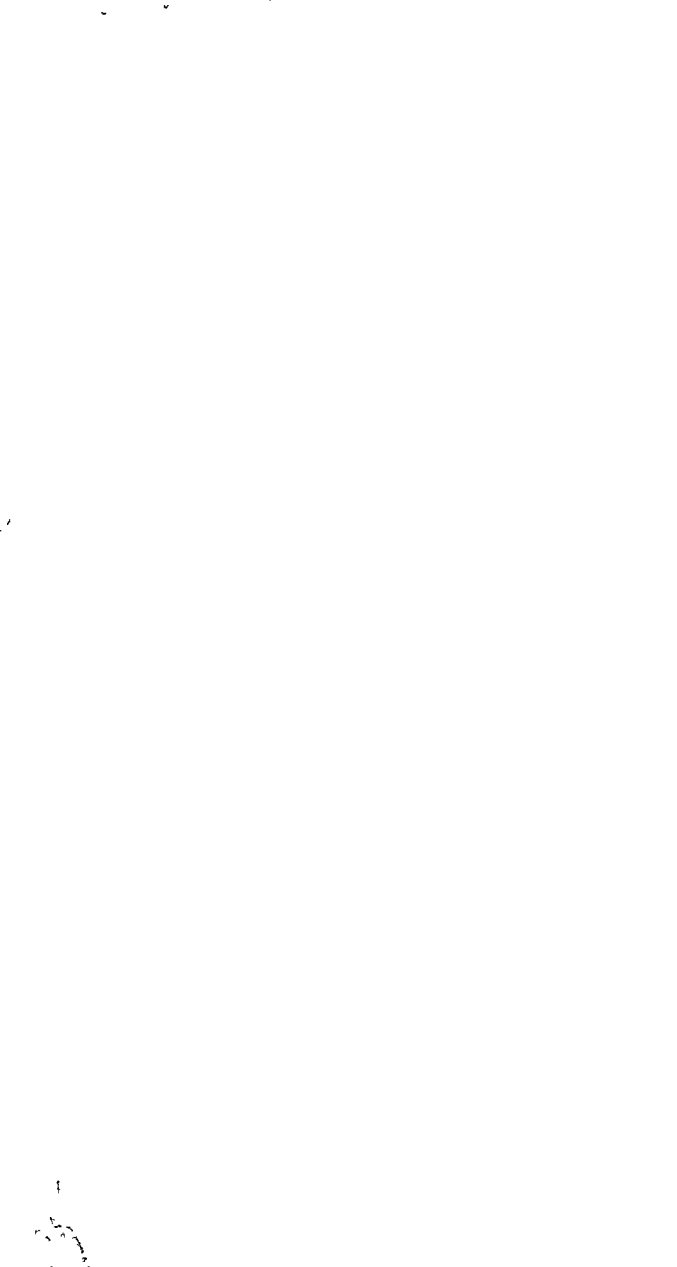
आलस्य

विचार-तालिकायें—

(१) मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों का ह्रास
(२) समाज के लिये सक्रामक
(३) उद्योग तथा पुरुषार्थ की अनुपस्थिति
(४) स्वास्थ्य हानि सर्वस्व हानि
(५) उपसंहार

आलस्य शारीरिक और मानसिक शक्तियों का नाश करत है। विलासिता, अकर्मण्यता और पराधीनता आलस्य रूपान्तर मात्र हैं। मानवी-शरीर की रचना कर्तव्य-परायणता लिये हुई है। मनुष्य शरीर के अवयव तथा मस्तिष्क काम लेने पर कुंठित हो जाते हैं। समाज में अशिक्षा और अज्ञा आलस्य के कारण ही प्रवेश करते हैं। आलस्य एक व्यक्ति औ समाज का ऐसा रोग है जो शनै. शनै: घुन की भाति विना करता रहता है।

आलसी मनुष्य भाग्यवाद की आड मे जीवन नष्ट किय करता है। उसका अमूल्य जीवन व्यर्थ के वाद-विवाद में व्यती होता है। जहाँ आलस्य निवास करता है वहाँ रोग, विनाश दरिद्रता, मलिनता और पराधीनता स्वयं आ उपस्थित होती हैं। जो प्रयत्न करके भगाने से भी नहीं भागती। आलसी के घर ही को वह अपना सुन्दर क्रीड़ा क्षेत्र बनाती है। आलस्य मानवी इच्छा शक्तियो को बिलकुल नष्ट कर डालता है। आलस्य के प्रभुत्व जम जाने पर व्यक्ति के अन्दर से साहस सदैव को विदा

राज-भक्ति

विचार-तालिकायें—

(१) राजा ईश्वरांश है

(२) समाज तथा देश की उचित व्यवस्था

(३) धार्मिक स्वतन्त्रता

(४) उपसंहार

राजा समाज और देश की व्यवस्था को ठीक रखता है सुव्यवस्थित राज्य रहने से देश में व्यापार, कला कौशल साहित्य उन्नत होते हैं। राजा प्रजा का पिता है। राजा परम कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा का पुत्रवत पालन क जिस राज्य में राजा को ऐसी मनोवृत्ति होती है वहाँ सुख, शा और ऐश्वर्य निवास करते हैं। ऐसे ही राज्य को रामराज्य नाम से पुकारते हैं। विपर्य इसके जो राजा अपनी प्रजा पुत्रवत पालन नहीं करता और सदैव प्रजा के रक्त-शोषण में लगा रहता है, वह राजा न प्रजा का श्रद्धापात्र हो हो सक है, और न सर्व मान्य हो। ऐसा राजा प्रजा के लिये जंजाल है जो समय आने पर हटाया भी जा सकता है। सुस राष्ट्रों ने सदैव ऐसा किया है। प्रजा हितैषी राज्य ही संसार अधिक काल तक जीवित रहता है। अत्याचारी राजा की न सदैव बालू की भीत पर जमाई जाती है।
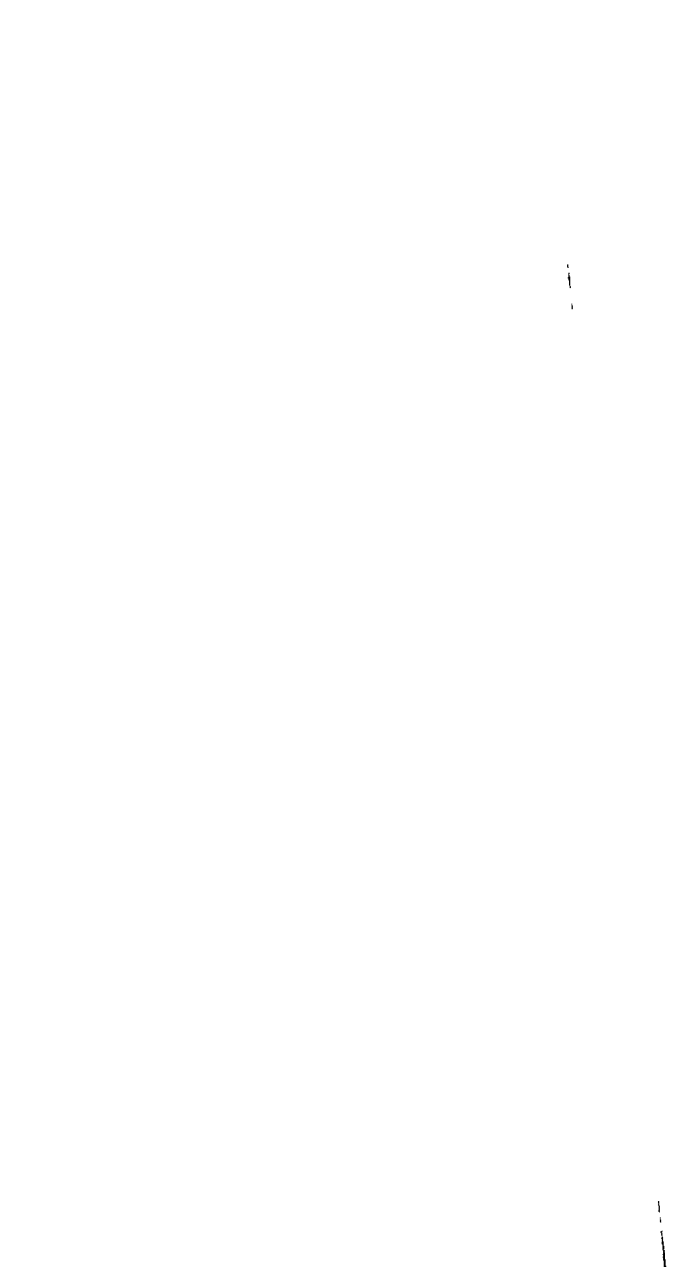
इतनी चरम सीमा को पहुँची हुई नहीं है जैसी कि भारतवर्ष में पहुँच गई है। इसका कलंक हिन्दू कहलाने वाली समाज पर ही विशेष रूप से है। दूसरी जातियों में छोटे और नीच कहानेवाली जातियों की स्वतन्त्रता को इस हद तक नहीं छीना गया जैसा कि हिन्दू समाज ने छीन रक्खा है। इसे मैं तो हिन्दू समाज का कलंक ही कहूँगा। उच्च हिन्दू समाज अछूतों को घृणा की दृष्टि से देखता है। उनकी यह घृणा संसार की सभ्य जातियों के सन्मुख कभी ऊँचा सिर नहीं कर सकती।

हिन्दू समाज में ६ करोड़ मनुष्य ऐसे है जिनको हिन्दू समाज ने अछूत समझ रक्खा है। चमार, भंगी, पासी, धोबी, खटीक, कोली, ओड़, धानुक, मादुर, कबीर पंथी, रैदासी, डोम, मवाली, महाजन और मेड़ आदि जातियों की गणना अछूतो में की जाती है। उच्च हिन्दू उनका स्पर्श नहीं करते, उन्हें कुओं से जल नहीं भरने देते, उन्हें मंदिरो मे देव दर्शन नहीं करने देते, और उनके बच्चो को स्कूलो और पाठशालाओं मे प्रविष्ट नहीं होने देते। यही नहीं उनके अनेक सामाजिक कार्यों मे बाधा डालते हैं। उनके साथ मनुष्यता का व्यवहार नहीं करते। बेचारों को क्रूर और अत्याचारी उपकरणों से बुरी तरह दबाते और दुःखी करते हैं। उन्हे सामाजिक स्वतन्त्रता देना पाप समझते है। उन्हे द्वेष और घृणा की दृष्टि से देखते है। इस प्रकार अछूत कहे जाने वाली जातियाँ शताब्दियों से उच्च वर्ण हिन्दुओं से सताई और दुःखी की जा रही है। अनेक महापुरुषों ने इस कलंक को नाश करने का भी प्रयत्न किया किन्तु उन्हे इसमें आंशिक ही सफलता प्राप्त हुई। इस विनाशकारी प्रथा को मिटाने मे कोई पूर्ण सफल नहीं हुआ। राजा राममोहन राय ने भरसक प्रयत्न किया कि हिन्दू समाज से यह कलंक धुल जाय। स्वामी दयानंद जी ने इस कलंक को मिटाने

और उसे अपनी भोजन सामग्री बनाती है। विश्व में यही सिद्धान्त काम कर रहा है। आज ईसाई और मुसलमान कहलाई जाने वाली भारतीय जातियों इसी प्रकार विधर्मी बन गई हैं। ईसाई समाज और मुस्लिम समाज ने उनको भली भांति अपनाया, प्यार किया और उन्हें अपने समाज में यथोचित सम्मान दिया, इसी कारण हिन्दू समाज का एक बहुत बड़ा अंग टूट कर उनमें जा मिला। और उनका तांता एक लम्बे काल तक लगा रहा। जिसका अनुमान हिन्दू समाज को २ बीसवीं शताब्दि में अनुभव हुआ। आज हिन्दू समाज का ६ करोड़ समुदाय विधर्मी समाज ने इस अस्पर्शता के कारण मिलाया गया। किन्तु इस भयंकर ह्रास को देखते हुये भी हिंदू जनता की मोहनिद्रा अभी नहीं टूटी है। भगवान इस हिन्दू जनता को सद्बुद्धि प्रदान करे।

महात्मा गांधी के व्यक्तित्व ने भारतीय जातीय-जीवन में एक स्फूर्ति उत्पन्न कर दी है। उन्होंने इस छूआछूत को मिटाने के लिये अपने प्राणों तक की बाजी लगा रक्खी है। उनके इस अनवरत परिश्रम से अंधी हिन्दू जनता की आँखे खुली है। स्कूलों और पाठशालाओं में अछूतों का प्रवेश होने लगा है। देव मंदिर उनके लिये खोल दिये गये हैं। कूओं पर जल भरने की स्वतंत्रता मिलने लगी है। अछूतों में भी अब सफाई आती जाती है। अछूतों में भी संगठन के भाव उत्पन्न हो गये हैं जिससे भविष्य उज्ज्वल मालूम पड़ता है। अछूत समाज अपने दायित्व को समझने लगा है। उधर हिन्दू महासभा, प० सावरकर और प० मदनमोहन मालवीय अछूतोद्धार के काम में प्राण पण से लग गये हैं। वह दिन अब दूर नहीं जब कि हिन्दू जनता में से छूआ छूत के भाव सर्वदा के लिये निर्मूल हो
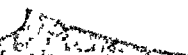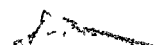
मित्र के कर्तव्य

विचार-तालिकायें :—

(१) मैत्री सुख वृद्धि का साधन है

(२) मित्र के दर्शन से आपत्ति कम मालूम होती है

(३) मित्र आपत्ति काल में सान्त्वना देता है

(४) मित्रता आत्म-त्याग सिखाती है

(५) ससार मे 'विपति कसौटी जे कसे सोई साँचे मीत'

(६) ससार मे सच्चे मित्रोका अभाव है, जिसे सच्चा मित्र मि
गया उसे अधिक पाने की आवश्यकता नहीं

(७) कृष्ण सुदामा की मित्रता का आदर्श ससार मे बहुत ऊँ

(८) उपसहार—मित्र कैसा बनाना चाहिये

'जे न मित्र दु ख होहि दुखारी,
तिनहि विलोकत पातक भारी ॥
निज दुख गिरि सम रज कै जाना,
मित्र क दुख गिरि मेरु समाना ॥'

सच्चा मित्र वही है जो सकट मे मदद करे। जो हमारे दु.ख से दु.खी न हो, जो हमारी प्रसन्नता से प्रसन्न न हो उसे मित्र कोटि में रहना व्यर्थ है। वे लोग धन्य हैं जिनके हृदय हारी मित्र हैं। जिनको ससार में हृदय हारी मित्र मिल गये हैं उनको

जिन के जीवन में किसी का मित्र बना लेना [illegible] सकता है। किसी के साथ और [illegible] बात ही करने से मित्र न बना लेना चाहिये। किसी का चाल [illegible] और व्यवहार बिना [illegible] मित्र न बनाना चाहिये। मित्र बनाने में जल्दी करना अच्छा नहीं है, मित्र [illegible] को भुला दे। मित्रता में स्वार्थ भावना की गन्ध तक नहीं होनी चाहिये। शुद्ध प्रेम में स्वार्थ का स्थान नहीं [illegible] का प्रेम केवल [illegible] होता है जो केवल [illegible] स्वार्थ पूरा होता रहता है फिर छिन्न भिन्न हो जाता है। [illegible] प्रेम [illegible] वस्तु है। निःस्वार्थ प्रेम [illegible] बढ़ता ही रहता है, उसमें कभी [illegible] नहीं आता। शुद्ध प्रेम वास्तव में भगवान का रूप है।

जीवन परिवर्तनशील है। इसमें अनेक उतार चढ़ाव आते रहते हैं। कभी आनन्द और सुख का युग आता है। कभी घोर संकट और आपदा का। संकट काल उपस्थित होने पर बड़े बड़े दिग्गज अपना साहस खो बैठते हैं। सच्चे मित्र ऐसे ही समय में मनुष्य का साथ देते हैं। "विपति कसौटी जे कसे सोई साँचे मीत।" निस्सन्देह सच्चे मित्र ही आपद्काल में काम आते हैं, झूठे और बरसाती मित्र नहीं।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी,
आपद काल परखिये चारी।

आजकल लोग साधारण बोल चाल होजाने पर ही एक दूसरे को अपना मित्र समझने लगते हैं। अंग्रेजी पढ़े लिखे लड़कों को तो मित्र बनाने की धुन सी सवार रहती है, जहाँ किसी ने उनसे मधुर बातें की और दो-एक दिन पान खिला

जाता है जिसे गँवार और अशिक्षित स्त्रियाँ कभी सु...
से नहीं कर सकतीं। नर का सर्वोत्तम सुधार बनाने में
स्त्रियों की अपेक्षा शिक्षित स्त्रियाँ ही अधिक सिद्ध हुई
गई हैं। अत शिक्षा को स्त्रियों के अनुपयोगी बतलाना
समझ से बड़ा निरर्थक है। शिक्षा का सदुपयोग न करना शि...
का दोष नहीं वरन जनता का दोष है।

एक लोकोक्ति है—"माता सुशिक्षित पुत्रो सुशिक्षित, मा...
अशिक्षित पुत्रो अशिक्षित।" निस्सन्देह बच्चों को सभ्य नागरि...
स्त्रियाँ ही बना सकती हैं। बच्चा में उत्तम गुणों का विका...
माता द्वारा ही होता है। बच्चा में मृदुता, सभ्यता, सद्भाव...
और शिष्टाचार का बीज वपन माता ही को पाठशाला में
आरम्भ होता है। अभिमन्यु जैसा तेजस्वी वीर माता की ह...
पाठशाला में तयार हुआ था। परम साहसी शिवाजी के
उनकी माता ही ने ऐसे गुणों से सम्पन्न किया था। महा विक्र...
बल शाली नेपालियन बोनापार्ट ने माता ही की गोद में इ...
अपूर्व गुणों को सीखा था। माता समाज का एक साँचा है...
बच्चे को चाहे जैसे साँचे में ढाल सकता है। अतः राष्ट्र-निर्माण...
कारी कार्यों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक कार्य क...
सकती हैं।

शिक्षा पुरुष अथवा स्त्रियों में आत्म-संरक्षण के भाव भर...
है, उनमें क्षमता और सहिष्णुता के भावों का सचारित कर...
है। भय की मात्रा को स्त्रियों में से शिक्षा ने बहुत कुछ अंश
दूर किया है। मूर्खा स्त्रियों की अपेक्षा शिक्षित स्त्रियाँ सक...
का सामना बड़े धैर्य से करने लगी हैं। अपने पति की अनुप...
स्थिति में अपने कुटुम्ब का पालन करने में स्त्रियों में असाधारण
प्रतिभा देखने में आती है। अपने वैधव्य काल को शिक्षित
स्त्रियाँ बड़ी सुगमता से काट लेती हैं और अपने आश्रितों को

वाले क्रीम और पाउडरों ने आकर उनकी स्वाभाविकता ... दिया है। स्वाभाविक सौन्दर्य के स्थान पर कृत्रिम सौन्दर्य पकड़ता जाता है। सहशिक्षा के रोग ने तो अलग तहलका रक्खा है। सहशिक्षा के दूपण परिणाम नित्य ही जनता के समक्ष आ रहे हैं। पच्छिमी संस्कृति ने स्त्रियों ... में विलासिता के भाव भर दिये हैं। इस शिक्षा के कारण ... समाज का सहज परिश्रम-प्रियता का गुण नित्यशः मिटता ... जा रहा है। परिश्रम-प्रियता के स्थान पर आलस्य और वि... अपने पंजे जमाता जाता है। वर्तमानकाल की पढ़ी लि... लड़कियाँ शारीरिक काम करने से घबड़ाती है और उस काम करने में अपना अपमान अनुभव करती हैं। जहाँ घर गृह... के कामो में स्त्रियो को स्वाभाविक स्नेह था, वहाँ अब ... गृहस्थी के कामो में घृणा हो चली है। आज की पढ़ी लि... महिलायें वेचारी वे पढ़ी लिखी स्त्रियो से बातें तक करने में न... रत करती हैं। वे व्यवहारिक जीवन के काल्पनिक जीवन ही अधिक आनन्द देखती है।

यह दूपण वर्तमान शिक्षा प्रणाली में ऐसे है जो भुलाये न जा सकते। शिक्षा की यह वर्तमान शैली स्त्री समाज का ला... के स्थान पर हानि पहुँचावेगी। हमे वह शिक्षा कदापि वांछनी... नहीं जो हमारे भाव, भाषा और सस्कृति को मिटा दे।

उपरोक्त दोपो का दिग्दर्शन कराने का अभिप्राय कदापि य... नही है कि स्त्री शिक्षा होनी ही न चाहिये। स्त्री शिक्षा भारती... वातावरण और भौगोलिक स्थिति को देख कर होनी चाहिये। हमारी शिक्षा का ध्येय पश्चिमीय सभ्यता को अपनाना न होना चाहिये। पश्चिमी सस्कृति हमारे लिये कदापि सुखद परिणाम नहीं ला सकती। हमे अपनी बहिन बेटियों को कोरी मेम साहिबा नहीं बनाना है। हमे गार्गी और मैत्रेयी से ऊँची महिलायें तैयार

नी है। जब तक हमारा महिला जगत पर्याप्त मात्रा मे तैयार
हीं हो जाता तब तक हमारी समस्त उज्ज्वल आशायें निरर्थक
जायेंगी। हमारे राष्ट्र-निर्माण-कार्य में जितना हाथ शिक्षित
री समाज बटा सकता है उतना पुरुष समाज नहीं। भारत की
ायी राजनीति को मेटने के लिये हमें ऐसी महिला समाज
ी आवश्यकता है जो हमारे बच्चो के हृदय मे ठूँस-ठूँस कर
ष्ट्रीय भावनायें भर दें। बच्चो के हृदय मे स्वदेश के प्रति ऐसा
ान उमड़ा दें कि बच्चे साम्प्रदायिकता के संकुचित दायरे को
आसानी से पार कर सकें। योग्य नागरिकों के बिना कोई राष्ट्र
त्थान नहीं कर पाता। भगवान भारतीय महिला समाज में
क्षमता प्रदान करे कि वे योग्य नागरिक बनाने मे पूरी सफल
ों।

———

निर्धनता या दरिद्रता

विचार तालिकायें:—

(१) *दरिद्रता मनुष्य के रूप रंग को बिगाड़ देती है*

(२) *ससार मनुष्य की नहीं वरंच धन की इज्जत कर*

(३) *दरिद्रता मनुष्य के ज्ञान को कुंठित कर देती है*

(४) *दरिद्रता बड़े-बड़े विक्रम-शालियों की नसें कर देती है*

(५) *साहस और स्वावलम्बन दरिद्रता का नाश करते है*

(६) *दरिद्रता मानवी मनोवृत्तियो को संतप्त रखती है*

"दरिद्रते ! तुम बड़ी निष्ठुर हो ? तुम तो मनुष्य से जितनी दूर रहो उतनी ही अच्छी। देवी दरिद्रते तुम जिस घर पर दया करती हो बस उसका तो सर्वनाश ही समझो। तुम जिस घर मे प्रसन्न होकर निवास करती हो उसके स्मरण ही से रोमाच हो आता है। अपने कृपापात्र को भोजन और वस्त्र के लिये कैसा दरदर फिराती हो उसके स्मरण से हृदय थर्राता है। तुम बेचारे निर्धन को कैसा पग-पग और पल-पल पर अपमानित करती हो ? कैसा पैसे-पैसे को तड़पाती हो ? इसे मैं तुम्हारी निष्ठुरता न कहूँ तो क्या कहूँ।

ओह निर्धनते ! तुम बड़ी कठोर हो, तुम चूड़ान्त विद्वानों को गली-गली मारे-मारे फिरवाती हो। तुम्हे उसके फूल से कोमल

सुख की नींद सोता है। उसे कोई चिन्ता नहीं। न चोर का न डाकू का भय। जहां निर्धनता अपमान और तिरस्कार देती है वहाँ कुछ अंश तक निश्चिन्तता भी प्रदान करती है। भी अध्यवसायी, स्वावलम्बी और धैर्यवान् प्रायः निर्धन व्यक्ति ही होते है। क्योंकि धनवान व्यक्ति अपने जीवन को नियमित नहीं बना सकते। यदि निर्धन व्यक्ति ने आत्म-विश्वास और संतोष को अपने हाथ से नहीं जाने दिया है तो उससे बढ़ कर कुबेर भी सुखी नही हो सकता। निर्धन व्यक्ति के शत्रुओं का तो नितान्त अभाव ही होता है। वह सबके साथ समता का व्यवहार कर, सबकी सहानुभूति हासिल कर सकता है, जो धनिकों को कदापि संभव नहीं।

निर्धनता वास्तव में इस फैशन के युग मे भयंकर बुरी मालूम होती है। आज हमारा दृष्टि कोण अधिक बनाव सिगार की तरफ झुक गया है। किन्तु सच्चा सुख और शान्ति तो सादगी और गरीबी ही मे है। मनुष्य की मनोवृत्तियां जितनी उत्तम निर्धनता मे रहती है वैसी धनी होने की दशा मे नहीं रहती। सम्पत्ति की दशा मे तो सदैव बुरी-बुरी वासनायें उसे घेर लेती है जिसमे निकलना मनुष्य को कठिन ही नहीं असम्भव हो जाता है। रहीम इस विषय मे कितना सुन्दर कहते है —

'रहिमन कहता पेट सो क्यो न भये तुम पीठ
रीते अनरीते करो भरे बिगारत दीठ ॥'

———

ई सुख की नींद सोता है। उसे कोई चिन्ता नहीं। न चोर का र न डाकू का भय। जहां निर्धनता अपमान और तिरस्कार रती है वहाँ कुछ अंश तक निश्चिन्तता भी प्रदान करती है। साहसी अध्यवसायी, स्वावलम्बी और धैर्यवान् प्रायः निर्धन व्यक्ति ही होते हैं। क्योंकि धनवान व्यक्ति अपने जीवन को नियमित नहीं बना सकते। यदि निर्धन व्यक्ति ने आत्म-विश्वास और संतोष को अपने हाथ से नहीं जाने दिया है तो उससे बढ़ कर कुबेर भी सुखी नहीं हो सकता। निर्धन व्यक्ति के शत्रुओं का तो नितान्त अभाव ही होता है। वह सबके साथ समता का व्यवहार कर, सबकी सहानुभूति हासिल कर सकता है, जो धनिकों को कदापि संभव नहीं।

निर्धनता वास्तव में इस फैशन के युग में भयंकर बुरी मालूम होती है। आज हमारा दृष्टि कोण अधिक बनाव सिंगार की तरफ झुक गया है। किन्तु सच्चा सुख और शान्ति तो सादगी और सरलता में है। मनुष्य की सदावृत्तियां जितनी उसमें निर्धनता में रहती हैं वैसी धनी होने की दशा में नहीं रहतीं। सम्पत्ति की दशा में तो सहस्र बुरी-बुरी वासनायें इसे घेर लेती हैं जिनसे निकलना मनुष्य के लिए कठिन ही नहीं असम्भव हो जाता है। रहीम इस विषय में कितना सुन्दर कहते हैं —

'रहिमन कहता पेट सा क्यो न भये तुम पीठ
रीते अनरीते करा भरे बिगारत दीठ।

— —

रहने ही मे आनन्द अनुभव करे किन्तु यह दुखदायिनी तो दरिद्रता ही है। इसकी लपेट मे पड़कर बड़े-बड़े अभिमानियो के मद चूर्ण हो गये है। बड़े-बड़े धीरजवालों धीरज के आसन हिल गये है। बड़े-बड़े प्रतिभाशाली पुरुषों की बुद्धि को इस दरिद्रताने चक्कर मे डाल दिया है और बड़े विक्रम-बलशालियो की नसें इस दरिद्रता ने ढीली करदी जब यह निर्धनता व्यक्ति पर अपना पूरा अधिकार जमा लेती तब पग-पग पर यह मनुष्य के मनोरथो को ममल-मसल नष्ट कर देती है। उसकी भावनाओं को दबा देती है। ओज और कान्ति को नष्ट कर देती है। दरिद्र के हृदय मे सुन्दर भावनायें उठती हैं किन्तु साधनहीन होने वहाँ की वहाँ ही विलीन हो जाती हैं। वह बेचारा करे भी क्या करे ? प्रत्येक कार्य करने के लिये धन अपेक्षित है। संसार मे कोई कार्य ऐसा नहीं जो बिना धन की सहायता के चल सके। आज तो सर्वत्र धन ही की तूती बोल रही है। निर्धन को कोई दमडी के भाव भी नहीं पूछता। एक लोकोक्ति है कि "जरदार मर्द नाहर घर रहे चाहे बाहर।"

अब तक हमने निर्धनता की कठिनता और धन का ही वैभव दरसाने की चेष्टा की, किन्तु अब देखना यह है कि क्या वास्तव मे निर्धनता इसी कोटि की है अथवा नहीं। ससार मे दुख और सुख मन की कल्पनायें है। हम सैकडो ऐसे धनियो को जानते हैं जो महा दुखी और चिन्ता ग्रसित हैं। उन्हे रात दिन चैन नहीं उन्हे उठते बैठते प्रत्येक समय धनका ही स्वप्न दिखलाई पड़ता है। कभी चोर आये, कभी डकैत आये जब देखो तब जान बला मे पडी है। जहा देखा तहाँ ही उसके दुश्मन बने बैठे है, मौका मिले तो जान ही खा दे। किन्तु निर्धन इन सारी आपत्तियो से सुरक्षित रहता है। वह दिनभर के परिश्रम से थककर रात को

रहने ही मे आनन्द अनुभव करे किन्तु यह दुखदायिनी दरिद्रता ही है। इसकी चपेट मे पड़कर बड़े-बड़े अभिमानियो के मद चूर्ण हो गये हैं। बड़े-बड़े धीरजवालों धीरज के आसन हिल गये हैं। बड़े-बड़े प्रतिभाशाली बुद्धि की बुद्धि को इस दरिद्रताने चक्कर मे डाल दिया है और विक्रम-बलशालियो की नसें इस दरिद्रता ने ढीली करदी जब यह निर्धनता व्यक्ति पर अपना पूरा अधिकार जमा ले तब पग-पग पर यह मनुष्य के मनोरथो को मसल-मसल नष्ट कर देती है। उसकी भावनाओं को दबा देती है। ओज और कान्ति को नष्ट कर देती है। दरिद्र व्यक्ति हृदय मे सुन्दर भावनाये उठती हैं किन्तु साधनहीन होने वहाँ की वहाँ ही विलीन हो जाती है। वह बेचारा करे भी क्या करे? प्रत्येक कार्य करने के लिये धन अपेक्षित है। संसार मे कोई कार्य ऐसा नहीं जो बिना धन की सहायता के चल सके। आज तो सर्वत्र धन ही की तूती बोल रही है। निर्धन को कोई दमड़ी के भाव भी नहीं पूछता। एक लोकोक्ति है कि—
"जरदार मर्द नाहर घर रहे चाहे बाहर।"

अब तक हमने निर्धनता को कठिनता और धन का ही वर्णन दरसाने की चेष्टा की, किन्तु अब देखना यह है कि क्या वास्तव मे निर्धनता इसी कोटि की है अथवा नहीं। ससार म दुख और सुख मन की कल्पनाये है। हम सैकड़ो ऐसे धनियो को जानते हैं जो महा दुखी और चिन्ता ग्रसित है। उन्हे रात दिन चैन नहीं, उन्हें उठते बैठते प्रत्येक समय धनका ही स्वप्न दिखलाई पड़ता है। कभी चोर आये, कभी डकैत आये जब देखो तब जान जोखिम मे पड़ी है। जहाँ देखा तहाँ ही उसके दुश्मन बने बैठे है, मौका मिले तो जान ही खोदें। किन्तु निर्धन इन सारी आपत्तियो से सुरक्षित रहता है। वह दिनभर के परिश्रम से थककर रात को

रहने ही में आनन्द अनुभव करे किन्तु यह दुखदायिनी की दरिद्रता ही है। इसकी चपेट में पड़कर बड़े-बड़े अभिमानियों के मद चूर्ण हो गये हैं। बड़े-बड़े नीरज धीरज के आसन हिल गये हैं। बड़े-बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति की बुद्धि को इस दरिद्रता ने चक्कर में डाल दिया है और विक्रम-बलशालियों की नसें इस दरिद्रता ने ढीली कर दी। जब यह निर्धनता व्यक्ति पर अपना पूरा अधिकार जमा लेती है तब पग-पग पर यह मनुष्य के मनोरथों को समूल-नष्ट कर देती है। उसकी भावनाओं को दबा देती है। उसके ओज और कान्ति को नष्ट कर देती है। दरिद्र व्यक्ति के हृदय में सुन्दर भावनायें उठती हैं किन्तु साधनहीन होने से वहाँ की वहीं ही विलीन हो जाती हैं। वह बेचारा करे भी क्या करे? प्रत्येक कार्य करने के लिये धन अपेक्षित है। संसार में कोई कार्य ऐसा नहीं जो बिना धन की सहायता के चल सके। आज तो सर्वत्र धन ही की तूती बोल रही है। निर्धन को कोई दमड़ी के भाव भी नहीं पूछता। एक लोकोक्ति है कि—
"जरदार मर्द नाहर घर रहे चाहे बाहर।"

अब तक हमने निर्धनता की कठिनता और धन की ही बड़ाई दरसाने की चेष्टा की, किन्तु अब देखना यह है कि क्या वास्तव में निर्धनता इसी कोटि की है अथवा नहीं। संसार में दुख और सुख मन की कल्पनायें हैं। हम सैकड़ों ऐसे धनियों को जानते हैं जो महा दुखी और चिन्ता ग्रसित हैं। उन्हें रात दिन चैन नहीं। उन्हें उठते बैठते प्रत्येक समय धनका ही स्वप्न दिखलाई पड़ता है। कभी चोर आये,कभी डकैत आये जब देखो तब जान जोखिम में पड़ी है। जहाँ देखो तहाँ ही उसके दुश्मन बने बैठे हैं, मौका मिले तो जान ही खोदें। किन्तु निर्धन इन सारी आपत्तियों से सुरक्षित रहता है। वह दिनभर के परिश्रम से थककर रात में

रहने ही में आनन्द अनुभव करे किन्तु यह दुखदायिनी
दरिद्रता ही है। इसकी चपेट में पड़कर बड़े-बड़े अभिमानियों के मद चूर्ण हो गये हैं। बड़े-बड़े धीरजवानों के धीरज के आसन हिल गये हैं। बड़े-बड़े प्रतिभाशालियों की बुद्धि को इस दरिद्रताने चक्कर में डाल दिया है और विक्रम-बलशालियों की नसें इस दरिद्रता ने ढीली करदी। जब यह निर्धनता व्यक्ति पर अपना पूरा अधिकार जमा लेती तब पग-पग पर यह मनुष्य के मनोरथों को मसल-मसल कर नष्ट कर देती है। उसकी भावनाओं को दबा देती है। उसके ओज और कान्ति को नष्ट कर देती है। दरिद्र व्यक्ति के हृदय में सुन्दर भावनायें उठती हैं किन्तु साधनहीन होने से वहाँ की वहाँ ही विलीन हो जाती हैं। वह बेचारा करे भी क्या करे? प्रत्येक कार्य करने के लिये धन अपेक्षित है। संसार में कोई कार्य ऐसा नहीं जो बिना धन की सहायता के चल सके। आज तो सर्वत्र धन ही की तूती बोल रही है। निर्धन को कोई दमड़ी के भाव भी नहीं पूछता। एक लोकोक्ति है कि
"जरदार मर्द नाहर घर रहे चाहे बाहर।"

अब तक हमने निर्धनता की कठिनता और धन का ही बखान करने की चेष्टा की, किन्तु अब देखना यह है कि क्या वास्तव में निर्धनता दुर्भाग्य की है अथवा नहीं। संसार में दुख और सुख मन की कल्पनायें हैं। हम सैकड़ों ऐसे धनियों को जानते जो सदा दुखी और चिन्ता ग्रसित हैं। उन्हें रात दिन चैन नहीं। उन्हें उठते बैठते प्रत्येक समय धनका ही स्वप्न दिखलाई पड़ता है। कभी चोर आये, कभी डकैत आये जब देखो तब जान जोखम में पड़ी है। जहाँ देखा तहाँ ही उसके दुश्मन बने बैठे हैं, मौका मिले तो जान ही खा डाले। किन्तु निर्धन इन सारी आपत्तियों से सुरक्षित रहता है। वह दिनभर के परिश्रम से थककर रात को

छात्र-जीवन

विचार तालिकायें:—

(१) *मानवी मनोवृत्तियाँ विद्यार्थी काल ही मे विकसित होती हैं*

(२) *समाज का आदर्श विद्यार्थी है। इन्हे सदैव कुसंग से बचना चाहिये*

(३) *विद्यार्थियो पर पूरा प्रभाव उसकी मित्र गोष्ठी का पड़ता है*

(४) *महापुरुषो मे सद्वृत्तियो का विकास छात्र जीवन ही में होता है*

(५) *विद्यार्थी आहार-विहार और कर्तव्य-कर्म मे पूरा सतर्क रहे*

(६) *विद्यार्थी विद्या, शक्ति और साहस के उपार्जन के साथ ही साथ सेवा, प्रेम और सहानुभूति मय जीवन व्यतीत करे*

(७) *मनुष्य का वास्तविक रूप सत्य, शील और सादगी में है, वृथा-आडम्बरो और बनाव सिगार मे नही*

मनुष्य जीवन का सर्वोत्तम समय विद्यार्थी जीवन है। विद्यार्थी जीवन कैसा सुखद और आल्हादकारी है उसका वर्णन अकथनीय है। विद्यार्थी जीवन मे, कैसी-कैसी अभिलाषाये और कैसी-कैसी महत्त्वाकाक्षायें होती है। यदि इन विद्यार्थियो के

करेगा। पतित जीवन अशान्ति, कलह और चिन्ताओं का बना रहता है।

विद्यार्थी-जीवन मे कुसंगति बड़े दुःखद परिणाम लाती है विद्यार्थियों को सदैव कुसंगति से बचना चाहिये। मनुष्य ... पर संगति का बड़ा शीघ्र प्रभाव पड़ता है उत्तम अथवा नि... गुणो का आविर्भाव मनुष्य के हृदय पर संगति से ही पड़ता है मनुष्य की कीमत उसकी मित्र गोष्टी ही से लगती है। यदि मनुष्य की मित्र-मंडली सद्गुणी और सचित्र है तो उन सद्गुण अवश्य साथी की प्रतिभा को चमका देंगे और यदि मित्र गोष्टी दुष्ट और चरित्रहीन है तो अवश्य साथी के जीवन को भ्रष्ट और दुराचारी बना देगी।

जो-जो महापुरुष तुम इस समय देखते हो, उन सब की सद्वृत्तियो का निर्माण इसी बाल्य-काल मे हुआ था। गोखले और दयानन्द, विवेकानन्द और रामतीर्थ मे, जवाहरलाल और कर्मचन्द गाँधी मे उत्तम गुणो का विकास विद्यार्थी जीवन ही में हुआ था। अत विद्यार्थियो को अपनी मित्र गोष्टी चुनने में पूरा ध्यान रखना चाहिये। यदि मित्र निर्वाचन मे थोड़ी सी भी आपकी भूल होगई तो बस भावी जीवन दुःखमय हो जायगा।

विद्यार्थी को चाहिये कि वह समय का सदुपयोग करे, सत्यानुरागी और सचरित्र बने, आहार-विहार मे पूर्ण सतर्क रहे, सदैव सादा और सात्विकी भोजन करे। कर्तव्य-कर्म को बडी तत्परता से सम्पन्न करे। उपरोक्त गुण ऐसे है जिन पर चलने से विद्यार्थी का जीवन बहुत ऊँचा बनता है। बड़े बनने के अभिलाषी विद्यार्थियो को परिश्रमी, अध्यवसायी, सहिष्णु और स्वावलंबी बनना चाहिये। विद्यार्थियो मे सब से बड़ा गुण

साँच बरोबर तप नहीं झूँठ बरोबर पाप

विचार तालिकाएँ:—

(१) जैसा देखा व सुना हो आवश्यकता पडने पर वै
कह देना सत्य है

(२) ससार के अत्याचार और दुराचार केवल सत्य
के अभाव मे होते है

(४) सत्य समाज मे सुख, शान्ति का साम्राज्य लाता

(३) सत्यवादी घोर सकट सामने आने पर भी अप
पीछे नही रखते

(५) साहसी व्यक्ति ही सत्य का पालन करने मे
होते है

(६) हमे सदैव सत्य व्यवहार रखना चाहिये।

"सत्य ब्रूयात प्रिय ब्रूयात,
मा ब्रूयात सत्यम् प्रिय।"

"सत्य बोलो, प्रिय बोलो किन्तु अप्रिय सत्य भी न कहो
जिस बात को जैसा देखा व सुना हो, आवश्यकता पडने
ठीक वैसा ही व्यक्त कर देना सत्य कहलाता है और इ
विपरीत कहना असत्य कहलाता है। संसार केवल सत्य ही
आधार पर स्थित है। शुद्ध सत्य ही परमेश्वर है। सत्य

जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना

विचार तालिकायें —

(१) समाज की सद्भावनायें एकता उत्पन्न करती हैं
(२) प्रकृति के प्रत्येक कार्य में एकता है
(३) एकता के सूत्र में बँधी जातियाँ समार में सिरमौर हैं
(४) राष्ट्रों और समाजों को ऊँचा उठाने के लिये एक बड़ी आवश्यकता है
(५) एकता समाज में ममता, प्रेम और सहानुभूति के उदय करती है
(६) भगवान हम सद्बुद्धि दें कि हम एकता के सूत्र में जावे

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, वह अकेला कभी नहीं सकता। मनुष्य को सदैव एक दूसरे की सहायता की आवश्य रहती है। लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये आवश्यक कि वह लोगों से अपना हेलमेल बढ़ाये। हेलमेल बढ़ाने लिये उसे आवश्यक है कि वह ईर्षा, द्वेष आदि दुर्गुणों त्यागने की भरसक चेष्टा करे तब वह समाज में सर्व-प्रियता प्र कर सकेगा। मनुष्यों के आपस में मिलने जुलने के कारण प्रा संघर्ष हो जाया करते हैं। और संघर्ष के कारण प्राय: मन मालिन्य उत्पन्न हो जाया करते हैं। इन मनोमालिन्यों को मिटा ही समाज का अधिक हितकर सिद्ध होता है। समाज में ए

पर वड़े-वड़े राष्ट्रोंका मुकाविला कर रहे हैं। मुट्ठीभर जापान
संसार की वड़ी से वड़ी शक्तियों का मुकाविला करने को
वैठा है। जरा-सा स्विटजरलैण्ड अपने अस्तित्व को
राष्ट्रों के समक्ष में स्थिर किये हुये है। ब्रिटिश जाति आज
ही के वल पर महा शक्तिशाली जाति मानी जाती है। और
और जाति एकता के विना संसार में जीवित नहीं रह
भारत का साम्राज्य आपसी कलह और मतभेद ने खोया।
पाण्डव वंश का नाश इसी आपसी कलह ने किया।
और जयचन्द की आपसी कलह ने मुसलमानों का देश
आह्वाहन किया। आपसी कलह के कारण सुदृढ़ मर
साम्राज्य नष्ट भ्रष्ट हो गया। आज भी भारत में
मुसलिम विद्वेष भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति मे रोड़ा साबित
रहा है।

राष्ट्र और जातियों को उत्थित करने के लिये एकता की
आवश्यकता है। व्यक्तिगत स्वार्थ राष्ट्र निर्माण कार्य में
घातक सिद्ध होते है। जब तक समाजों मे से व्यक्तिगत स्वार्थ
और जातिगत भेद भावों को निर्मूल न किया जायगा तब तक
समाज मे प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न नहीं होती। जब तक प्रेम
और सहानुभूति उत्पन्न नहीं होती, तब तक एकता की भावनायें
भी समाज मे उत्पन्न नहीं होती। तथा जब तक एकता की
भावनायें समाज में नहीं उत्पन्न होती तब तक समाज मे उच्छृ-
ङ्खलता, उद्दण्डता और स्वेच्छाचारिता ही का राज्य वना रहता
है। जब समाज मे एकता की भावनाये जग जाती है तब उसमें
दूसरों का सामना करने की क्षमता आती है। छोटी-छोटी
चिउँटियाँ एकता के वल पर वड़े हाथी को परास्त करने मे समर्थ
होती है। परस्पर मिली हुई बेलें, परस्पर मिले हुए पौधे और
परस्पर मिले हुये वृक्ष कितने सुन्दर और मनोहारी मालूम होते

बिजली के दमदमाते कमरों के बजाय खुले सुरम्य उपवनों में स्वस्थ्य वायु का आनन्द लूटो। अखाड़े की मिट्टी से अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। ऐसे खेलों का प्रबन्ध करो जिससे शरीर में बल आवे, सुकुमारता दूर हो और शारीरिक परिश्रम करने की झिझक छूटे। तब ही तुम्हारा और भारत का कल्याण सम्भव है अन्यथा नहीं।

छत्रपति–शिवाजी

सार तालिकाएं:—

(१) जन्म वंश और पूर्वज
(२) शिक्षा-दीक्षा
(३) कार्य-क्षेत्र में आना
(४) अफ़ज़ल खाँ और शायस्ता खाँ से मुक़ाबिला
(५) मुग़लों से छेड़-छाड़
(६) राज्याभिषेक, चरित्र और मृत्यु

हिन्दू-धर्म-रक्षक वीर शिरोमणि शिवाजी का जन्म सन् १६२७ ई० में शिवनेर के किले में हुआ। सिसोदिया वंश के [illegible] शाहजी आपके पिता थे. यादवराय की विदुषी कन्या जीजीबाई से शाहजी का पाणि-ग्रहण संस्कार हुआ था। जीजीबाई के ही पवित्र गर्भ से हमारे चरित नायक का जन्म हुआ। आपके जन्म के अवसर पर आपके पूज्य पिता और नाना विपक्ष युद्ध-क्षेत्र में लड़ रहे थे अतः दोनों का मालिन्य बढ़ गया। और शाहजी ने जीजीबाई के होते हुये दूसरा विवाह कर लिया। शिवाजी और जीजीबाई अपने नाना के [illegible] हो गये। कुछ काल पश्चात शाहजी और यादवराव में सन्धि हो गई और जीजीबाई शिवाजी के साथ शाहजी के घर आ गई। शिवाजी के जन्म के समय भारत मुसलमानों के अत्याचार से त्राहि त्राहि कर रहा था।

शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा का आरम्भ जीजीबाई की
रेख मे आरम्भ हुआ। माताजी ने शिवाजी को हिन्दू धर्म
शिक्षा घुटी के साथ पिला दी। दादा कोणदेव आपके शि
गुरु नियत हुये। गुरूजी ने अन्यान्य शिक्षाओं के साथ
शिवाजी को हिन्दुत्व के सांचे मे ढालने की विशेष चेष्टा की
माता और गुरू के मुख से वहादुर हिन्दुओ की कथाएं सुन
कर शिवाजी का हृदय अदम्य उत्साह से भर गया। उस
मे मरहठा जाति मे विद्या के प्रति इतना प्रेम न था। गु
कोणदेव कार्य वाहुल्य के कारण और शिवाजी के अरुचि
कारण पर्याप्त शिक्षा न दे सके, किन्तु व्यवहारिक शिक्षाओं
उन्हे पारगत पडित वना दिया। नित्य सहवास और शिवा
की बुद्धि-चातुर्य ने मराठा जाति का सम्मान पा लिया।
हुये सूर्य के समान शिवाजी का शौर्य और साहस बढ़ता ग
और उसने आशक्तित मराठा जाति मे सगठन की रूह फूँक दी।

शिवाजी ने वालपन ही से वीरो की कहानियाँ सुन
रक्खी थी। उसके हृदय मे प्रवल पराक्रमी योद्धा बनने की
अभिलाषा थी। उस समय समर्थ गुरू रामदासजी के हृदय मे
राष्ट्रीय-भाव तरगे मार रहे थे। रामदास का अपना लक्ष्य पूरा
कराने के लिये शिवाजी जैसा पटु शिष्य मिल गया। उनके
धार्मिक और राष्ट्रीय विचारो का शिवाजी के ऊपर वड़ा प्रभाव
पडा। इधर स्वय शिवाजी महत्वाकांक्षी, दूसरे गुरू रामदास
के उपदेशों के असर ने शिवाजी को कार्य-क्षेत्र मे उतरने के लिये
विवश कर दिया। शिवाजी के हृदय मे स्वतत्रता की लहरें
तरगे मारने लगी। उसने मृत प्राय मराठा जाति मे जीवन
फूँका और उन्हे एकता के सूत्र मे भली भाति वाधकर, इके दुके
हमले आरम्भ कर दिये। १६ वर्ष की आयु मे शिवाजी ने क
किले अपने अधिकार मे कर लिये। वीजापुर नरेश शिवाजी

...की प्रकट की और शिवाजी को अपने साम्राज्य मे एक ...पद देने का वचन दिया। राजा जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी सन् १६६६ ई० मे आगरे आये, किन्तु ...जेब ने उनको ऊँचा पद देने के बजाय उल्टा शिवाजी का ...न किया, जिससे शिवाजी के क्रोध का वारापार न रहा। ...जेब भी उनके क्रोध को समझ गया, उसने उसके शिविर ...हरा बैठा दिया। शिवाजी भी कुछ कम चतुर न थे। ...न्हें कुं० रामसिंह द्वारा पता चला कि सम्राट उनको जान ...रवाने की चिन्ता मे है तो शिवाजी ने बीमारी का बहाना ...लिया। कुछ दिनों बाद बीमारी से अच्छा होने का समाचार ...शित किया गया और उसकी खुशी मे ब्राह्मणो और गरीबों ...शिवाजी के हाथ से छूकर मिठाइयाँ टोकरों मे भर भर कर ...रने मे बाहर बटने को जाने लगीं। एक दिन अवसर पाकर ...ठाई के टोकरो मे छिपकर शिवाजी और उनका पुत्र शम्भाजी ...हले मे बाहर हो गये। रातोरात आगरे से चलकर मथुरा ...हुने मथुरा पहुच कर सर मुडाया और साधुओं का भेष ...ना लिया। साधुओ के वेश मे प्रयाग, काशी और जगन्नाथ-...ते होते हुये ९ महीने मे शिवाजी पूना पहुचे।

दक्खिन पहुच कर फिर कभी शिवाजी ने औरंगजेब का विश्वास न किया। जयसिंह को जो किले और प्रान्त दे दिये थे वे पुन अपने अधिकार मे कर लिये। अब दक्खिन मे शिवाजी एक शक्ति-शाली राजा हो गया और उनका सामना करने को किसी की सामर्थ्य न रही। सन १६७४ ई० मे रायगढ मराठा साम्राज्य की राजधानी बनाया गया। और बडी धूम धाम और समारोह के साथ शिवाजी का राज्यभिषेक हुआ। समस्त दक्खिन मे भगवा ध्वजा फहराने लगी। दक्खिन के तमाम नवाब और राजे शिवाजी को कर देने लगे। शिवाजी को

बाल्यकाल की समस्त अभिलाषायें पूर्ण हुईं। सत्य है जो आप मदद करता है उसकी भगवान मदद करते हैं।

महाराज शिवाजी बड़े बुद्धिमान, सच्चरित्र और प्रकृति के पुरुष थे। राज्य प्रबन्ध करने में तो उनमें [illegible] प्रतिभा विद्यमान थी। वे विद्वानों का बड़ा आदर करते थे। और ब्राह्मणों के प्रति उनके हृदय में बड़ी श्रद्धा थी। दुखियों पर बड़ी दया करते थे, स्त्रियों का बड़ा आदर करते [illegible] उन्होंने किसी विदेशी जाति के साथ अमानुषिक बर्ताव [illegible] किया। उन्होंने किसी मसजिद को नहीं ढहवाया। मुसल[illegible] स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा की। कुरान शरीफ का उन्होंने [illegible] आदर किया। शिवाजी की प्रशंसा में एक मुसलमान [illegible] लेखक खाफी खां ने लिखा है कि "शिवाजी की आज्ञा थी [illegible] मुसलमान स्त्रियों, और कुरान शरीफ का [illegible] किया जाये।"

महाराज को सिंहासन पर बैठे अभी पूरे ६ वर्ष भी न [illegible] पाये थे, कि सहसा उनके पैर में पीड़ा उठ खड़ी हुई। [illegible] उपचार किये गये किन्तु मृत्यु उस रोग के बहाने आ ही [illegible] और [illegible] वर्ष की अल्पायु में सन १६८० ई० में आप पर[illegible] गमन कर गये।

— —

गोपाल कृष्ण गोखले

ार नालिकायें —

(१) जन्म, वंश और पूर्वज
(२) शिक्षा और विद्यार्थी जीवन
(३) कार्य-क्षेत्र में प्रवेश
(४) सार्व-जनिक सेवा
(५) राज-भक्ति और विलायत यात्रा

गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म १८६७ ई० में कोल्हापुर के ...स्ट कागल गाँव में हुआ। यह महाशय फिर महात्मा गोखले ...नाम से विख्यात हुए। आप ब्राह्मण जाति के पुत्र रत्न थे। ...नके पूर्वज साधारण कोटि के कर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे। पिता की ...स्थिति और भी खराब थी किन्तु इनके माता-पिता बड़े सच्चरित्र ...कर्मनिष्ठ और सतार्पा ब्राह्मण थे। माता की मेधावी प्रतिभा ...बड़ी विलक्षण थी। ब्राह्मण वंश की इस प्रखर प्रतिभा में यह बीज छुपा हुआ था, जो महात्मा गोखले के रूप में अङ्कुरित हुआ।

महात्मा गोपाल कृष्ण गोखले बालकपन ही से बड़े प्रखर बुद्धि थे। इनकी स्मरण शक्ति असाधारण थी। शैशव-काल ही में इनमें प्रेम, सहानुभूति और देशानुराग के भाव मौजूद थे। जिसने इन्हें ससार में बडा आदमी बनाया। आपकी प्रारम्भिक

शिक्षा घर पर ही हुई। १८ वर्ष की अवस्था में
एलफिन्स्टन कालेज बम्बई से बी० ए० पास किया। गो
माता-पिता चाहते थे कि हमारा गोपाल बी० ए० पास
बहुत सा रुपया कमाय, जिससे हमारी दरिद्रता दूर हो
गोपाल के हृदय में तो कालेज ही में देश प्रेम की आग
रही थी। गोपाल के घर की दरिद्रता की अपेक्षा देश
दरिद्रता अधिक अखरी, और वह इसी कार्य में बड़ी लग
साथ जुट गये। आपका सर्व प्रथम कार्य दक्षिण-शिक्षा
में सम्मलित होकर शिक्षा की अभिवृद्धि करना था। ह
चरित नायक के हृदय में देश को बन्धन से छुड़ाने की का
उत्पन्न हो रही थी। उनका व्यथित चित्त छटपटाता था कि
कब वह देश की स्वतन्त्रता में अपना हाथ बटावें ? आप
ऐसे पथ-प्रदर्शक गुरु की खोज में थे जो उन्हें इस मार्ग में
मार्ग दिखाये। उनकी यह उत्कट अभिलाषा पूरी हुई। स
महाराष्ट्र शिरोमणि महादेव गोविन्द रानाडे से घनिष्ठता
और उनकी देखरेख और सम्मति में सारा कार्य चलने ल
रानाडे द्वारा ही आप ने राजनीति और धर्मनीति का पाठ प

महात्मा गोपाल कृष्ण का जीवन नाटक रानाडे के सत्सं
एक दम बदल गया। आप राजनीति और लोकसेवा की
शिक्षा साथ ही साथ पा रहे थे। भोजन की समस्या ७५) मासि
देकर फर्गुसन कालेज-बम्बई ने हल करदी थी। आपकी सेवा
इतनी उच्च-कोटि की थीं कि कालेज के अधिकारियों ने उन
प्रभावान्वित होकर आपको कालेज का प्रिन्सपल बना दिया
आप पढाने का काम भी करते थे और कालेज का चन्दा करने
भी जाते। एक बार आपने माँग माँग कर २ लाख रुपया का
चन्दा कालेज के लिये किया। निस्सन्देह राष्ट्र निर्माण का
ऐसे ही महापुरुष वहन करते है।

सन १८८७ ई० में गोपाल कृष्ण गोखले एक मराठी अखबार के सम्पादक नियत हुये। यहीं से आपका सार्वजनिक जीवन आरम्भ होता है। आपने इस पत्र का सम्पादन ऐसी योग्यता से किया कि जनता और गवर्मेन्ट दोनों ही आपसे बड़े सन्तुष्ट हुये परन्तु राष्ट्र सेवी व्यक्ति की नीति सदैव परिवर्तनशील रहती है। वे धीरे-धीरे इस सम्पादन में सरकार की भूलों की इस तरह तगड़ी आलोचना कर गये कि अधिक काल तक सम्पादन कार्य करना असंभव हो गया। अपने सम्पादक पद से इस्तीफा दे दिया और डेक्कन सभा के ऑनरेरी सेक्रेटरी हो गये। कुछ साल तक आपने सुधारक पत्र का भी सम्पादन किया। २८ वर्ष की अवस्था में आपने प्रान्तीय कौंसिल में एक ऐसा सारगर्भित और ओजस्वी भाषण दिया कि लोग आश्चर्य चकित हो गये। आपके इस व्याख्यान को सुनकर मुधोलकर महाशय के मुँह से सहसा निकला था कि "यह व्यक्ति एक दिन राष्ट्रीय-महासभा का प्रेसीडेन्ट होगा।" उनकी यह धारणा सत्य उतरी और आप सन १९०५ ई० में राष्ट्रीय-महासभा के प्रेसीडेन्ट बनाये गये।

मिस्टर गोखले के समय में नेशनल कॉंग्रेस की नीति केवल अनुनय विनय द्वारा ब्रिटिश वालों से भारतीयों का कुछ अधिकार मांगना मात्र था। इस मांगनेवाली नीति में स्वतन्त्रता, स्पष्टवादिता और निर्भयता को कोई स्थान न था। महात्मा गोखले ने वेलबी कमीशन के सामने भारत की आर्थिक स्थिति को ऐसे शब्दों में रक्खा कि कमेटी के मेम्बर दंग रह गये। विलायत में गोखले की बुद्धिमत्ता की धाक लोगों पर बैठ गई। इसी वर्ष गवर्न्मेंन्ट और बम्बई की जनता में कुछ अनबन हो गई, विलायत के स्थानीय पेपरस में गोखले ने बम्बई गवर्मेन्ट की

काफी आलोचना की जिसमें [illegible] गोखले ने स्पष्ट [illegible]
बम्बई गवर्मेन्ट की [illegible] [illegible] सिपाहियों के नाम आने के [illegible]
जिन्होंने [illegible] में उनके सूचना दाताओं के नाम आने की [illegible]
चेष्टा की किन्तु गोखले ने किसी का नाम बताकर न दिया
वरन गवर्मेन्ट की सारी बुराई अपने सिर मोल लेली।

गोखले की योग्यता को देखकर बम्बई गवर्मेंट ने उन्हें
लेजिस्लेटिव कौंसिल का मेम्बर बनाया। उस पद पर इन्होंने
ऐसी योग्यता से काम किया कि उनका सम्मान गवर्मेंट तथा
जनता दोनों की दृष्टि में बढ़ गया। सन् १९०१ ई० में आप
वायसराय की कार्य-कारिणी-कौंसिल के सदस्य चुने गये।
गवर्मेन्ट ऑफ इंडिया ने भी आपके संशोधनों को बड़े सम्मान
के साथ माना। सन १९१२ ई० में आपने अनिवार्य शिक्षा के
प्रोग्राम को पहले पहल गवर्मेन्ट के सामने रक्खा। सन १९१४ ई०
में आपको गवर्मेन्ट की तरफ से के० सी० एस० आई० का
खिताब मिला किन्तु उन्होंने उसे धन्यवाद सहित अस्वीकार कर
दिया। एक बार आपने इसी भांति सक्रेटरी ऑफ स्टेट की
कौंसिल की मेम्बरी को भी अस्वीकार कर दिया था। आपने
१२ जून सन् १९०५ ई० में सर्वेन्ट-ऑफ इंडिया सोसायटी की
बुनियाद डाली। तभी से वह सोसायटी भारत की सेवा बड़े
सम्मान के साथ कर रही है।

सन् १९१५ ई० की फरवरी महीने की १९ तारीख थी।
भगवान भास्कर अपनी मनोहर छटा दिखा रहे थे। सहसा
दोपहर के समय आपकी तबीयत कुछ खराब हो गई। शाम को
नित्य की भांति थोड़े टहलने भी गये। रात को दस बजे सहायक
समिति के सदस्यों तथा सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसायटी के
मेम्बरों से राजनीतिक बात करते-करते आप रुक गये और सदैव

स्वामी दयानन्द

विचार तालिकायें —

(१) दयानंद से पहिले भारत की स्थिति

(२) जन्म और शिक्षा

(३) दयानद की बोध-रात्रि

(४) दयानंद का गृहत्याग

(५) शिष्यत्व और प्रचार-कार्य

श्री कृष्ण ने गीता मे कहा है—"जब-जब जगत मे धर्म का ह्रास होता है पाप और अनाचार बढ़ जाते हैं, तब तब धर्म की व्यवस्था ठीक करने के लिये मै जन्म लेता हूँ।" ठीक ऐसी ही अवस्था स्वामीजी के जन्म से पहले भारत देश की थी। लोग धर्म के वास्तविक रूप को भूल कर बाहरी आडम्बरो मे फँस गये थे, सर्वत्र अन्ध परम्परा का साम्राज्य स्थापित हो गया था। वर्णाश्रम धर्म भूला जा चुका था। कुरीतियाँ जनता मे प्रवेश करती जाती थीं। धर्म-भीरु हिन्दू भय और लालच से मुसलमान और ईसाई बनते चले जा रहे थे। ऐसे ही समय मे स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव ने मृत-प्राय हिन्दू जाति मे जीवन फूँका। अन्ध परम्परा और कुरीतियो का तो जड से उन्मूलन ही कर दिया, ससार के सामने वैदिक धर्म का वह परिष्कृत रूप रक्खा जिसे देख ससार की धर्म-प्रचारक जातियाँ चकाचौंध होगई, और उनका धर्म प्रचार कार्य एक रूप से बिलकुल बैठ ही सा गया।

स्वामीजी का जन्म का नाम मूलशंकर था। सन् १८२४ ई० में टंकारा (गुजरात) नामक ग्राम में आपने जन्म लिया था। आप ब्राह्मण जाति के एक जगमगाते सितारे थे। आपके माता पिता शैवोपासक वैष्णव थे। पं० अम्बाशंकर औदीच्य ने ब्राह्मणों की परम्परा के अनुसार ५ वर्ष की अवस्था से मूलशंकर का यजुर्वेद और शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ कराया। पं० मूलशंकर बड़े मेधावी थे अतः १२ वर्ष की अवस्था में आपको संस्कृत का बड़ा अच्छा ज्ञान हो गया। अमरकोष भी आपका कण्ठ ही हो गया।

पं० अम्बाशंकर बड़े धर्मनिष्ठ शैव थे। शिवरात्री के दिन आपके पिता जी ने व्रत रक्खा, आपने भी पिता की देखादेखी व्रत रक्खा। अपने पिता की भाँति आप भी दिन भर शंकर जी की पूजा पाठ में लगे रहे। रात्रि को जागरण हुआ, रात को पं० अम्बाशंकर और अन्य भक्त लोग तो सो गये, किन्तु मूल शंकर को नींद नहीं आई। मूलशङ्कर ने देखा कि एक छोटी चुहिया बारम्बार उछल-उछल कर शिवजी पर चढ़ाये प्रसाद का भोग कर रही है। किन्तु शिवलिंग तनिक भी टस से मस नहीं होता, इस दृश्य से ही उनके मन में विचारों की प्रबल आँधी उठ खड़ी हुई। उन्हें यहाँ अनुभव हुआ कि शिवलिंग में कोई देवत्व की प्रक्रिया दृष्टिगोचर नहीं होती। क्या सर्व-शक्तिमान शंकरजी छोटी चुहिया भगाने की सामर्थ्य नहीं रखते? इस घटना ने उनके ज्ञान-चक्षु खोल दिये। अखण्ड दीपकों के प्रकाश में प्रकाशित शिवलिंग में उन्हें अन्धकार की रेखा दीख पड़ी, जिस अन्धकार का आलोक सारी आर्य जाति में दिखलाई पड़ा। मूलशंकर का दयालु हृदय द्रवित हो गया और आर्य जाति के इस घोर अन्धकार को मिटाने का उन्होंने दृढ़ संकल्प किया। वह तत्क्षण उस मोह निद्रा को भंग कर वहाँ से चल पड़े।

प्रकाश की खोज में उसने भारत की खाक छान डाली, किन्तु उसे वास्तविक प्रकाश का स्रोत मथुरा में दृष्टिगोचर हुआ।

मूलशंकर के हृदय में वैराग्य के भाव तो चचा के देहावसान पर ही जागृत हो गये थे, किन्तु इस शिवरात्री वाली घटना ने उनके मस्तिष्क में एक विचित्र क्रान्ति उत्पन्न कर दी। उनके हृदय में अनेक विकल्प उठते, किन्तु उनका कोई समाधान करने वाला न था। दिनों दिन मूलशंकर के हृदय में वैराग्य की प्रवृत्ति जागृत होती जाती थी। इस प्रवल प्रवृति को रोकने के लिये पं० अम्बाशंकर ने इनके विवाह का आयोजन किया। इस समाचार को सुनते ही आप घर से भाग छूटे किन्तु पिता के खोजने पर आप मिल गये और घर वापिस आ गये। किन्तु पिता उनके मस्तिष्क पर कोई प्रभाव न डाल सके, अतः उपयुक्त समय पाकर फिर घर से चल पड़े और फिर कभी घर वापस नहीं हुये। पुनीत नर्मदा के तट पर आपने स्वामी परमानन्द से सन्यास ग्रहण किया अब आप दयानन्द सरस्वती हो गये।

सन्यास लेने पर भी आपकी आकाक्षायें अतृप्त बनी रहीं, और वे ऐसे सद्गुरु की खोज में चल पड़े जो उनकी समस्त शंकाओं को निवारण कर सके। सन्यास लेने के पश्चात भी आपका पठन पाठन जारी रहा। प्रकाण्ड पण्डितों से उन्होंने योग शास्त्र का अध्ययन किया। हठ योगियों से हठ योग भी सीखा किन्तु किसी भाँति भी उन्हें शान्ति न मिली। दयानन्द भूलते भटकते मथुरा आये। मथुरा में प्रज्ञा-चक्षु स्वामी विरजानन्द जी महाराज से सहसा आपका परिचय हो गया। परिव्राजकाचार्य विरजानन्द के अनुभव और विचारों ने दयानन्द को प्रभावान्वित कर दिया। स्वामी जी की शकायें एक-एक करके स्वामी विरजानन्द जी ने समाधान कर दीं। स्वामी दयानन्द की अतृप्त-आकाक्षा पूर्ण हो

गई और आपने स्वामी विरजानन्द जी महाराज को अपना गुरु बना लिया। स्वामी विरजानन्द के यद्यपि भौतिक नेत्र जाते रहे थे किन्तु उनके हृदय के नेत्र खुले हुये थे। उन्होंने अपनी प्रबल युक्तियों से दयानन्द की समस्त तर्कनाओं को शान्त कर दिया। स्वामी जी का सारा सन्देह जाता रहा। तत्पश्चात् स्वामी दयानन्द अपनी दृढ़ धारणा के अनुसार संसार में आर्यत्व की ध्वजा फहराने के निमित्त गुरु से आशिष आज्ञा लेकर चल पड़े।

गुरु से दीक्षा लेने के पश्चात वैदिक धर्म के प्रचारार्थ उनका पहला व्याख्यान "पाखण्ड खण्डन" पर कुम्भ के मेले में हुआ। जिस व्याख्यान ने समस्त हिन्दू जाति के अन्दर खलबली मचा दी। इसके पीछे आपने समस्त भारत का एक तूफानी दौरा लगाया। स्थान-स्थान पर कुरीति निवारण, विद्या-प्रचार और वेद वाद पर अनेक मार्मिक व्याख्यान हुये। सब जगह आपने अपनी युक्तियों से जनता को अपने सिद्धान्तों से सहमत कराया, काशी के बड़े-बड़े प्रकाण्ड पंडितों से आपका शास्त्रार्थ हुआ, सब आपकी प्रबल युक्तियों के सामने कान टेक गये। पहले पहल आपने बम्बई में आर्य-समाज की स्थापना की।

इस भाँति आपने सर्वत्र भारत में धर्म का प्रचार किया और स्थान-स्थान पर आर्य समाजों की स्थापना की।

ब्रिटिश इण्डिया में प्रचार करने के पश्चात् स्वामी जी ने अपनी बागडोर राजपूताने की ओर उठाई। उस काल में राजपूताना अनाचार और व्यभिचार का अड्डा बना हुआ था। लोगों ने स्वामी जी को राजपूताना जाने से इन्कार भी किया, किन्तु उन्होंने किसी की चिन्ता न की और सीधे जोधपुर पहुँचे। जोधपुर दरबार को वेश्या-गमन में रत देखकर आपने वेश्याओं के विरोध ही में अपना प्रचार किया। वेश्यायें आपके व्याख्यानों से

गोसाईं-तुलसी

विचार तालिकायें,—

(१) जन्म, वंश और प्रसंग

(२) गृह-त्याग और शिक्षा

(३) गार्हस्थ्य-जीवन और प्रेम

(४) वैराग्य, भ्रमण और काव्य रचना

(५) मृत्यु और सर्व प्रियता

बालक राम बोला का जन्म राजापुर ग्राम जिला बाँदा में सम्वत् १५८६ में होना माना जाता है। यही बालक बाद में तुलसीदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। आपकी माता का शरीरान्त आपके जन्म के ही साथ हो गया था। आपका जब जन्म हुआ तब आपके दांत जमे हुये थे और आपने कुछ पुरुष जैसे शब्द कहे जिनको लोगों ने अनिष्ट समझा। बालक को घर रखना सर्वनाश का हेतु समझ कर राम बोला को घर से जन्म ही से बहिष्कृत कर दिया। इनकी सहृदया मौसी ने ५ वर्ष पर्यन्त आपका पालन किया असौभाग्य से मौसी का भी शरीरान्त हो गया। अब राम बोला बिल्कुल अनाथ और विवश होकर सोरों में बाबा नरहरी दास के आश्रम पर रहने लगा। बाबा नरहरिदास ने पिता तुल्य आपका लालन पालन किया।

शिक्षा समाप्त होने पर आप अपने पिता के घर राजापुर वापिस पहुँचे। वहाँ इनका कोई आत्मीय शेष न रहा था, मकान भी टूट फूट खंडहर हो गया था। आपने बड़े श्रम से अपनी आजीविका चलाई और अपना मकान बनवाया। घर आदि सब ठीक हो जाने पर और ब्राह्मणोचित कार्य्य करने के कारण दीनबंधु पाठक ने अपनी पुत्री रत्नावली का पाणी-ग्रहण संस्कार तुलसीदास के साथ कर दिया। थोड़े दिनों बाद रत्नावली का देहावसान हो गया, अत. तुलसीदास का दूसरा विवाह कंचनपुर निवासी लक्ष्मणदास की कन्या बुद्धिमती से हो गया बुद्धिमती बड़ी बुद्धिमान और परम रूपवती स्त्री थी। तुलसी का भोला मन उसके प्रेम-पाश में बंध गया। प्रेमी हृदय बड़े कोमल होते हैं। बुद्धिमती कार्यवश कुछ काल के लिये कंचनपुर चली गई। तुलसी उसके अल्प कालीन विरह को न सह सके। प्रेमोन्माद के वशीभूत होकर तुलसीदास रातों रात कंचनपुर पहुँचे। घार अंधेरी रात थी, चारों तरफ नदी नाले उमड़ रहे थे। वर्षा अपना भयंकर रूप दिखा रही थी। बुद्धिमती ने जब तुलसी का ऐसा प्रेम व्यग्रता देखी तो सहसा उसके मुँह से यह निकल पड़ा।

"अस्थि चर्म मय देह मम, तामे ऐसी प्रीति।
तैसी जो श्री राम में, होत न तो भव भीति॥"

इस वाक्य ने तुलसी के जीवन-नाटक का पर्दा पलट दिया। आपको संसार का मिथ्या मोह प्रत्यक्ष भासने लगा। आपका बुद्धिमती के प्रति प्रगाढ़ स्नेह भगवत चरणों में परिवर्तित हो गया। लोक प्रेम का स्थान ईश्वर प्रेम ने ले लिया। आपके ज्ञान-चक्षु खुल गये। सब वस्तुओं में उन्हें भगवान का ही भास होने लगा। समस्त भूमंडल उन्हें राममय दिखलाई पड़ने लगा।

की दृष्टि मे आपका स्थान बहुत ऊँचा है। कवि राष्ट्र का होता है। वही राष्ट्र मे सजीवता लाता है। तुलसी ने लेकर मृत प्रायः हिन्दू जाति मे जीवन फूंका। भक्ति और की सरितायें बहाईं। हिन्दी और हिन्दू जाति का बढ़ाया। तुलसीदास का भारत जब तक ऋणी रहेगा जब संसार कायम है।

ईश्वरचन्द विद्यासागर

मुख्य बातें:—

(१) जन्म, वंश और प्रवेश

(२) विद्याध्ययन

(३) प्रचार कार्य

(४) स्वभाव और सार्वजनिक कार्य

(५) मृत्यु

पंडित ईश्वरचन्द विद्यासागर का जन्म २६ दिसम्बर सन् १८२० ई० में वीरसिंह पुर नामक गाँव में मेदनीपुर प्रान्त में हुआ था। आपके पिता आठ रुपया मासिक पाने वाले एक छोटे अध्यापक थे। आपकी परम विदुषी माताजी का नाम भगवती देवी था। बालक ईश्वरचंद का विद्यारम्भ संस्कार पाँच वर्ष की अवस्था में गाँव ही की पाठशाला में हुआ। गाँव की पढ़ाई समाप्त कर आप कलकत्ते के संस्कृत कालेज में भर्ती हो गये। अंग्रेजी और संस्कृत की शिक्षा दोनों साथ साथ चली। आप लिखने पढ़ने में इतने चतुर थे कि आप की बुद्धि-चातुर्य देख कालेज के प्रिन्सपल ने आपको 'विद्या-सागर' की पदवी प्रदान की। आपने अपने जीवन में जितनी परीक्षायें दीं सबमें प्रथम आये। कई बार आपका सर्व प्रथम आने के कारण सौ सौ रुपये के इनाम भी मिले। आपका सारा अध्ययन काल छात्रवृत्तियों पर ही अवलंबित रहा।

विद्या सागर ने २० वर्ष की अवस्था में कालेज आ... कालेज छोड़ते ही आप ५०) मासिक के अध्यापक हो ग... स्कूल हो में आपको ८०) रु० मिलने लगा। आप के परि... और तत्परता को देख सन् १८५० ई० में आप फोर्ट वि... कालेज कलकत्ता के हेड मास्टर बना दिये गये। इस ... आपकी मासिक आमदनी १५०) रु० हो गई। आप अप... योग्यता और परिश्रम के कारण इस पद पर भी अधिक स... तक न रह सके, सन् १८८५ ई० में आप स्कूलों के इन्स्पे... बना दिये गये। अब आपको ५००) रु० मासिक मिलने लगा।

पं० विद्या सागर बड़े निस्पृह और उदार वृत्त के पुरुष थे। वह सदैव अपने मासिक वेतन में से अनाथ विद्यार्थियों ... सहायता किया करते थे। जब आप पढ़ते थे, उन दिनों आप स्वय भोजन बनाते थे। अपने भोजन का ही उन्हें नहीं बनाना पड़ता था वरन् ३-४ अन्य साथियों का भी भोजन बनाते थे। यहां तक कि बर्तन भी अपने हाथ मांजते थे। आप इन्स्पेक्टर के पद पर अधिक काल तक न ठहर सके, समाज सेवा के लिये आपका कार्य क्षेत्र मे उतरना अनिवार्य हो गया, अतः आपने उक्त पद परित्याग कर दिया। आप कट्टर सुधारक थे, आप बाल विवाह, वृद्ध विवाह और बहु विवाह के विरोधी थे। आप पहले बगाली थे जिन्होने विधवा विवाह का समर्थन किया था। आपके व्यक्तित्व ने बगला साहित्य मे एक चमत्कारिक जीवन उत्पन्न किया। आख्यान मजरी, कथा माला, और सीता वनवास आदि पुस्तके लिख कर आपने बगला साहित्य का उपकार किया। आपने सस्कृत व्याकरण पर भी कई पुस्तकें लिखी जिसका सस्कृत साहित्य आज तक ऋणी है।

आप होमो पैथिक चिकित्सा से भी बड़ा प्रेम रखते थे। बंगाल में जो होमियो पैथिक चिकित्सा का इतना प्रचार देखने

उठाऊँगा। उसके यह शब्द सुनते ही दयालु विद्या सागर उसे एक रुपया निकाल कर दिया। वही अनाथ बालक वर्द्धवान का एक बड़ा व्यापारी हो गया। आप एक दिन वर्द्धवान में घूमने जा रहे थे कि एक आदमी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थना की—"दीनबन्धु कृपाकर आप मेरी दूकान को चलिये और उसे पवित्र कीजिये।" विद्यासागर आश्चर्यान्वित होकर पूछने लगे, "भाई तुम मुझे क्यों बुलाते हो, हम तो तुम्हे जानते भी नहीं हैं?" नवागन्तुक व्यक्ति ने कहा—"आप मुझे नहीं जानते, मैं तो आपको खूब पहिचानता हूँ, मै वही हूँ जिसे आपने एक पैसा मॉगने पर एक रुपया दिया था। उस रुपये से व्यापार बढ़ाते बढ़ाते मेरा कारोबार इतना बढ़ गया है जिससे हमारा सारा परिवार भली भाति पल रहा है।" विद्या सागर उससे बहुत प्रसन्न हुये और उसे एक बहुत बडी दूकान खुलवा दी।

आज ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जगत मे नहीं हैं, किन्तु उनकी कीर्ति कौमुदी से सारा बंगाल प्रकाशित हो रहा है। विद्यासागर ने साधारण स्थिति से उन्नति करके ऐसा उच्चपद पाया, यह सब उनके परिश्रम और अध्यवसाय का ही परिणाम है। उनका पवित्र चरित्र हमारे सामने यही आदर्श उपस्थिति करता है कि परिश्रम और सच्ची लगन से एक साधारण व्यक्ति भी एक बड़ा आदमी हो सकता है। सत्यता, दयालुता और लोकोपकार प्रवृत्ति ऐसे कार्य है जिनका अनुसरण करने से मनुष्य देवता कोटि मे गिना जाता है। विद्यासागर अपनी अमर-कीर्ति और व्यापक व्यक्तित्व ससार मे छोड़ सन् १८८१ ई० मे ७१ वर्ष की अवस्था मे परलोक सिधारे। ऐसे ही कर्तव्य-परायण व्यक्ति समाज और राष्ट्र का मुख उज्वल करते है।

भगवान शंकराचार्य

[illegible]तालिकायें.—

(१) जन्म, वंश और पूर्वज

(२) बाल्यकाल और शिक्षा

(३) विरक्ति और विशेष अध्ययन

(४) प्रचार कार्य

(५) मृत्यु

प्रत्येक प्राचीन धर्म को समय-समय पर सुधार की आवश्यकता होती है। जब लोग धर्म के वास्तविक रूप को भूल कर आडम्बरों में फँस जाते हैं, तब ही उनमें सुधार की आवश्यकता पड़ती है। विक्रम की नवीं शताब्दि के अन्त में हिन्दू धर्म में अनेक कुरीतियों और रूढ़िवाद का प्रचार वृद्धि कर रहा था। बुद्धजी के प्रतिपादित धर्म को भी लोग भूल-रहे थे। व्यवहारिक-जीवन में बौद्ध धर्म का आकर्षण नहीं रहा था। बौद्ध सिद्धान्तों के स्थान पर छोटे-छोटे और स्वाभाविक विचारों का प्रचार नित्यश बढ़ता ही जाता था। जनता में [illegible]ओं की क्षमता नहीं रही थी। तान्त्रिकों के तन्त्र-मन्त्र सर्व साधारण को रुचिकर नहीं रहे थे। वर्तमान स्थिति से सब ऊब गये थे, उसके स्थान पर एक सार्वभौमिक सिद्धान्त की व्यवस्था करने को उत्सुक थे। ऐसे ही शुभ अवसर पर भगवान शंकराचार्य ने जन्म लेकर हमें सनातन वैदिक धर्म की व्यवस्था दी।

[illegible] की थी, जो [illegible] की [illegible] जाती थी। आपका [illegible] बड़ा मधुर था, गाना बड़ा ही सुन्दर गाते थे। जगन्नाथ पुरी को जाते साधु महात्माओं को आप बड़े गहरे ध्यान से सुनते। एक दिन आप सामान्य कपड़े उतार साधुओं का सा लंगोट लगा अपनी माताजी से कहने लगे—"देखो मैं कैसा अच्छा साधु बना हूँ।" माता हँस गई और बड़े स्नेह से उनका मुख चुम्बन किया। पर यह किसीने न जाना कि यह स्वांग स्वांग नहीं है वरंच सच्चा रूप है।

रामकृष्ण के माता पिता ने भरसक प्रयत्न किया कि वे कुछ लिख पढ़ ले किन्तु इन्होंने १२ वर्ष पर्यन्त कुछ लिख-पढ़कर न दिया। आप कहा करते थे—"जिस विद्या का फल कनक कान्ता है।" उसे मैं कभी न पढ़ूँगा। कुछ दिनों बाद आपके बड़े भाई राजकुमार जी दक्षिणेश्वर के मंदिर के पुजारी बनाये गये, आप भी भाई के साथ यहीं रहने लगे। इसी मंदिर से आपके हृदय में भक्ति-भाव के विचारों का विकास हुआ। पूजा पाठ में आप भाई को बहुत सहायता पहुचाते थे। जब इनके भाई की मृत्यु हो गई तब आप काली माई की पूजा में नियुक्त हुये। पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे रामचन्द्र मुखोपाध्याय की लड़की शारदामणि के साथ आपका पाणि-ग्रहण संस्कार हुआ। किन्तु यावज्जीवन शारदा मणि के साथ कभी आपका स्त्री पुरुष का भाव न हुआ।

भगवती काली माई की अनवरत पूजा करते रहने के कारण, आपकी यह दृढ धारणा हो गई कि जगत की जननी एक मात्र काली माई ही है। उन्हे यह भासने लगा कि जिन देवी की मैं, आराधना कर रहा हूँ, साक्षात् सजीव देवी माता है। वे तन्मय होकर स्तोत्र पाठ करते, गद् गद् कंठ से "माँ ! माँ !! माँ !!!" कह कर पुकारने लगते। आपके भावावेश मे जो शब्द निकलते

लगी और पूर्ववत साधना कार्य मे लगने लगे। आप कहा क थे—"फूल के विना फल नहीं लगता, किन्तु पेठे पर पहले फ लगता है पीछे फूल खिलता है।" आपको पहले ईश्वर दर्श हुये, पीछे उनका साधना कार्य आरंभ हुआ।

अहंकार और अभिमान भगवत मार्ग मे वड़ी बाधा उपस्थित करते है। भगवत मार्ग के अवलवियो को सदैव इन दूर रहना चाहिये। रामकृष्ण माता के सम्मुख प्रार्थना कि करते—"मातेश्वरी! मेरा अहंकार नष्ट कर दो, माता मुं कभी अभिमान न दो, माता मुझ से तो शूद्र, चांडाल और प पत्ती भी श्रेष्ठ हैं।" रामकृष्ण के निकट सव समान थे। इ आचरणों से किसी ने रामकृष्ण को पागल वताया, किसी ने उन्हे भ्रष्टाचार्य की उपाधि से विभूपित किया। उनके प्रेम-प्रवाह मे कुछ रुकावट न आई। "पर स्त्री मातुदारेपु, परद्रवे लोष्ठवत्" के साक्षात् उपासक थे। आपने अपना समस्त धन गंगाजी मे प्रवाहित कर दिया था। उन्होने कभी रुपया को छूआ तक नही।

स्वामी तोतापुरी जी महाराज आपके सन्यास गुरु थे। तोतापुरी से आपने समस्त शास्त्र विद्या सीखी। अव आपका पूजा पाठ छूट चुका था। मदिर से कुछ फासले पर गंगा की रेती मे वट वृक्ष के नीचे आपका आश्रम लगा। कभी-कभी आप काली माई की पूजा को दौड़ जाया करते थे।

किन्तु शुद्धाशुद्धि का कुछ विचार न था। पूजा मे कभी-कभी आप चॅवर करते करते ही भाव-मग्न हो जाते, कभी पुष्प ही चढ़ाते रहते, कभी प्रार्थना ही गा उठते जिसका छोर ही न आता था, कभी नाचने लगते, कभी रोने लगते और कभी भावावेश मे हो घटो वेसुध पड़े रहते।

श्री कृष्ण

विचार तालिकायें:—

(१) जन्म, वंश और पूर्वज

(२) शैशव काल और गौचारन

(३) सर्व प्रियता और कंस वध

(४) मथुरा त्याग और क्रान्तियाँ

(५) सारभौमिकत्व

आपका जन्म अब से ५ सहस्त्र वर्ष पहले पवित्र यादव वंश मे हुआ। आपके पिता वसुदेव और माता देवकी थीं। राजा शूरसेन आपके नाना और सम्राट कस आपके मामा थे। जब आपका जन्म हुआ, उस काल आपके माता पिता कठोर कारावास का दुख भोग रहे थे। कस को देवकी के आठवें गर्भ से उत्पन्न हुये पुत्र से मारे जाने का भय लगा हुआ था। इसी कारण उसने देवकी और वसुदेव दोनो को किले के कारावास मे बंद कर रक्खा था। जब श्री कृष्ण का जन्म हुआ तब वसुदेव रातो रात उसे गोकुल पहुँचा आये। यशोदा की त्वरत जन्मा लड़की को अपने साथ ले आये। इस कार्य को करने मे कंस के कर्मचारियों ने बड़ी सहायता पहुँचाई।

श्री कृष्ण का लालन पालन नंदर महर के घर हुआ था यशोदा और नंद अपने पुत्र से अधिक श्री कृष्ण को प्या

थे, रोहिणी के गर्भ से श्री बलरामजी का जन्म हुआ था,
पहिले ही से नंद महर के यहाँ ठहरी हुई थीं। नंद
वसुदेव के घनिष्ट मित्रों में से थे। कृष्ण और बलराम
भाई ग्वाल बालों के साथ खेल खेल कर बड़े हुये। श्री
गोचारण को जाते। सब ग्वाल बाल भी जाते। जंगलों में
भांति की बाल लीलायें करते। श्री कृष्ण बांसुरी बजाने
निपुण थे. हरे भरे सघन कुँजों की साया में बैठकर अपनी
बजाया करते। जिसे सुन-सुन कर सब आनंदित होते।
गोकुल के प्रत्येक घर में कृष्ण-बलराम को माखन खाने
होती थी। कृष्ण के अपने घर आने पर सब ही खुशी
। अवस्था के साथ ही साथ कृष्ण में बल और रूप का
होने लगा। आपके सहज बाल स्वभाव ने सबके हृदयों
अधिकार जमा लिया। ग्वाल बालों के साथ कृष्ण गोकुल
घर घर जाते और दूध, मक्खन पान करते। कृष्ण आदर
वस्तु हो गये, इनके घर आगमन से ब्रजवासी अपने को
धन्य समझने लगे।

ज्यों ज्यों कृष्ण बढ़ते जाते त्यो त्यों उनमें शौर्य, वीर्य और
का समावेश होता जाता। आपकी प्रखर प्रतिभा थी।
सुदर्शन चक्र नामक हथियार घुमाने में आप बड़े पारंगत थे।
श्री कृष्ण ने अवन्तिका में सांदीपन ऋषि के आश्रम पर विद्या-
ध्ययन की। जब आप ब्रज भूमि में रहते थे। उन दिनों
अपने गाँव वालो की बड़ी सेवा की। उस काल अनेक दैवी
आफतें ब्रज भूमि पर आईं, श्रीकृष्ण ने वृज वासियो की बड़ी
तत्परता से सहायता की। अब उनके बल वीर्य की चर्चा कंस
के कानों तक पहुंची। कंस का सन्देह कृष्ण बलराम पर बढ़ने
लगा। एक बार उसने कृष्ण बलराम को अपने दरबार में
किसी विशेष परीक्षा के वास्ते बुलवाया।

प्रातः काल घूमने के आनंद

विचार तालिकायें:—

(१) *प्रातः कालीन प्रकृति-सौन्दर्य का मनोहारी दृश्य*
(२) *घूमने से बल और बुद्धि की वृद्धि होती है*
(३) *जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ और बुद्धिमान बनाता है*
(४) *घूमने मे चिन्ता और वाद-विवाद वर्जित हैं। अ... घूमे और प्रकृति का निरीक्षण करे*
(५) *प्रकृति के विकसित सौन्दर्य मे भगवान की मनोहर ... को देखे*

चन्द्र देव अपना सारा सौंदर्य ऊपा पर न्यौछावर क... पश्चिम मे आ अस्त हो गये। ऊपा ने अपना रूप बदला ... कुमुदनी कुम्हला गई। पौधो पर मोती की वर्षा हो गई। कम... खिल गये। भौरे कमलो पर गूँजने लगे। शीतल, सुगंधि... पवन ने हृदय और शरीर को शीतल कर दिया। पक्षिया... कल-गान ने समस्त उपवन को गुंजायमान कर दिया। रसा... की डाल पर बैठी कोइल ने वह कलगान छेड़ा कि सा... अमराइयाँ मस्त हो झूमने लगीं। मोरों की मधुर-ध्वनि ... आकाश को प्रध्वनित कर दिया। पवन ने फूलो की सुग... इधर उधर वितरण करनी आरंभ कर दी। हँसते हुये कम... ने सूर्य का स्वागत किया। फूल खुशी से खिल खिला उठे... ओस ने हरी हरी घास और वृक्ष-लताओ पर आभा फैला दी।

प्रकृति रात के चौथे पहर में अपनी आभा-विभूति और … को समस्त विश्व मे संचारित करती है। यह प्रकृति का … काल है। सूर्योदय पर प्रकृति विचार मय हो जाती है, … काल का सारा विभूति-वाद नष्ट हो जाता है। जो लोग … से पहले घूमने निकल जाते हैं, वे इस प्राकृतिक-विभूति … लाभ उपार्जन करते हैं। यह अमृत-वेला काल साहस, स्फूर्ति, …, चैतन्यता और बुद्धि का विकासक है, कान्ति, आभा … शान्ति का विधायक है। सुबह का शुद्ध पवन रक्त को … करता और उसकी गति को तीव्र बनाता है। शान्त प्रकृति … घूमना बुद्धि, और बल दोनो को ही बल प्रदान करता है। … में चलने की मात्रा यदि बढ़ा दी जाय, तो इससे रुधिर … बढ़ जाता है जो स्वास्थ्य को बहुत ही लाभ-प्रद है। प्रातःकाल का घूमना, अजीर्ण विनाशक, रोग विनाशक और … जीवन का देने वाला है। मुख की कान्ति को द्विगुणित करने वाला और बुद्धि का विकासक है।

'प्रातः काल की वायु को, सेवन करत सुजान।
जाते मुख छवि बढ़त है, बुद्धि होत बलवान॥'

एक अंग्रेजी मे कहावत है कि —"Early to bed and early to rise, makes a man healthy wealthy and wise. अर्थात् जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को धनी, नीरोग और बुद्धिमान बनाता है। प्रात काल ब्राह्म-मुहूर्त में शैया त्यागना वैदिक ग्रन्थों में बहुत ही स्वास्थ्य-प्रद कहा गया है:—

"ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वास्थ्यो रक्षार्थ मायुष।
तत्र दुःखस्य शान्त्यर्थे स्मरेद्धि मधुसूदनम॥"

अर्थात् स्वस्थ्य मनुष्य को चाहिये कि वह अपने जीवन रक्षा के लिये ब्राह्म मुहूर्त मे उठ जाय और दुखनाश के

भगवान का भजन करे। इसलिये पर्यटन के अभ्यासियों जल्दी उठने की बान डालना चाहिये। शैया में पड़े रहने आलस्य अपना अड्डा जमा लेता है। आलस्य की जितनी दास करोगे उतना ही वह अपना अधिकार जमाता जावेगा। प्रा काल उठने में दो प्रकार की प्रवृत्तियों में युद्ध होता है, ए साहसिक मनोवृत्तियाँ जो बार बार उठने को बाध्य करती ह दूसरी प्रमादिक मनोवृत्तियाँ जो बार बार थोड़ी देर और सो को विवश करती हैं। यहाँ साहसिक वृत्तियों का ही आज्ञा पाल करना सुखद और श्रेयस्कर है। प्रामादिक वृत्तियों पर विज पाना ही स्वास्थ्य और सुख प्राप्त करना है।

सुबह टहलने से मनोवृत्तियाँ शुद्ध और निर्मल हो जाती हैं। मन के विकल्प और चंचलतायें टहलने से शान्त हो जाती हैं। धारणा शक्ति का कार्य कुछ प्रकृति-सौन्दर्य को देख हलका हो जाता है। दिमाग में शान्ति और ताजगी आती है। विचारों में बल और परिपक्वता आ जाती है। अत मनुष्य को घूमने का अभ्यासी बनना चाहिये। पर्यटन में व्यर्थ का वाद-विवाद न होना चाहिये। जहाँ तक सम्भव हो अकेला ही घूमने का अभ्यास करे। घूमने में सासारिक चिन्ताओं को कभी न आने देना चाहिये। समस्त मनोवृत्तियों को सासारिक चिन्तन से हटा कर प्रकृति के निरीक्षण ही मे लगा देना चाहिये। टहलने का उपयुक्त समय ४ बजे सुबह से सूर्योदय से पहले तक ही है। सारे पर्यटन मे अपने विचारों को शुद्ध रक्खो। चिन्ताओं और वासनाओं को निकट न आने दो। प्रकृति के विकसित कुसुम, लहलहाते वन उपवन, वर्फ से ढके हुये पर्वत शिखर, और ओस बिन्दुओं से सने घास के मैदानों में भगवान के सौन्दर्य की झाँकी करो। यही धारणा और यही तुम्हारा भजन हो।

———

कपड़े की आत्म-कहानी

[illegible] तालिकायें —

(१) लह लहाते खेत और उपवनों मे मेरी छटा
(२) ओटनी घरों मे मेरी नस-नस टॉली की जाती है
(३) विदेश यात्रा और मेरी आकृति परिवर्तन
(४) कोई व्यक्ति जब तक लोक-कल्याण कारी सिद्ध नहीं होता जब तक वह मेरी सी कठिनाइयों मे नहीं गुजर लेता

मैं भी एक दिन लहलहाते हरे खेतो मे मधुर-मारुत के झूले पर मस्ती से झूमता था। मेरा प्यारा पिता किसान नित्य आकर मेरी देखभाल और सुश्रूषा करता था। मैं भी पीले-पीले फूलो से हँस हँसकर पिताजी को हँसाया करता था। मेरा यह हँसना खेलना ५–६ महीने मे समाप्त हो गया। मुझे भी सांसारिक व्यक्तियो की भाति अनेक कष्टो का सामना करना पड़ा। कार का महीना था निष्ठुर सूर्य ने प्रखर रश्मियो से मुझे वेधना आरम्भ किया, मैं वेदना से विह्वल हो उठा। मेरी हृदय-रूपी बौंडी अभी मुश्किल से आवले के बराबर भी नहीं हो पाई थी कि सूर्य की कठोरता को न बरदाश्त कर सकी और फट गई।

मेरे हृदय का फटना था कि, पिताजी की भी वक्र-दृष्टि होगई। उन्होने तमाम बौंडियो को मजदूरो द्वारा एकत्र कराकर मुझे अन्यायी जिनिग-फैक्टरी वालो के हाथ बेच दिया। सच बड़ा स्वार्थमय है, पिताजी को भी मेरे ऊपर दया न आई।

निर्दयी जिनिग मिल वालों के हाथ पड़के तो मेरे ऊपर अत्यचारों की सीमा न रही। उन्होंने मेरी मुश्कें बाँधी और ए भयंकर वेलन वाली मशीन के पास मुझे जा पटका। मैं घब गया और मेरी रोमावली खडी होगई, किन्तु करता क्या वहीं के मारे दुम दबाये पड़ा रहा। घरर-घरर के शब्द के स मशीन मे हरकत उत्पन्न हुई, और वेलनों के नीचे मेरी वह ग बनाई गई कि हड्डी पसली सब चूर-चूर होगई। मेरे स के प्यारे सखा बिनौले को मुझसे बरबस छीन लिया गया। दो दुःखो का सामना होगया, एक मित्र वियोग दूसरे सर्वना किन्तु फिर भी कुशल हुई कि इन वेलनों ने मेरा अस्तित्व न मिटाया। मेरी इस दयनीय दशा पर मिल मालिक को भ क्यों दया आने लगी। उसने मुझे एक बड़े गहरे गढ़े मे भर दिया और एक तले ऊपर की भारी मशीन से ऐसा दबाया मेरी रही सही अक्ल ठिकाने आगई। अब मैं एक गाँठ आकृति मे अपना अस्तित्व कायम रख सका।

जब मुझे मालूम हुआ कि मैं गुड्स-ट्रेन से बम्बई जा रहा तो मेरे हर्ष का वारापार न रहा, क्योंकि रेल की सवारी मु बडी ही सुन्दर मालूम हुई। बम्बई स्टेशन पर उतरने भी न पा था कि बड़ी-बड़ी मशीनों ने उठा-उठाकर मुझे एक विशाल-क. जहाज पर लाद दिया। भला विदेश यात्रा किसको नीकी नहीं लगती। विदेश में कैसे-कैसे मनोहर नगरों को देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा, इस आशा ने मुझे बड़ा आनन्दित किया; किन्तु यह आशा डोवर के बन्दरगाह मे पहुँचते-पहुँचते निराशा में परिणित होगई। यहाँ मुझे अपनी मातृ-भूमि का स्मरण हो आया, और मै बेसुध होकर भूमि पर गिर पड़ा। जब होश हुआ तो मैने अपने को धुनने वाली मशीनो के अन्दर अपनी विकट

...ने पाना। मैं विवश था, किन्तु उन अन्याइयों ने मुझे ...ों ही में बदल दिया। इस स्थिति से तो मेरे जीवन-नाटक ...ा ही बदल गया। मेरा कुछ अंश तो तोषक और ...ों में भर दिया गया, जिससे शीत-निवारण का काम लिया ...। कुछ मसनद और बिछौनों का सहारा मैं बना। शेष भाग ...ने के वास्ते मशीनों पर चढ़ा दिया गया। इसबार तो न ...न कितनी भयंकर काल कोठरियों में होकर गुजरना पड़ा ...ह मेरा हृदय ही जानता है, भगवान किसी को इतना कष्ट ...उठवावे। किन्तु अपने रामजी तो परेशानियों के अभ्यस्त ...। कोई विशेष चिन्ता न की। अब मैं बुनताखाने मे पहुँचा। ...ों मेरा वही रूप होगया जैसा आप देखते हो। कहिये अब ...आप मेरे उपयोगिता-वाद को समझ ही गये होंगे। यदि ...संसार में मैं न रहूँ तो संसार अपनी मान-मर्यादा की रक्षा भी ...कर सके। संसार में कोई व्यक्ति जब तक लोक-कल्याण-कारी ...नहीं होता जब तक कि वह मेरे तुल्य अपने जीवन को ...कठिनाइयों में होकर नहीं गुजार लेता। कठिनाइयाँ मनुष्य जीवन ...को परिष्कृत बनाती हैं।

आपने मेरा जैसा घिसा मिट्टा व्यक्ति शायद ही देखा हो ?
मैं वह पुरुष हूँ जिसके चरण रज को चूमने दुनियाँ दौड़ती है।
जिस घर में मेरी पहुँच नहीं उस घर को कोई कानी आँख से
भी नहीं देखता। संसार का कौन सा रहस्य है जिसे मैं न
जानता हूँ, संसार की ऐसी कौन सी गुत्थी है जिसे मैं सुलझाने
में समर्थ नहीं ? संसार का कौन सा ऐसा शुभ कार्य है जो
मेरे द्वारा सम्पन्न न हुआ हो ? संसार मे ऐसा कौन सा अधम
कार्य है जो लोगो ने मेरे प्राप्त करने के लिये न किया हो ?
लोग जगत को गाय के सींग पर बतलाते हैं, यह उनकी भूल है,
उन्हें जगत मेरे सींग पर बताना चाहिये। जनाब, लोग मेरे
चरण-चुम्बन के वास्ते यूनिवर्सिटियो से बड़ो बड़ी डिगरियाँ
प्राप्त करते हैं संसार की भयंकर लड़ाइयाँ एक मात्र मेरे प्राप्त
करने के वास्ते लड़ी जाती हैं। यह है मेरी गौरव गरिमा।
संसार के भीषण हत्याकांड और डकैतियाँ केवल मेरे प्राप्त करने
के साधन हैं। निष्कर्ष यह है कि जगत का समस्त व्यापार केवल
मेरे पाने के निमित्त किया जा रहा है।

मेरा गौरव केवल इतना ही नही, जितना कि मैं अभी बता
चुका हूँ। मानवी-मनोवृतियो पर मेरा पूरा अधिकार है।
आत्म-सम्मान और आत्म-श्लाघा के भाव मैं ही मानव हृदय मे
भरता हूँ। यदि मेरी कृपा निरक्षर भट्टाचार्यों पर भी हो तो मैं
उन्हें धर्मावतार, न्याय मूर्ति और दया सागर की पदवियो से
विभूषित कर दूं। वज्र मूर्खों को लाला, बाबू और सेठ जी
आदि नामों से पुकरवाऊँ।

कहिये अब संसार का कौनसा गुण है जो मेरे में निवास
नहीं करता ?

आप मुझे मेरे गुण सुनकर सुखी समझते होगे, यह भूल

...नुष्य की उत्कट अभिलाषा केवल स्कूलों की शिक्षा से पूर्ण ...हो सकती। उसे पाठशाला के ज्ञान के अतिरिक्त उसकी ...ना वृत्ति और भी अधिक जानने की होती है। यूनीवर्सिटी ...लेज में यद्यपि विविधि विषयों की अनेक पुस्तकें पढ़ाई ...ती हैं, किन्तु उससे विद्यार्थी का परिमित ज्ञान ही रहता है। ...सी विषय विशेष का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये उस विषय ...विविध पुस्तकें पढ़ना बड़ा ही आवश्यक है, क्योंकि इसके ...ना ज्ञान की पूर्णता का अभाव सा रहता है।

यह भी संभव नहीं कि प्रत्येक विषय की समस्त पुस्तकें एक ...पुरुष खरीदे। ऐसी स्थिति में प्रत्येक जिज्ञासु व्यक्ति को ...स्तकालयों का आश्रय लेना पड़ता है। लेखकों का काम तो ...ना पुस्तकालय के चल ही नहीं सकता, क्योंकि उसे पग-पग पर ...पुरुषों के अवतरणों के वाक्य अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के ...लिये देने पड़ते हैं। लेखक के लिये यह बड़ी ही कठिन समस्या ...जाती है कि वह एक अवतरण देने के वास्ते एक किताब खरीदे। लेखकों की इस विकट समस्या को एकमात्र पुस्तकालय ही हल कर सकते हैं। पुस्तकालय एक तरह से सरस्वती के ...क्षय भंडार हैं, जिनमें से चाहे कोई कितना ही लेले किन्तु उसमें कभी कमी नहीं आती।

पुस्तकालय ज्ञानियों के जीवन सर्वस्व, साहित्यज्ञों के जीवन ...धार, लेखकों के पथ प्रदर्शक, कवियों के हृदय, छात्रों के विश्व-विद्यालय, जिज्ञासुओं के तृप्ति-स्थान और शिक्षित समाज के विचरण के लिये प्रेमोद्यान है। दूसरे शब्दों में यों कहिये कि पुस्तकालय सभ्य-समाज के साहित्योद्यान हैं, जिनमें विविध रुचि ...र विचारों के व्यक्ति घूम फिर कर आनन्द प्राप्त कर सकते ...। तुलसी की मधुर मानसी प्रिय है तो उसी में गोते लगाकर

[illegible] की इच्छा पाठशालाओं में इन स्कूलों की शिक्षा से पूर्ण नहीं हो सकती। उसे पाठशाला के ज्ञान के अतिरिक्त उसकी ज्ञान वृत्ति और भी अधिक जानने की होती है। यूनीवर्सिटी [illegible] में यद्यपि विविध विषयों की अनेक पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, किन्तु उससे विद्यार्थी का परिमित ज्ञान हो सकता है। किसी विषय विशेष का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिये उस विषय की विविध पुस्तकें पढ़ना बड़ा ही आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना ज्ञान की पूर्णता का अभाव सा रहता है।

यह भी संभव नहीं कि प्रत्येक विषय की समस्त पुस्तकें एक व्यक्ति खरीदे। ऐसी स्थिति में प्रत्येक जिज्ञासु व्यक्ति को पुस्तकालयों का आश्रय लेना पड़ता है। लेखकों का काम तो बिना पुस्तकालय के चल ही नहीं सकता, क्योंकि उसे पग-पग पर ग्रन्थों के अवतरणों के वाक्य अपने सिद्धान्तों की पुष्टि के लिये देने पड़ते हैं। लेखक के लिये यह बड़ी ही कठिन समस्या हो जाती है कि वह एक अवतरण देने के वास्ते एक किताब खरीदे। लेखकों की इस विकट समस्या को एकमात्र पुस्तकालय ही हल कर सकते हैं। पुस्तकालय एक तरह से सरस्वती के अक्षय भंडार हैं, जिनमें से चाहे कोई कितना ही लेले किन्तु उसमें कभी कमी नहीं आती।

पुस्तकालय ज्ञानियों के जीवन सर्वस्व, साहित्यिकों के जीवन प्राण, लेखकों के पथ प्रदर्शक, कवियों के हृदय, छात्रों के विश्व-विद्यालय, जिज्ञासुओं के तृप्ति-स्थान और शिक्षित समाज के विचरण के लिये प्रेमोद्यान है। दूसरे शब्दों में यों कहिये कि पुस्तकालय सभ्य-समाज के साहित्योद्यान हैं, जिनमें विविध रुचि और विचारों के व्यक्ति घूम फिर कर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। तुलसी की मधुर मानसी प्रिय है तो उसी में गोते लगाकर

...ा कर सकता है। पुस्तकों का आदान प्रदान समुचित रूप ...ता है। पुस्तकालयों का प्रबन्ध बड़ौदा स्टेट की ओर से ...र है, पुस्तकालयों का समस्त व्यय स्टेट गवर्मेन्ट करती ...ते पुस्तकालय गाँव गाँव मे पुस्तकें पहुँचाते हैं। विगत ... में यू० पी० गवर्मेन्ट ने भी चलते फिरते पुस्तकालयो का ... किया है जिसका सर्व साधारण जनता पर बड़ा प्रभाव ...ा है।

शिक्षा-प्रचार और ज्ञान-प्रचार की दृष्टि से पुस्तकालयो का ...तना प्रचार किया जावे उतना ही अच्छा है।

किन्तु भारत जैसे अशिक्षित देश मे पुस्तकालयों के प्रचार के ...थ ही साथ शिक्षा का क्षेत्र भी विशाल होना चाहिये। लेखकों ...ो ऐसी पुस्तकें लिखनी चाहिये, जिसमे ग्रामोपयोगी, साहित्य ...रल और सुबोध भाषा मे लिखा हो। राष्ट्र-निर्माण-कार्य का ...ास्तव कार्य देहात से आरंभ होगा उन के निर्जीव जीवन मे पुस्तकालयो द्वारा ज्ञान का संदेश पहुँचाना होगा। तब ही जाति और राष्ट्र समुन्नति के पथ में विचरण कर सकेंगे।

सांसारिक झंझटों से ऊब गये हैं, तो उपनिषदों का पढ़ना शु
कर दीजिये। जगत की प्रवृत्ति-परायणता से ऊब गये हैं
श्री कृष्ण के गीतामृत उपदेशों से निवृत्ति-मार्ग का रास्ता
सुख और शान्ति का पाठ लीजिये।

यदि आपको मानव प्रकृति के अवलोकन की अभिला
तो तुलसी के मानसरोवर का पाठ कर अपना उद्देश्य
कीजिये। यदि आप की तर्कनायें प्रबलतर हो रही हैं तो
दयानंद के सत्यार्थ-प्रकाश की बार बार आवृत्ति कीजिये।
आप स्वतंत्रता-प्रेमी हैं तो महात्मा गांधी और लेनिन
पुस्तकें अवलोकन कीजिये। अभिप्राय यह है कि पुस्तकें प्र
रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार लोकरंजन का कार्य्य करती हैं।

पुस्तकें पल पल में हमारी आत्म-परीक्षा करती रहती
पुस्तक पढ़ते २ जब किसी विशेष गुण का प्रसंग आ जाता
तो उस गुण से हम अपना समन्वय करने लगते हैं।
हमारे जीवन में उस गुण का अभाव है तो हम अपने जी
में उस गुण को लाने का प्रयत्न करते हैं। गुण, अवगुण
इस अनवरत अध्ययन से हमारे हृदय में अपनी आलोच
करने का अभ्यास होता है। उत्तम और भद्दे गुणों की परख
होती है। सत्य, असत्य के ज्ञान का मान होता है। इस प्रका
के अवलोकन करने से हमें सूक्ष्म-निरीक्षण की बान पड़ती है
हमें अपने जीवन की सफलतायें और विफलतायें स्पष्ट झलकने
लगती हैं। इस बात का भी पर्याप्त अनुभव हो जाता है कि हम
अपनी विफलताओं पर क्यों कर विजय प्राप्त कर सकते हैं?
हमारी मनोवृतियों में भीषण परिवर्तन हो जाता है। "वसुधैव
कुटुम्बकम" के भाव हृदय में हिलोरें मारने लगते हैं। दुःखी
व्यक्तियों के प्रति प्रेम और दलित जाति के प्रति सहानुभूति के
भाव जागृत हो जाते हैं। सेवा के उच्चतम भावों का हृदय में

समय का सदुपयोग

संकेत —

(१) क—समय का सदुपयोग व्यक्ति और समाज को बनाता है

ख—जीवन में सब परिवर्तन करने वाला समय ही है

(२) क—समय को व्यर्थ वाद-विवाद में खोना अहितकर होता है

ख—समय को सदैव ऐसे शुभ कार्यों में लगाये जिससे अपने समाज का तथा देश का भला हो

(३) क—आलस्य मनुष्य जीवन की समस्त शक्तियों का नाश करता है

ख—समय का व्यर्थ कामों में खोना उसका दुरुपयोग करना है

(४) समय की पाबन्दी उसका दुरुपयोग है

(५) सदुपयोग से लाभ

क—गौरव प्राप्त होता है

ख—चित्त को शान्ति मिलती है

ग—आत्मिक उत्थान होता है

घ—लोक कल्याण होता है

प्रत्येक देश जाति और धर्म के लोगो ने समय के सदुपयो का ध्यान रक्खा है। जो देश और जाति समय का मूल्य कर हैं, वही देश और जाति समुन्नत और शक्तिशाली होते हैं। जि व्यक्तियो और समाजो का समय पारस्परिक कलह, आलस और आनन्द विनोद मे व्यतीत होता है यह प्रायः संसार के प से मिट जाती है। समय का मान करने वाली जातियॉ संसा पर अपना साम्राज्य स्थापित करती हैं; वे अपने समय की एक मिनट भी व्यर्थ नहीं खोतीं। योरोप की जातियॉ आज समय क मूल्य कर रही हैं। योरोप के लोगो के पास काम है किन्तु समय नहीं, हिन्दुस्तानियो के पास समय है, किन्तु काम नहीं। हमारा सारा समय विलासिता मे व्यतीत होता है। हम स्वयं अपना काम करने मे अपना अपमान अनुभव करते हैं। इसी कारण हमारा अधःपतन होता चला जारहा है। विपर्य इसके योरोप वाले किसी काम करने मे घृणा नहीं करते, वे परिश्रम द्वारा पैसा पैदा करने मे अपना गौरव समझते हैं। इसी कारण उन्हें सदैव समयाभाव की शिकायत रहती है। वे समय का बड़ा मान करते है। वे समय की एक मिनट भी व्यर्थ जाना पाप समझते है। निस्सन्देह समय बडा मूल्यवान है इसे कभी व्यर्थ न जाने देना चाहिये। जो व्यक्ति और समाज अपना समय व्यर्थ नही खोते वह सदा उन्नत और सुखी रहा करते हैं। जो व्यक्ति और समाज इसके विपरीत आचरण करते हैं वे सदैव अवनत और दुखी रहते हैं।

हमारे देश के मनुष्य और विशेष कर विद्यार्थी अपने समय को व्यर्थ बातो मे व्यतीत किया करते हैं। आज के काम को कल पर उठा रखना तो उनका साधारण काम है। प्राय· यह भारतीय मनोवृत्ति होगई है कि जिस कार्य को वह कर रहे हैं उसे छोडकर दूसरा काम सीखना पसन्द नहीं करते। जर्मनी, जापान और

के विद्यार्थी अपनी मातृ-भाषा के साथ-साथ ही अनेक भाषायें सीखते हैं। आवश्यक विषयों के साथ ही साथ ... भी सीखते हैं। उपर्युक्त देशों में ललित कलाओं के ... गाना बजाना और चित्रकारी भी सीखते हैं। पढ़ने के अतिरिक्त वे अपनी शारीरिक-उन्नति और बल संचय के निमित्त विविध प्रकार के खेल और व्यायाम भी करते हैं। वे अपने समय का एक मिनट भी व्यर्थ नहीं जाने देते। ... विद्यार्थियों को इन देशों के विद्यार्थियों की नकल करनी ... इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि हम समय का एक मिनट न खोयें, तो हम संसार में बड़े से बड़ा काम करने में समर्थ ... सकते हैं। इस समय से हम कितना ज्ञान संचय कर सकते हैं। ... के व्यक्ति समाज के साथ भी उपकार कर सकते हैं। ... बड़ा मूल्यवान है जो निकल जाता है फिर हाथ नहीं ... । इसलिये हमें उचित है कि समय का एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दें और उसका सद्व्यवहार करें।

... देखने में आता है कि बहुत से विद्यार्थी अपना ... मूल्य समय व्यर्थ के बनाव सिंगार ही में व्यतीत किया करते ... कुछ मनचले लड़कों के साथ गप्प शप्प हाकने में अपना ... खोया करते हैं। कुछ को सिनेमा और ड्रामा देखने की ... पड़ जाती है, कुछ अपने समय को सोने ही में व्यतीत करते हैं। इससे स्वास्थ्य पर बड़ा भयंकर प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों ... कभी ७ घंटे से अधिक न सोना चाहिये। जल्दी सोने और ... उठने से स्वास्थ्य, धन और बुद्धि बढ़ती है। कुछ विद्यार्थी अनियमित ढंग से पढ़ने ही में अपना समय व्यतीत करते हैं। किसी दिन दो बजे तक सोकर सुबह तक पढ़ने में लगे रहते हैं और किसी दिन दो बजे तक पढ़कर सुबह तक सोने में लगे रहते

धन का सदुपयोग

विचार तालिकाएँ:—

(१) धन का सदुपयोग

क—शुभ कार्यों मे धन और परोपकार

ख—सन्तान की शिक्षा-दीक्षा

ग—रक्षा और स्वास्थ्य

घ—मित-व्ययता

(२) *दान घर से आरभ होता है*

(३) *राष्ट्र निर्माण कारी कार्यों में धन का व्यय सदुपयोग है*

(४) *धन के दुरुपयोग से हानि*

(५) *आपदा आकस्मिक घटनाओं का सामना करने के लिये धन सग्रह करना एक उत्तम गुण है।*

जिस प्रकार समय का सदुपयोग मानवी जीवन को सुखद और लाभकारी है, वैसे ही धन का सदुपयोग उत्तम कार्यों ही मे व्यय करना है। यह कथन अक्षरशः सत्य है कि "धन का कमाना जितना कठिन नहीं है, जितना कि उसको सलीका से व्यय करना कठिन है।" जो धन बड़े परिश्रम से कमाया जाय, उसे बिना विचारे ही व्यय कर देना बुद्धिमानी नहीं है। विद्या का सदुपयोग ज्ञान प्राप्त करने मे है, शक्ति का सदुपयोग दीन

[आ]दर्श-निबन्ध

और

(पत्रलेखन)

[वि]स्तृत भूमिका और लगभग १०० विषयों पर आदर्श-
[नि]बन्ध और आदर्श-पत्रों सहित हाई स्कूल
परीक्षा के विद्यार्थियों तथा 'रत्न', 'भूषण'
तथा 'हिन्दी विशेष-योग्यता' के परी-
क्षार्थियों के लिये लेखन-कला
के ज्ञान के लिये एक
अनूठी पुस्तक।

— —

लेखक :—

वासुदेव शर्म्मा भूतपूर्व हिन्दी लेक्चरर,

जाट-इन्टर-कालेज, लखावटी,

(बुलन्दशहर)

—❁—

प्रकाशक—

लक्ष्मीनारायन अग्रवाल

बुकसेलर एण्ड पब्लिशर आगरा।

[प्रथम संस्करण] सन् १९४१ ई० [मूल्य १॥)

को रक्षा करने में है। धन का सदुपयोग उसको उत्तम व्यय करने ही में है। धन में अपरमित बल है, संसार के बड़े कठिन कार्य पैसे की सहायता से बड़ी आसानी से होते हैं, प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं; किन्तु वह काम धन के ... से अनायास हो जाते हैं। धन बड़े बड़े मानियों का ... भंग कर देता है। बड़े बड़े दृढ़-प्रतिज्ञ रुपया के सामने ... छोड बैठते हैं। बड़े बड़े महात्माओं का धन आसन ... देता है। अभिप्राय यह है कि धन में अपार शक्ति है, ... आकर्षण है। इस कारण धन त्याज्य पदार्थ नहीं. इसका संग्रह ही वास्तविक शक्ति संचय करना है। दूसरा प्रश्न ... यह बनता है कि वह कौन कौन से कार्य हैं जिन पर धन व्यय करना उनका सदुपयोग है। और कौन कौन से कार्य करना धन का दुरुपयोग करना है? धन का सदुपयोग राष्ट्र और समाजोपयोगी कार्यों में व्यय करना बताया गया है. किन्तु उसमें भी देश, काल और परिस्थिति के अनुसार व्यय करना उत्तम बताया गया है, जो धन पात्र कुपात्र का विचार किये बिना ही व्यय कर दिया जाता है वह बड़े विनाशकारी परिणाम लाता है। जो धन इन्द्रिय जनित सुखो की तृप्ति के लिये किया जाता है वह वास्तव में धन का दुरुपयोग है ऐसा धन का उपयोग व्यक्ति और समाज दोनों को अप्रिय परिणाम ला सकता है।

धन का उपयोग सर्व प्रथम अपने जीवन पर करना है इसके पश्चात् अपने कुटुम्बियों पर। क्योंकि अपने भरण-पोषण के पश्चात् आवश्यक हो जाता है कि हमारे धन से हमारे निकट संबंधियों की रक्षा हो जाय तो बहुत उत्तम। दान पहले घर से ही आरंभ करना चाहिये जिससे जनता का अधिक हित हो। दान देने में इस बात का अवश्य ध्यान रक्खा जाय कि ... हमारा धन किसी ऐसी जगह तो व्यय नहीं हो रहा जि...

आलस्य और प्रमाद की वृद्धि हो रही हो। अथवा हमारे धन से अनाचार और भोग-प्रवृति का अभ्युदय तो नहीं हो रहा। यदि आपके धन से परिवार वाले भी उपर्युक्त लाभ उठा रहे हैं तो वह भी धन का दुरुपयोग ही है, जो कदापि न होना चाहिये। क्योंकि जो दान कुपात्रो को दिया जाता है वह उसका सदुपयोग नहीं अपितु दुरुपयोग ही है। जिसे वास्तव मे धन की आवश्यकता है उसे ही धन देना चाहिये। जिसे रुपया की आवश्यकता नही उसे रुपया देना व्यर्थ है और उल्टे अनाचार की वृद्धि कराना है। यदि किसी भूखे को देना हे तो वास्तव मे जब ही दो जब कि उसे भूख हो। भरे पेट पर देना उसका दुरुपयोग करना ही है। दान वही उत्तम है जो याचक को इस योग्य बना दे कि उसे फिर मॉगने की आवश्यकता न रहे। हमारे दान से याचक मे शक्ति उत्पन्न हो जावे कि उसे याचना करने की आवश्यकता न रहे तो वास्तव मे हमारा सच्चा दान है। विद्यादान को इसी कारण से सर्वोत्तम बताया गया है कि याचक विद्यादान पाकर सदैव याचक कर्म से सदैव के लिये क्षमता प्राप्त कर लेता है। इसी कारण शिक्षा संस्थाओ का दिया दान सर्वोत्तम दान है। किन्तु इस प्रकार के दान देने से पहले इस बात का देख लेना बड़ा ही लाभकारी है कि कही शिक्षा सस्थाओ द्वारा लिया गया धन व्यक्ति गत स्वार्थों मे तो ... नहीं किया जा रहा। यदि उससे व्यक्तिगत स्वार्थों उपभोग लिया जा रहा है तो वह भी धन का दुरुपयोग है।

धन का सच्चा सदुपयोग तो वही है जिससे राष्ट्र के कला ... की अभिवृद्धि हो। उसके व्यापार व्यवसाय को प्रोत्साहन मिले। इससे राष्ट्र के कार्य क्षेत्र का दायरा विशाल होगा और राष्ट्र की आर्थिक स्थिति सुधरेगी। धन को ऐसे

...से उपयोग करना जिससे जनता में आलस्य, प्रमाद
...व्यभिचार की वृद्धि हो रहा ही अनिष्टकारी है। धन का
वही उत्तम है जो राष्ट्र की व्यापारिक उत्पादन शक्ति को
...व्यापार स्थानों में लगाया हुआ धन भी समाज की
सेवा ही करता है यदि वह उपयोगी वस्तुओं का
...कर उचित मूल्य पर जनता के सन्मुख अर्पण करे
...जनता सुख और सौलभ्य दोनों ही अनुभव करेगी।
...लोगों की यह धारणा है कि दूसरों को दिया हुआ धन ही
...वास्तविक सदुपयोग है, गलत है। अपने जीवन पर भी
...उचित धन उपयोग करना सदुपयोग है। अच्छे स्वास्थ्यदायक
...मकान में रहना अपने आप ही को नहीं वरन देखने वालों को
...भी आनंद देता है। स्वच्छ और उचित वस्त्र धारण करना भी
...समाज के आनंद का कारण है। अपने ऊपर व्यय करना
...समाज के एक योग्य व्यक्ति पर व्यय करना है। हाँ, इस बात
...का ध्यान रखना बड़ा आवश्यक है कि हमारा धन विलासिता
...और दुर्व्यसनों में न व्यय हो रहा हो। विलासिता पर किया
...हुआ धन वहाँ विपाक्त परिणाम लाता है। मकान, वस्त्र, मनो-
...रंजन और बालकों की शिक्षा पर व्यय किया हुआ धन दुरुपयोग
...नहीं वरंच धन का सदुपयोग है। हमारा उत्तम मकान, हमारा
...अच्छा खाना पहिनना, बच्चों को अच्छी शिक्षा देना समाज की
...सेवा की वस्तु नहीं है अत इन वस्तुओं पर व्यय किया हुआ
...धन सदुपयोग ही है। धन के उपयोग में हमारी मनोवृत्तियाँ बड़ा
...सुन्दर काम करती हैं। तमोगुणी और रजोगुणी वृति का दिया
...हुआ दान मद और अहंकार उत्पन्न करता है जो सर्वदा निषेध
...है। सात्विक वृति का दिया हुआ धन ही श्रेयस्कर होता है।
भविष्य के सकट काल का ध्यान करके जो धन सग्रह किया
...जाता है, वही उत्तम है। यह धन शक्ति सचय के तुल्य है

समय पर काम देगी। किन्तु अपने को दुःखी रख के अथ बुरे ढंग रुपया एकत्र करना एक पाप है। जिससे व्यक्ति औ समाज किसी का हित नहीं होता। धन की तीन गति बताई ग हैं—दान, भोग और नाश। जो धन को उचित कार्यों में उपयो करते हैं न दान ही देते हैं वह धन स्वयं ही नाश हो जाता है अतः आवश्यक है कि धन का सदुपयोग किया जाय जिस व्यक्ति और समाज का हित हो। अन्यथा संग्रहीत धन अप और समाज दोनों के लिये घातक सिद्ध होगा।

ग्राम-सुधार

[illegible].—

(१) भारत के गाँव अत्याचार, व्यभिचार और मुकदमे बाज़ी के अड्डे हैं

(२) रूढ़ि-वाद और निरक्षरता गावों के गले पड़ी हुई हैं

(३) पुलिस, पटवारी और कारिन्दा की धौंस और रिश्वतों से गाँव वालों के नाकों दम आ रहा है

(४) शिक्षा के अभाव से उनको ख़ूब ठगा जाता है

(५) बाबा आदम के ज़माने के औज़ारों का प्रयोग अभी तक नहीं छोड़ा

(६) गाँव सुधार कैसे हो ?

क—गाँव वालों की आर्थिक, शारीरिक और मानसिक तीनों प्रकार की उन्नति की जाय

ख—फ़िज़ूल ख़र्ची पर प्रतिबंध लगाये जायें

ग—ग्रामीण उद्योग धंधों को पुनर्जीवित किया जाय

घ—शिक्षा द्वारा भय और रूढ़िवाद हटाया जाय

ङ—ग्राम पंचायतें खोली जायें

च—कानूनों में सुधार किया जाय

र ... दिया। कभी किसी की मांगी रकमी कभी किसी के डाका ... दिया। ज्यों किसी ने सिर उठाया कि उसे दबोच दिया। ... इन्हीं परेशानियों में यह आजीवन फंसे रहते हैं, उनकी कूप ... ज्यों त्यों बनी रहती है आज के गांवों को यदि नरक ... जाय तो अतिशयोक्ति न होगी।

गांव वालों में जहां पारस्परिक कलह और मनोमालिन्य है। ... सब से भयंकर वस्तु जो उनके गले को दबा रही है क़र्ज़ा ... । साहूकार उन्हें पनपने नहीं देते। जो कुछ बेचारा किसान ... करके कमाता है, उसे साहूकार कुर्क कर लेता है। बस ... के सामने वही कंगाली का नग्न नृत्य आ उपस्थित होता है। ... भी बेचारे ने कुछ साहस दिखाया तो साहूकार ने उसकी ... निकालने के लिये सिविल जेल भेज दिया। उसकी अनुप- ... स्थिति में सारी खेती चौपट होगई। भूख से उसके बच्चे त्राहि- ... त्राहि कर उठे। जब उसकी कमाई उसको प्राप्त नहीं होती तो ... में अकर्मण्यता के भाव उदय होने लगते हैं। इस परेशानी ... भी रोज ज़मीदार साहब के न जाने की धौंस, कारिन्दा ... की बेगार और पटवारी की घूंस उसके नाक में दम किये ... है। न खाना है, न कपड़ा है न उठने बैठने और मवेशी ... ने को जगह है। जब देखो, पिचके गाल, बैठी हुई आँखें, ... शरीर, नंगे पैर, अधनंगा शरीर चिल्ला-चिल्लाकर ... की दयनीय दशा का दिगदर्शन कराते रहते हैं। ज़मीदार ... की अगल बगल में बेचारा दीन किसान जनवरी के भीषण ... में भूख से व्यथित वस्त्रों के अभाव में अलाव पर बैठा ... की लम्बी रातें काटा करता है। आकाश में भ्रमण करने ... तारों को देख-देखकर अपनी अतृप्त आकांक्षा को तृप्त ... ता है। ज़मीदार साहब अपने स्वर्गीय कमरे में दूध सी ... मुलायम शैया पर अपना स्वर्गीय जीवन व्यतीत क...

किसान की दयनीय दशा पर उन्हें कभी दया नहीं आती और न उनका पत्थर सा हृदय कभी पसीजता है। भगवान तू इन दया-हीन जमींदारों को सुमार्ग सुझा।

निरक्षरता ने तो गाँव वालों को बिलकुल पशु ही बना रक्खा है। वे अपने अधिकारों को नहीं जानते, न वह यही जानते हैं कि हमें राजा और समाज के प्रति क्या करना है। वे संसार की समस्त प्रगतियों से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। संसार में क्या होरहा है? संसार कहाँ जारहा है इसका उन्हें कुछ पता नहीं है। वही लहलहाती खेती उनका साहित्य है। उनके यहाँ कोई समाचार पत्र है न संसार की प्रगति को समझने वाला कोई नेता। वही सूर्य और चन्द्र नित्य आते हैं और उन्हें जगत का समाचार देकर चले जाते हैं। पशु, पक्षी ही उनके प्यारे सखा हैं। जिनसे उनका रोज ही समागम होता है। नगे कृश-गात ग्वाला और गडरिये शाम को आकर अलावों पर उन्हें बाह्य जगत के समाचार देते हैं। वह वास्तव में प्रकृति का प्रति रूप है। वह प्राकृतिक वस्तुओं के अतिरिक्त किन्ही वस्तुओं को नहीं देखता। उसे अपने खेत में, खलियान में और प्रकृति के प्रत्येक पदार्थ में भगवान की आभा दृष्टिगोचर होती है। उसका सारा काम भगवतेच्छा पर ही होता है। वह अपने प्रयत्न-वाद की डींग नहीं हाँकता। हाँ, उसकी अल्पज्ञता से महाजन लोग नाजायज फायदा उठाते हैं। रुपया पर दुअन्नी को ब्याज तिस पर भी भाव सवाये पर उनका माल लेना। वह बेचारा नहीं जान पाता उसकी कमाई कहाँ जा रही है। किसान बीस से आगे गिनना जानता। ६३ की संख्या को तीन ऊपर तीन बीसी कहकर रखता है। उसे कारिन्दा अलग चकमा देता है। पटवारी पृथक भय दिखाता है। पुलिस वाले तो बेचारे को बिला कारण ही आ दबाते हैं। शिक्षा के अभाव में भीगी बिल्ली की भाँति

किसानों की दशा सुधारने पर जोर नहीं दिया वरन उन्होंने अपनी पार्टी प्रापेगेन्डा ही का काम लिया और ग्राम-सुधार का कार्य एक प्रकार से पूर्ण-रूपेण असफल हो गया। ग्राम-सुधार का उद्देश्य तो बहुत ही उत्तम है किन्तु उसमें गन्दे, स्वार्थी और किराये के टट्टू भरजाने के कारण वह बुरी तरह फेल हुआ।

इन तमाम बातों पर दृष्टि डालने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि फिर किस प्रकार इन गाँवों का उठाया जाय इसके लिये बड़े अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इस कार्य को करने के वास्ते गवर्मेन्ट और जनता दोनों ही के सहयोग की आवश्यकता है। गॉव वालों की कोई एक ही दशा ऐसी नहीं है जो बिगड़ गई हो। गाँव वालो की एक तरह से सबही अवस्थायें खराब हो गई हैं। जिनके सुधार की आवश्यकता है। गॉव वालों की शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सभी प्रकार की उन्नति करनी है। गॉव वालों की सब से बड़ी समस्या उनको आर्थिक समस्या को हल करना है। उनकी आर्थिक समस्या दो प्रकार से हल हो सकती है। एक तो उसकी आमदनी में किसी प्रकार वृद्धि की जाये दूसरे उसकी अपव्ययता को रोक थाम की जावे, क्योंकि यदि हमने किसी तरह उसकी आमदनी बढ़ा दी और उसके अपव्यय को न रोका तो हमारा प्रयत्न एक प्रकार से निरर्थक ही हो जायगा। अतः उसको खेती की उत्पादन शक्ति को बढ़ाये जाने के साधन उपस्थित किये जायें। उत्पादन शक्ति को वृद्धि करने के लिये उत्तम खाद और उत्तम बीज और उत्तम औजारों का प्रबन्ध आवश्यक है। फिजूल खर्चा रोकने के लिये उनकी मुकद्दमे बाजी, शराब खोरी और व्यभिचार आदि पर पर्याप्त रुकावटें डाली जावें। तब जाकर कहीं उनकी दशा बहतर होगी। गॉव वालों का बहुतसा समय बेकारी में व्यतीत होता है। बेकार वक्तों के लिये घरेलू उद्योग धंधों का

व्यायाम और खेल

विचार तालिकायें —

(१) जीवन में स्वास्थ्य ही सर्वोत्तम वस्तु है, कहा है 'जी सुख तो जहांन सुख'
(२) हमारा बल, साहस और शौर्य नित्य गिरता ही जाता है
(३) मनुष्य का अभ्युदय और पतन स्वास्थ्य पर निर्भर है
(४) पर्यटन करना उत्तम व्यायाम है
(५) व्यायामों की उपयोगिता
   क—मानसिक क्लान्ति दूर होती है
   ख—स्फूर्ति आती है
   ग—मन संयत हो जाता है
(६) उपसंहार-हमें कोई न कोई नियमित व्यायाम करना चाहिये

मनुष्य जीवन में स्वास्थ्य का बड़ा महत्त्व है। मनुष्य के [illegible]ान धन हो, ऐश्वर्य हो और बड़ा साम्राज्य हो किन्तु उसका [illegible]रीर निरोग न हो तो उसके लिये सारे साधन व्यर्थ हैं। [illegible]सार में बड़े बड़े आनन्द और सुख हैं किन्तु उन्हें स्वस्थ पुरुष [illegible] उपभोग कर सकता है। घर में अनेक प्रकार के सुस्वादु [illegible]ोजन बने हैं किन्तु आप रोगी हैं, आपके लिये यह समस्त [illegible]ार्थ विष तुल्य है। आपके यहां धन है, आज्ञाकारी पुत्र है, [illegible]र परम सुन्दरी गृहिणी भी है किन्तु आप अस्वस्थ हैं तो [illegible]ापके लिये सब व्यर्थ हैं। "जी सुख तो जहान सुख" आवश्यक
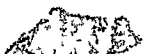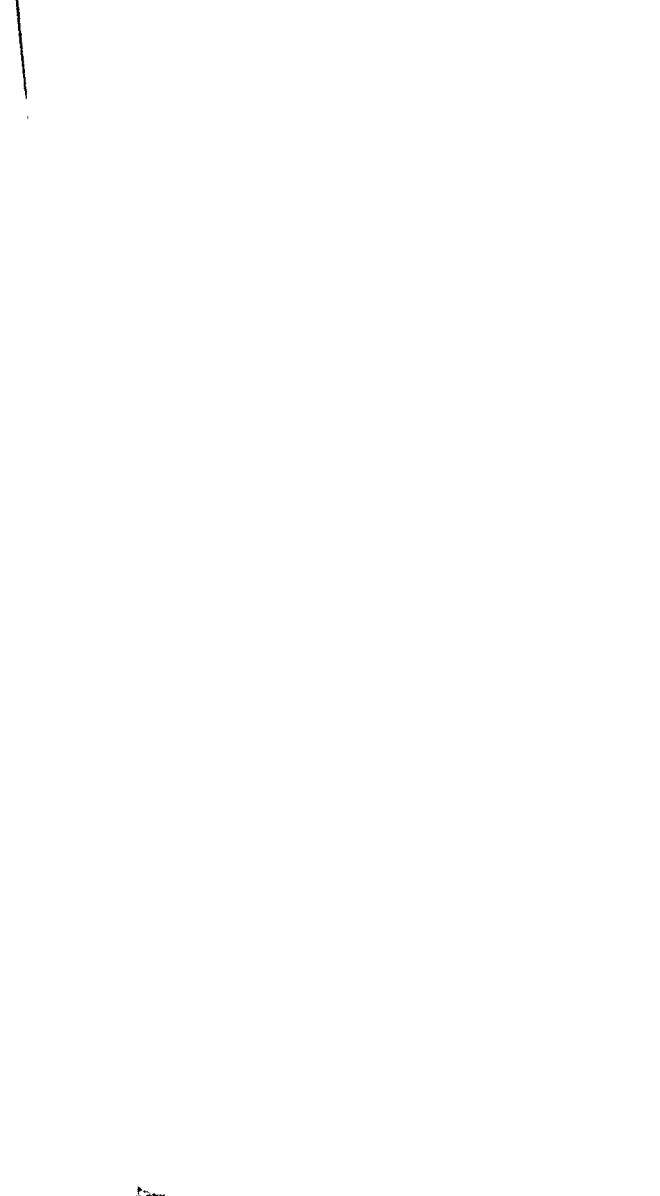
खेल और व्यायाम शारीरिक उन्नति, मनोरंजन और रक्त संचा के अभिवर्द्धन के लिये ही किये जाते है।

प्राय: ऐसा नित्य व्यवहार मे आता है कि हम कठिन काम करते-करते एक साथ ऊब जाते हैं और हमारा मन काम करने मे नहीं लगता। ऐसे अवसर पर हमे अवश्य काम छोड़ देना चाहिये। ऐसे अवसर पर टहलने को खुली हवा मे निकल जाना चाहिये या कोई मनोरंजन का काम आरंभ कर देने से वह स्वाभाविक क्लान्ति दूर हो जाती है और शरीर मे एक नवीन स्फूर्ति आ जाती है। मन मे एक प्रकार का आनंद अनुभव होने लगता है। इस परिवर्तन का परिणाम यह भी होता है कि हम स्वस्थ्य होकर फिर कठिन परिश्रम करने के योग्य हो जाते है। मानसिक परिश्रम के पश्चात् खेलने कूदने से या टहलने से एक अनिर्वचनीय आनद और सुख अनुभव होता है जो लिखने मे नहीं आ सकता। जीवन मे एक विकास और नवीन स्फूर्ति ऐसी आती है जो अकथनीय है। खेलते या टहलते समय मानसिक चिन्ताओ को एक दम भुला देना चाहिये। इस समय की चिन्तायें शरीर को बहुत हानि पहुँचाती है। खेल मे मन को भी सपति बनाना चाहिये। जब यह सपति हो जावेगा तो जीवन की आधी परेशानी हल्की हो जॉयगी। खेलो मे कभी छल कपट और द्वेष के भाव न रहने चाहिये, छल कपट और द्वेष के भाव खेल कूदमे लाभ के स्थान पर हानि ही अधिक करते है।

हमारी क्लान्ति और आलस्य को दूर करने के लिये खुली हवा मे टहलना सब से उत्तम साधन है। सुबह शाम को १ घंटे भर का टहलना जितना आरोग्यप्रद सिद्ध हुआ है उतना कोई अन्य साधन नही। हमे चाहिये कि हम नगर की गंदी और दूषित गलियो के वातावरण से निकल कर लहलहाते खेत और पुष्पो से लदे उपवनो की सैर को निकल जाया करे।

"सदाचार और शिक्षा"

विचार तालिकाएँ:—

(१) सदाचार का वास्तविक रूप और उसका महत्व

(२) क—सदाचार ही मनुष्य का सर्वस्व है

ख—मनुष्य का मूल्य उसके व्यक्तित्व से नहीं वरन उसके शील, विनय और आचरण से है

ग—चरित्र बल के आधार पर विश्व में मान पाया है

घ—मनुष्य का धन और स्वास्थ्य चला गया तो सब कुछ चला गया किन्तु सदाचार के चले जाने पर सर्वस्व चला गया।

(३) सदाचारी महा विपत्ति में भी अपने सिद्धान्त से विच-लित नहीं होता

(४) क—चरित्र हीन व्यक्ति ससार में सिर ऊँचा नहीं कर सकता

ख—वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने सदाचार का दिवाला निकाल रक्खा है

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की मानवी शक्तियों का विकसित करना है। बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त कर लेना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। शिक्षा वह है जो हमे सदाचार के पथ पर चलने को अग्रसर करे। मनुष्य का मूल्य उसकी उपाधियों में नहीं है

... उसके सदाचार में है। दम्भ, मक्कारी और ईर्षा जहाँ ... करती है वहाँ शिक्षा का नाम लेना शिक्षा को कलंकित ... है। शील और विनय मनुष्य जीवन के भूषण हैं। ... विनय और शील के बाहर मनुष्य साक्षात् राक्षस है। ... का धनवान और विद्वान होना सहज है किन्तु चरित्र- ... होना कठिन है। संसार में व्यक्तित्व से नहीं वरंच उसके ... विनय और आचरण से है। धन, पद और विद्या का ... भी देखने में आता है किन्तु वह मान स्थाई नहीं होता। ... सन्मान में तो भय और स्वार्थ ही प्रधान होते हैं। धनी ... के आदर तो वही करेगा जिसे धन की अभिलाषा है। पद ... वही लोग सन्मान करेंगे जिन्हे पदाधिकारी से कोई अपना ... साधन करना है। किन्तु चरित्रवान का सन्मान सर्वत्र ... एक और समान ही होता है। विद्या, बल और ऐश्वर्य के ... हुये भी रावण संसार का वन्दनीय नहीं हो सका। किन्तु ... सेना और वैभव के न होने पर भी रामचन्द्रजी सदाचरण ... के बल पर पूजे गये। भगवान बुद्ध ने चरित्र के बल पर ... खडे होकर विश्व के अन्दर सन्मान पाया। कर्मचंद ... गांधी सदाचार के रथ में सवार होने के कारण ही संसार के ... अग्रसर हो रहे हैं।

सदाचार ही मनुष्य जीवन की सबसे बडी सम्पत्ति है ... सदाचार के समक्ष ज्ञान, वैराग्य और विभूति सब तुच्छ है। ... सदाचार और सद्‌गुणों को तराजू में रख के तौलेंगा तो ... सदाचार ही का पल्ला भारी रहेगा। एक अंग्रेजी कहावत है— "धन चला गया तो कुछ नहीं गया, यदि स्वास्थ्य चला गया तो कुछ चला गया, और यदि सदाचार चला गया तो सर्वस्व चला गया।" निस्सन्देह जीवन में आचरण ही मुख्य वस्तु है। "आचार परमो धर्म" अर्थात् सदाचार ही परम धर्म है।

हमने आर्य ग्रन्थों का अध्ययन किया, बड़े बड़े धर्म के तत्व को पहिचाना, किन्तु हमने उनके बनाये हुये नियमों के अनुसा अपना आचरण नहीं बनाया तो वह समस्त हमारा स्वाध्या और जानकारी व्यर्थ ही हुई। यह समस्त परिक्रियायें तो वैस ही रहीं जैसे किसी गधे पर चन्दन का गट्ठा लादना जिससे बोझ तो मरता रहा किन्तु उसे लाभ कुछ नहीं हुआ। सदाचा उन सद्गुणों का समूह है जो हमारे व्यवहारिक जीवन सम्बन्ध रखते हैं। विनय, शील, उदारता, धैर्य और निर्भयत के सिद्धान्तों को पालन करते हुये निर्लोभ अपने कर्तव्य पथ पर अड़े रहना ही सदाचार है। विनय शिक्षा का भूषण है। विनय हृदय की भावनाओं में पवित्रता लाता है। दूसरों का सत्कार, अपराधियों के प्रति क्षमा, विरोधियों के प्रति सत्कार के भाव रखना उदारता है। कठिन से कठिन परिस्थिति में अपने सिद्धान्तों पर अटल बने रहना, और सकट काल में विचलित न होना धैर्य कहलाता है। भय या लालच वश अपने विचारों को छिपाना भी एक प्रकार का दुराचार ही है।

सच्चे सदाचारी वह है जो विपतियों के पहाड टूटने पर, अथवा अपना सर्वस्व छिन जाने पर, अथवा फासी के तख्ते पर लटकते हुये भी अपने सिद्धान्तों से विचलित नहीं होते।

भीष्म पितामह ने भयकर परिस्थिति में भी अपने प्रण को नही छोडा। दृढ़-प्रतिज्ञ कर्ण अपनी आनपर अडा रहा। प्रताप अपनी प्रतिज्ञा से विचलित नहीं हुआ। उपर्युक्त पुरुषों में वही गुण थे जिनपर उन्होने आचरण किया जिसके कारण वह आज तक ससार के सर्वमान्य हो रहे है। इसमे कोई सन्देह नहीं जो व्यक्ति आपत्ति अथवा सकटों से घबराकर अपना साहस खो देते हैं वह ससार के अन्दर कुछ कार्य नही कर सकते। ससार

...व्यक्ति अपने सिद्धान्तो और प्रतिज्ञाओं पर अटल रह
...हैं जिन्होंने विवेकतः अपनी इन्द्रियों पर पूरी विजय
...करली है। इन्द्रियो पर विजय पाये विना इस क्षेत्र मे
...होना कठिन है।

...चारी व्यक्ति ही दृढ़ प्रतिज्ञ हो सकते हैं। सदाचार
...निग्रह के विना प्राप्त नहीं हो सकता। जिस व्यक्ति ने
...इच्छाओं और वासनाओं पर विजय प्राप्त करली है वही
...चार के सिद्धान्तों को पूरी भाँति पालन कर सकता है।
...त्रहीन व्यक्ति ससार में अकड़ कर नहीं चल सकते और न
...सार मे अपना सिर ऊँचा कर सकते हैं। उनमे साहस का
...भाव होता है। वह सदैव अपनी निर्बलताओ के कारण दवे
...रहते हैं। वह अनुचित तरीके से दवाये जाने पर भी दमनकारी
...का सामना नहीं कर सकते। चरित्रहीन व्यक्ति अपना स्वयं
...सुधार नहीं कर सकता है? वह अपने न्यायोचित अधिकारों से
...से हाथ धो वैठता है। उसके विचार और प्रतिज्ञायें वहुत
...निर्बल होते हैं। उसके अन्दर सद्इच्छायें विकसित ही नहीं
...होतीं। वह सदैव दु.खी रहता है। उसकी मनोवृत्तिया सदैव
...चचल रहती है। अत ससार के श्रेय उसके पास आ ही
...नहीं सकते।

अत· मनुष्य का कर्तव्य है कि वह वचपन ही से चरित्र की
ओर विशेष ध्यान रक्खे। चरित्र निर्माण के लिये वाल्यकाल ...
सर्वोत्तम समय है। इस समय का चरित्र-निर्माण की ...
समस्त जीवन काम आयेगा। अत शिक्षा और सदाचार ...
साथ ही साथ चले। कुरूप, सादावेष भूषा वाला सदाचारी ...
विद्यार्थी सुन्दर अँग्रेजी वेष-भूषा से अलकृत ...
विद्यार्थी से सहस्र गुना उत्तम है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ...

सदाचार का दिवाला निकाल रक्खा है। सदाचार यदि कह
जीवित रह गया है तो कहीं सीधे, भोलेभाले ग्रामीण मनुष्यों
वहाँ विनय है, शील है और उदारता है। वहाँ सद्-भावनायें
और सद-इच्छायें ही अपना प्रभुत्व जमाये हुए हैं। वहीं से
विश्व मे शान्ति के प्रसारक उत्पन्न होगे। वहीं से क्रान्ति की
चिनगारी छूटेंगी। संसार से व्यभिचार और अनाचार को
जलाकर सदाचार का साम्राज्य स्थापित करेंगी। तब ही शिक्षा
का वास्तविक उद्देश्य सिद्ध होगा।

भाग्य परीक्षा में संलग्न हो जाती हैं। इस दौड़ मे दौ
प्रत्येक जाति का परम धर्म हो जाता है। जो जातियाँ इस
के मैदान मे पीछे रहेंगी वह अवश्य एक न एक दिन संसार
अपना अस्तित्व मिटा देंगी। पीछे रहने वाली जातियाँ अ
विजेता जातियो की गुलाम बन कर रहती हैं। उनकी स्वतं
विजेता जातियाँ अपहरण कर लेती हैं और वह संसार
अपना अस्तित्व अपाहिजों का सा रखती हैं। यह अधः पा
जातियाँ विचारो और भावनाओं मे इतनी गिर जाती हैं
उन्हे अपनी पराधीनता, नपुंसकता और निर्जीवता पर ल
भी नहीं प्रतीत होती। यह अवस्था जातियों के पतन की
सीमा पर पहुँचने पर होती है। किन्तु चतुर और बहा
जातियाँ इस दासता के शोक को अधिक काल तक धारण
कर सकतीं। वह अपने सतत परिश्रम और अध्यवसाय के
पर खडे होकर इस कलक को शीघ्र से शीघ्र मिटा डालती
यही विश्व-व्यापी चक्र ससार मे चल रहा है, इस सघर्ष मे प्रत्
जीवित जाति भाग लेना अपना कर्तव्य समझती है। अब
उन साधनों को रखने की चेष्टा करता हूँ जिन पर चल
जातियाँ अपने गौरव को कायम रखती हैं और सदैव उन्नति
शिखर पर चढती ही रहती हैं।

१—समाज मे विद्वेष और असतोष के कारण कलह औ
अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। उन्नति के पथ पर चल
वालों को चाहिये कि सब मे प्रथम अपनी समाज में
इन्हीं दुर्गुणों को दूर करने की चेष्टा करें। यह कार्य सुचा
रूप से तब ही सम्पन्न हो सकता है जब समाज में प्रे
और सहानुभूति के भाव फैलाये जाते हैं।

इस कार्य मे व्यक्ति गत स्वार्थ बहुत बाधा डालते हैं। ज
व्यक्ति-गत स्वार्थों की मात्रा कम होने लगती तब ही प्रे

[illegible] के साथ [illegible] प्रेम की मात्रा [illegible] परस्पर मेल-जोल और परस्पर [illegible] के [illegible] हैं। [illegible] संगठन को बलिष्ठ बनाने में [illegible] सिद्ध हुई है। जिस जाति में जितना ही बलिष्ठ [illegible] होगी, वह जाति अधिक शक्तिशाली है। बिना [illegible] कोई जाति संसार में उन्नति नहीं कर सकती। प्रायः [illegible] जातियां परस्पर लड़ाई झगड़े और मार काट में लगी [illegible] हैं। इन जातियों को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिये [illegible] में संगठन के भाव जागना बड़ा अनिवार्य है। इसके [illegible] जाति उन्नति की ओर चल सकने को समर्थ नहीं हो [illegible]।

२—दूसरी बात जो जातियों को उन्नति के पथ पर ले जाती है वह समाज की आर्थिक स्थिति है। देश की आर्थिक स्थिति ठीक किये बिना आगे बढ़ना कठिन है। आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिये भी सामाजिक संगठन की जरूरत है। [illegible] भी जातियाँ अपनी सारी शक्ति परस्पर प्रतिद्वन्द्वता [illegible] ही नष्ट कर देती हैं। जिससे सामाजिक बड़ी हानि होती है।

[illegible]कला हो, कृषि हो, व्यापार हो सब में पारस्परिक सहयोग और संगठन की बड़ी आवश्यकता है। समाज का कोई [illegible] बिना सहयोग के सम्पन्न नहीं होते। यदि समाज में [illegible] अपनी-अपनी ढपली और अपना अपना राग [illegible] तो समाज में संघर्ष बढ़ जायगा जिससे सामाजिक उन्नति में बाधा आयेगी।

३—तीसरी बात देश को ऊँचा उठाने की यह है कि समाज में स्वच्छता और मनोरंजन के साधनों का आविर्भाव किया

जाय। स्वच्छता के भावों का उदय जब ही संभव है ज मनुष्य के हृदय में सेवा के भाव जगें। विना सेवा-भाव व्यक्तिगत स्वच्छता का भाव ही प्रबल रहता है। मनोरं तो विना सहयोग के हो ही नहो सकता। पबलिक लाइ आदि से जनता का जहाँ मनोरंजन होता है वहाँ पारस्परि प्रेम और सहानुभूति के भाव भी सजग होते हैं। से समितियो के प्रसार से स्वच्छता रक्खी जा सकती है।

४—समाज को उन्नतिशाली बनाने के लिये आवश्यक है। समाज मे समता के भावो का समावेश किया जा क्योकि जब तक समाज मे छोटे बड़े और ऊँच नीच भाव भरे रहेंगे, जब तक समाज मे प्रेम नहीं तब त सहयोग प्राप्त होना असम्भव है। जनता मे समता के भा के साथ ही साथ समानाधिकारो का होना भी बड आवश्यक है। इस कार्य को करने के लिये सद्भावनाओ वडी आवश्यकता है। समता के बिना समाज मे शान्ति क साम्राज्य स्थापित करना कठिन है।

५—पाँचवीं बात जो देश को उन्नति-पथ पर ले जाने सहायक होगी। वह देश मे सुशिक्षा की सुव्यवस्था करना है शिक्षा के बिना समाज मे सुव्यवस्था नहीं आती। सामाजि उच्छृङ्खलताओं और सकुचित भावनाओ का नाश बिना शिक्षा के नही होता। शिक्षा मानवी हृदयों को विस्तीर्ण बनाती है। सकुचित मनोभावनाओं को दूर करके विशाल हृदयता और उदारता के भावों का मानवी हृदय मे जगाती है। शिक्षित जनता मे सगठन का रूह जल्दी फूँकी जाती है।

६—देश को उन्नत बनाने के लिये छटी बात यह है कि देश की कला-कौशल को उन्नति दी जाये। कला कौशल की उन्नति

...न में देश की उन्नति है। समाज में समस्त सुख ...कला कौशल की उन्नति से प्राप्त हो सकते हैं। संसार ...शाली जातियाँ अपने कला कौशल ही के कारण ...स्थान दाबे हुई हैं। कला कौशल की उन्नति समाज ...और संलग्नता के भाव सजग करती है।

...समस्त भावनों के साथ-साथ कौपरेशन और संगठन ...आवश्यकता है। संगठित जातियाँ संसार में अपना ...रखती हैं। संगठित जातियों की ओर बड़े-बड़े विशाल ...आँख उठाकर नहीं देख सकते। अतः उपर्युक्त गुणों के ...संगठन का होना बड़ा ही आवश्यक है। बिना संगठन ...जाति अथवा राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता।

भारत में बेकारी के कारण और उसके दूर करने का उ

विचार तालिकाएँ.--

(१) बेकारी के कारण:—

क—नौकरी के लालच ने बेकारी की समस्या ज
कर दी

ख—मशीनो का बाहुल्य

ग—वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे व्यवहारिकता
अभाव

घ—नौकरी की मनोवृति

ङ—बेकार आदमी खतरे की वस्तु है

च—निर्गुण शिक्षा

छ— उद्योग धधो की कमी

(२) बेकारी दूर करने के उपाय

क—घरेलू उद्योग और स्वतत्र व्यवसायो को प्रोत्सा
दिया जाय

ख—सरकारी पदो पर भारतीयो की नियुक्ति

ग—जन सख्या की वृद्धि बेकारी बढाती है

(३) उपसहार—सरकार और जनता का प्रयत्न

बेकारी समस्या भारत मे भयकर रूप धारण करती जाती
है। यह बेकारी शिक्षित जनता ही मे नही है वरन भारत

...समाई के सामने यह समस्या आई हुई है। भारतवर्ष
...गण विदेशी जातियों के हाथ में इसकी शासन की
... आने के साथ ही साथ आरंभ हुआ। हमारे यहाँ
...व्यवस्था के अनुसार पैतृक काम करने का चलन था।
...मनुष्य को अपने घर से बाहर कोई काम सीखने जाने
...आवश्यकता न थी। सारी व्यवहारिक शिक्षा बालक
...से मरण पर्य्यन्त घर में ही देखता और सीखता था।
...संस्कृति में बालापनहो से व्यवहारिकता का समावेश
...। भारत का एक जाति का बालक अपने पैतृक काम को
...दूसरा काम करते नहीं देखा जाता था। किन्तु आज
...सारी यह प्राचीन परिपाटी नष्ट प्राय सी होती जाती है।
...के शिक्षित नवयुवकों की पैतृक कामो के प्रति उदासीनता
...की बेकारी में बड़ी मदद कर रही है।
...पश्चिमी जातियों के सम्पर्क और विज्ञान की वृद्धि ने
...सामाजिक संगठन में अधिक गड बड उत्पन्न कर दी
...चला जा रहा है।
...व्यक्तिगत स्वार्थों का प्राबल्य बढता [illegible]
...गत [illegible]
...में यथोचित [illegible] नहीं [illegible]
...गड बड [illegible]
...बेकारी का कम [illegible]
...नहीं [illegible]
...व्यवहारिक जीवन [illegible]
...न केवल नौकरी [illegible]
...भी बेकारी [illegible]
...देने के लिये [illegible] कानून [illegible]
...[illegible] नहीं है [illegible]
...नहीं होता [illegible]

बेसिक-शिक्षा

विचार तालिका: —

(१) अंग्रेजी शिक्षा ने हमारे भाव, भाषा और संस्कृति को प्रायः नष्ट कर दिया है

(२) वर्तमान शिक्षा-प्रणाली के परिवर्तन के बिना राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता

(३) बेसिक-शिक्षा से लाभ: —

क—बालक की मानसिक शक्तियां विकसित होती हैं

ख - व्यवहारिक शिक्षा दी जाती है

ग—दस्तकारी द्वारा धन उपार्जित करना पाठशाला में ही सिखाया जाता है जिससे घर वालो पर जोर न पड़े

घ -७ वर्ष से १४ वर्ष तक बेसिक-शिक्षा अनिवार्य कर दी है

ङ--गांव और शहर की शिक्षा का भेद मिटा दिया है

च--कताई, बुनाई और बागवानी का पूरा प्रबंध किया गया है

छ—बेसिक-शिक्षा में नागरिक कर्तव्य और देश-सेवा का पाठ पढ़ाया जाता है

ज—बेसिक-शिक्षा नवयुवक को नौकरी की चिन्ता में इधर उधर घूमने से रोकता है

पर ध्यान दिया गया है कि जिस विषय में उन्हें दिलचस्पी हो रक्खें। साथ ही यह भी व्यवस्था की गई है कि बालक और बालिकाओं की शिक्षा साथ ही साथ चले। दस वर्ष की अवस्था के बाद बालक और बालिकाओं का प्रबंध पृथक पृथक कर दिया जाय।

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में यह दोष है कि वह बालकों को नागरिक कर्तव्यों का बोध नहीं कराती। देश-सेवा और राष्ट्रीयता के भावों से उन्हें दूर रक्खा जाता है किन्तु बेसिक-शिक्षा में इन बातों पर विशेष ध्यान रक्खा गया है। इसमें सन्देह नहीं बेसिक-शिक्षा भारत की निरक्षरता और बेकारी को मिटाने में पूर्ण सफल सिद्ध होगी। साथ ही किसानों को कृषी-कार्य में ट्रेन्ड नव युवक प्राप्त होंगे, जिससे उनकी कृषी व्यवस्था का कायापलट हो जायगा। दूसरे बालक स्कूल से निकल कर नौकरी की तलाश में दरदर मारा मारा न फिरेगा। वह किसी प्रकार की दस्तकारी को अपनाकर अपना जीवन-निर्वाह करने लगेगा। अतः प्रत्येक भारतीय का परम कर्तव्य है कि वह बेसिक शिक्षा को अवश्य अपनावे। भगवान वह दिन शीघ्र लाये कि हमारे बेसिक-शिक्षा पाये नवयुवक देश में एक घोर परिवर्तनकारी स्थिति उत्पन्न कर दें।

यू० पी० में साक्षरता-प्रसार और प्रौढ़-शिक्षा

प्रचार तालिकायें:—

(१) साक्षरता की आवश्यकता

(२) साक्षरता-प्रसार-योजना और कॉंग्रेसी सरकार

अ—रीडिंगरूम और पुस्तकालयों की स्थापना

ब—बोनस और सहायता

(३) अ—शिक्षा का माध्यम

ब—गणित-भूगोल की साधारण शिक्षा

स—परीक्षा और प्रमाण-पत्र

(४) साक्षरता-दिवस और जुलूस का आकर्षण

(५) साक्षरता के लिये सुभाषा और अपील

वैज्ञानिक उन्नति ने संसार को बहुत छोटा बना दिया है। साइन्स की उन्नति के साथ ही साथ मनुष्य की नई आवश्यकतायें [illegible] होती जारही हैं। अब गाँव के रहने वाले भी संसार की [illegible]नाओं के प्रभाव से नहीं बच सकते। राजनीतिक उन्नति व [illegible] साथ ही साथ गाँव वालों के उत्तर-दायित्व और कर्तव्य बढ़ते [illegible] जा रहे हैं। धीरे-धीरे शासन की बागडोर भी अब उनके [illegible] में आती जारही है। यद्यपि संस्कृति में भारत के ग्रामीण [illegible] से पीछे नहीं हैं किन्तु वह लिखने पढ़ने की योग्यता के [illegible] जिम्मेदारी को भलीभाँति नहीं वहन कर सकते [illegible]

हिन्दुस्तानी किसान

१—प्रस्तावना—विकराल और प्रचंड गर्मी में किसान के कार्य की तत्परता। जंगल का सन्नाटा। पशु-पक्षियों का जलाशय और वृक्षों की शरण लेना। कृश गात्र शरीर, पिचकी आँखें, म्लान मुख, फटी लंगोटी, नंगे पैर पसीने से तर किसान का झुलसा शरीर। रूखा सूखा भोजन।

२—किसान का प्रातःकाल से सबेरे उठना। जंगल में जाकर कठिन परिश्रम करना। किसान की स्त्री का चक्की चलाना, गोबर थापना, और कुएँ से पानी भरके लाना। खेती के कार्यों में स्त्री का हाथ बटाना उसको जंगल में भोजन पहुँचाना।

३—किसान की दरिद्रता, ऊँचे लगान की मार, साहूकार के कर्ज का बोझ, पैदावार की न्यूनता, व्यापारी, पटवारी और कारिन्दा की ठगई। ज़मींदार की भेंट, बिला कारण पुलिस वाला का धमका। जमादार का डंडा लेकर उसके खलियान पर धरना। महाजन की कुरकी। गिरफ्तार होकर जेल की हवा खाना। सारी परेशानियों का बड़े सन्तोष और धैर्य के साथ सहना उसका त्याग और तपस्या न कहा जाय तो क्या कहा जाय?

४—अन्य देशों की अपेक्षा भारतीय किसान की दयनीय दशा। खेतों और आबादी का बेढंगा होना। खाद की कमी। परिश्रम का अभाव। आलस्य का प्राबल्य। वैज्ञानिक ढंग से खेती करना। रूढ़ि-वाद का शिकार। बिखरे खेतों और रखवालों का अभाव ऐसे कारण हैं जो भारतीय किसान को पनपने नहीं देते।

(ग) पत्र भेजने वाले का नाम तथा पूरा पता। इसके ... पता लिखना होता है जिसमें पत्र पाने वाले का पूरा ... होता है।

पुरानी प्रथा के अनुसार पत्र लिखना

पुरानी प्रथा में प्रशस्ति में बड़ों को 'सिद्धि श्री' और छोटों ... बराबर वालों को 'स्वस्ति श्री' लिखा जाता है। पुराने पत्रों ... श्री' लिखने की बड़ी परम्परा थी। गुरु को ६, स्वामी अथवा ... को ५, शत्रु को ४, मित्र अथवा बराबर वालों को ३, नौकर ... २, और पुत्र तथा स्त्री को १ श्री लिखी जाती हैं। सन्यासी ... और परमेश्वर के लिये १०८ श्री लिखने की प्रथा थी। ... श्री लिखने की परम्परा लगभग मिट सी गई है।

पुरानी प्रथा में पते के अतिरिक्त किसी स्थान पर भी पत्र में ... का नाम नहीं लिखा जाता। सदैव बड़ों को आदर-सूचक ... से संबोधित करते है।

बड़ों को 'सकल गुण-निधान पूज्य-पाद', 'सर्व गुण सम्पन्न' ... विशेषण शब्दों का ही प्रयोग करते हैं। बराबर वालों के ... 'मित्रवर कृपालु हितैषी' आदि विशेषणों का प्रयोग ... है। छोटों को चिरंजीव स्नेह-भाजन आदि विशेषण ... जाते हैं। अपराधिन ... लिख कर पत्र पूरा करते हैं।

पुरानी प्रथा में बड़ों के ...

कोई कोर्ट फीस नहीं ली जाती थी। बड़े-बड़े मामलों में मुद्दई को दावा दायर करते समय जायदाद का चौथाई भाग देना पड़ता था। किन्तु फैसले बड़े सस्ते निबटते थे। पचायत की कार्रवाही सब जबानी रहती थी, केवल पंचायत का फैसला लिखा जाता था। वकील उस जमाने में कोई नहीं था। हाँ, पैरवी नातेदार कर सकते थे। पंचायत के फैसले सही और निष्पक्ष ते होते थे।

इन सभी बातों की तुलना यदि आजकल के हालात से की जाय तो केवल इतना ही कहना पड़ेगा कि आजकल की मुकद्मेबाजी से इन्साफ माँगना एक बवाल है। "जो जीता वह हारा जो हारा वह मरा" की जो मसल कही जाती है वह बिलकुल सही है। आज मामूली मुकद्मे लड़ने के लिये फरीकैन को काफी तादाद में रुपया खर्च करना पड़ता है। कोर्टफीस, तलबाना वकील की फीस, रिश्वतें आदि किस कदर भार मालूम होती है।

यदि गाँव के रहने वाले अपने गाँव में पचायतें कायम करके मामला तैकर लिया करें तो उन्हें कितना फायदा हो, निस्सन्देह वास्तविक न्याय पचायतो द्वारा ही होता है क्योंकि पच सब गाँव क ही रहने वाले होते है, पच लोग फरीकैन को गले मिलाकर आयन्दा को अदालतो का मिटा देते है।

पचायतो के विषय मे मेरे ऐसे विचार है, संभव विचारो मे कुछ कमी हो। आशा है कि आप सूचित करेंगी, पूज्य पिता जी से चरण छूना क सत्यवती का प्यार।

आपका प्रिय

कोई कोर्ट फीस नहीं ली जाती थी। बड़े-बड़े मामलों में मुद्दई दावा दायर करते समय जायदाद का चौथाई भाग देना ... था। किन्तु फैसले बड़े सस्ते निबटते थे। पंचायत की कार्रवा... सब जबानी रहती थी, केवल पंचायत का फैसला लिखा जाता था। वकील उस जमाने में कोई नहीं था। हाँ, पैरवी नातेदार कर सकते थे। पंचायत के फैसले सही और निष्पक्ष ही होते थे।

इन सभी बातों की तुलना यदि आजकल के हालात से की जाय तो केवल इतना ही कहना पड़ेगा कि आजकल की मुकद्दमेबाजी से इन्साफ माँगना एक बवाल है। "जो जीता वह हारा जो हारा वह मरा" की जो मसल कही जाती है वह बिलकुल सही है। आज मामूली मुकदमे लड़ने के लिये फरीकैन को काफी तादाद में रुपया खर्च करना पड़ता है। कोर्टफीस, तलवाना वकील की फीस, रिश्वतें आदि किस कदर भार मालूम होती है।

यदि गाँव के रहने वाले अपने गाँव में पंचायतें कायम करके मामला तैकर लिया करें तो उन्हें कितना फायदा हो, निस्सन्देह वास्तविक न्याय पंचायतों द्वारा ही होता है क्योंकि पंच सब गाँव के ही रहने वाले होते है, पंच लोग फरीकैन को गले मिलाकर आयन्दा को अदालतों का मिटा देते है।

पंचायतों के विषय मे मेरे ऐसे विचार है, संभव मेरे विचारो मे कुछ कमी हो। आशा है कि आप कमियों से सूचित करेंगी, पूज्य पिता जी से चरण छूना कहना। प्रिय सत्यवती को प्यार।

आपका प्रिय वत्स,

महेश

"शक्ति बढ़े फुर्ती लहै, चोट न अधिक पिराय।
अन्न पचे चंगा रहे, कसरत सदा सहाय॥"

संसार मे जितने भी महापुरुष हुये हैं, वे किसी न किसी रूप मे व्यायाम अवश्य करते थे। कोई टहलता था, कोई प्रकृति-निरीक्षण के बहाने जंगलों मे निकल जाता था, और कोई घोड़े पर चढ़ कर आखेट करने ही चले जाते थे। कुछ लोग गेंद खेल कर ही स्वास्थ्य उपार्जन करते थे। अभिप्राय यह है कि किसी न किसी प्रकार नियमित व्यायाम करके अपने शरीर को बलिष्ट बनाते थे।

जब तक तुम नियमित व्यायाम द्वारा अपने को स्वस्थ न बना लोगे तब तक तुम्हारा शरीर और मस्तिष्क ठीक नहीं रह सकता। यही नहीं कि तुम हॉकी ही खेलो। फुटबॉल खेलिये, वॉलीबॉल खेलिये, कबड्डी खेलिये, नदी मे तैरिये, प्रातः काल लम्बे घूमने निकल जाइये। कहने का अभिप्राय यह है कि किसी न किसी तरह शरीर का हिलाइये, डुलाइये। यह कभी मत कहो कि समय नहीं मिलता, अथवा पढ़ने मे बाधा आती है। यदि तुम नियमित व्यायाम नहीं करोगे तो याद रक्खो तुम संसार मे अपना जीवन सुखमय नहीं बना सकते।

मुझे अब पूर्ण आशा है कि तुम मेरे लेख पर पर्याप्त ध्यान दोगे। और अपने जीवन को सुखी बनाने मे कोई कसर शेष न रक्खोगे। प्रिय विश्वनाथ से प्यार कहना। अपने शास्त्री जी से भी मेरी सादर नमस्ते कहना। किमधिकम्।

तुम्हारा प्रिय भ्राता,
श्रीनाथसिंह xıı

संचित धन था, वह सब राष्ट्र-प्रेम की वलिवेदी पर चढ़ गया। संबंधित परिवार भूख से व्यथित हो उठा, तब कहीं मेरी घोर निद्रा टूटी।

जनवरी सन् २२ के दिन थे ख्वाजा अब्दुल मजीद साहब एम० ए० प्रिन्सपल राष्ट्रीय-विश्व-विद्यालय ने मेरी करुण कथा सुनी और मुझे आश्वासन दिया कि 'राष्ट्र-सेवा के मार्ग को तुम्हें थोड़ा सा घुमाव दे देना चाहिये? सेवा और उदर पूर्ति दोनों कार्य साथ साथ चलाइये। स्कूल और कॉलेजों को अपना कार्य-क्षेत्र निश्चित कीजिये। क्योंकि राष्ट्रीय-भावनायें जब तक नवयुवकों में नहीं भरी जायेंगी, तब तक वास्तव में राष्ट्र का उत्थान होना संभव नहीं। मेरे हृदय पर उनके उपदेशों का बड़ा प्रभाव पड़ा। मैंने उनकी अक्षर अक्षर बात मानी। ख्वाजा साहब ने उसी दिन मुझे मौ० सआदत अली खां एम० एम० हैड मास्टर मुसलिम यूनिवर्सिटी हाई स्कूल के पास भेज दिया। उन्होंने मुझे ४०) मासिक पर अपने स्कूल में अध्यापक रख लिया। उक्त मौलवी साहब, की सच्चरित्रता, नेकी, सत्यता, अहिंसा और सज्जनता की छाप आज तक मेरे हृदय पर अंकित है। ऐसा महात्मा अभी तक मुझे कोई दूसरा नहीं मिला।

राष्ट्रीय और जातीय भावनाओं को फलने फूलने का पूरा अवसर मौलवी साहब की सेवा में रहने से मिला। उनके यहाँ संसार की गति विधि को समझा। संसार की सभ्यता और संस्कृतियों से विज्ञता प्राप्त की। हिन्दू मुसलिम एकता के गौरव को भी हृदयगम किया। किन्तु भाग्य में कुछ और ही बदा था। सितम्बर सन् १९२५ ई० के पुनीत दिनों में भाग्य ने फिर उछाल भरी और ५०) मासिक पर चौ० शिवसिंह एम० एम० प्रिन्सपल जाट कॉलेज लखावटी (बुलन्द शहर) मुझे बरबस ख्वाजा साहब से मांग ले गये।

की भावनाओं की सराहना किये विना नहीं रह सकता। उनकी
दता, सरलता, और गुण ग्राहकता बड़े ऊँचे दर्जे की है। उनकी
स्वर-प्रतिभा ने मुझे ताड़ लिया और अपने दर्शन के क्षण ही
मे अपने स्कूल में रख लिया. वे क्या देते हैं और मैं क्या लेता
है सब 'सेवा-भाव' शब्द में निहित है। किन्तु मैं उनकी सेवा
में सन्तुष्ट हूं। केवल इस आशा पर कि देहली देवताओ की पुरी
है वहाँ पर कोई भूखा नंगा नहीं रहता जीवन चला रहा हूँ।

फिर मित्रवर कहो, प्रसन्नता कैसी? उदासीन हो तो क्या
हो? किस आशा पर उत्साह बढ़े। इधर ढलती जवानी, दूसरे
आशा का ह्रास। तीसरे जवान भाई और लड़के की मौत
व्याकुल किये रहते है। हाँ, काम रात दिन करता हूँ क्योंकि
वर्तमान दशा को स्थापित रखना भी आवश्यक है। साथियो में
प्रतिष्ठा बनाये रखना भी तो उचित जान पड़ता है। इसके
अतिरिक्त यहाँ कोई हृदय-ग्राही मित्र भी नहीं जिस से हँस
खेल समय कट जावे। अब किसी को अपना नहीं पाता।
ईश्वरेच्छा बलवती।

आपका हतोत्साह मित्र,
"वासुदेव शर्मा"

शिष्य का पत्र

(कुसंगति की हानियां तथा सुसंगति से लाभ)

शान्ति-निकुञ्ज
दलीपुर-इसलाम-अलीगढ़
३-८-४०

शील स्वरूप कृष्ण किशोर

बड़े शोक की बात है कि अनेक बार समझाने पर भी उनका
को नहीं छोड़ते हो। प्रिय देखो मैं अपने ४८ वर्ष के अनुभव से

विवाह का निमन्त्रण-पत्र

॥ ओ३म् ॥

प्रभु के संयोग से, धर्माश्रम हित नर नार।
देश उद्धार हित कर रहे, संगठन विविध प्रकार॥
इस कारण प्यारे पुत्रि लाल मुकुन्द भगवान।
सफल यत्न ये होत हैं, देशोन्नति पर ध्यान॥
चन्द्र भाव है, मन मुद, करत सकल के काज।
देश भक्त को देत हैं, सुन्दर सुखद, स्वराज॥

श्रीमान्, पं० रामभूदत्त जी शर्मा बी० ए० बी० टी० सेवा में सविनय निवेदन है कि परमात्मा की असीम कृपा से मेरे पुत्र चिरंजीव देश भक्त 'काश्यप' A. A. G. का शुभ विवाह श्रीमान् लाला दाल मुकुन्द जी रस्तोगी मेरठ निवासी की विदुषी कन्या आयुष्मति स्वराज्य बाला से होना निश्चित हुआ है। विवाह की शुभ तिथि वैशाख शुक्ला १ मंगलवार संवत् १९९७ विक्रमी तदनुसार ८ मई सन् १९४० ई० है। अत विनम्र प्रार्थना है कि आप इस शुभ अवसर पर अपने इष्ट मित्रों के साथ पधार कर विवाह की शोभा को बढाइयेगा और मुझ अकिंचन को अनुगृहीत कीजियेगा।

आते हैं जिस भाव से, भक्तों में भगवान्।
उसी भाव से कृपा कर, दर्शन दें श्रीमान॥

देहली
२६, अजमेरी गेट।

आपका दर्शनाभिलाषी,
लक्ष्मणदास काश्यप "रोहितगी"

वैवाहिक कार्यक्रम

प्रीति भोज—वैशाख कृष्ण ३० चन्द्रवार, ७ मई सांयकाल ७॥ बजे।

पाणि-ग्रहण—वैशाख शुक्ला १ मंगलवार, ८ मई, मेरठ।

बढ़ार—वैशाख शुक्ला २ बुधवार, ६ मई।

विदा—वैशाख शुक्ला ३ गुरुवार, १० मई।

समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र

ग्राम-सुधार-ट्रेनिंग-केम्प
मैनपुरी
२० जौलाई, १६३८ ई०

माननीय, 'हिन्दुस्तान सम्पादक देहली'

आज ग्राम-सुधार-ट्रेनिग केम्प मैनपुरी का उद्‌घाटन संस्कार श्री पं० कैलाश नाथ काटजू न्याय मन्त्री यू० पी० के कर-कमलों द्वारा हुआ। माननीय मनोहरदास 'चतुर्वेदी' आर० डी० ओ० यू० पी० ने जलसे का प्रबंध किया। सब से प्रथम झंडा-अभिवादन हुआ। ऑर्गनाइजरों के एक ग्रुप ने एक आकर्षक और मनोहर गाना गाया। प० श्री कृष्णदत्त पालीवाल ने न्याय मंत्री के अपने डिवीज़न में पधारने पर धन्यवाद दिया, और उन्हे जनता की ओर से एक मानपत्र भेंट किया। इस अवसर पर प० श्रीराम शर्मा और आर० डी० ओ०, व आर० डी० चैयरमैन एटा, व मैनपुरी, आगरा, मथुरा अलीगढ़, एटा और मैनपुरी जिलों के जिलाधीश तथा आगरा डिवीजन के कमिश्नर साहब मौजूद थे। माननीय काटजू ने ऑर्गनाइजरों को उनके कर्त्तव्य समझाये, और कहा कि "हमने तुन्हे ग्राम-सुधार का बड़ा काम सुपुर्द किया है। तुम्हारा उत्तर-दायित्व बहुत

ऊँचा है। राष्ट्र की अब बागडोर तुम्हारे हाथ में है। राष्ट्र का उत्थान या पतन तुम्हारे हाथ है। चूंकि तुम पालीवालजी के परखे हुए सिपाही हो, इसलिये मुझे पूर्ण आशा है कि तुम राष्ट्र-निर्माण-कार्य में हमारा बहुत हाथ बटाओगे। ध्यान रहे तुम अपने कर्त्तव्य से मत गिर जाना। मैंने तुम्हें ग्रामवासियों की भारी आवश्यकताओं की ट्रेनिंग लेने के लिये केवल ३ मास को यहाँ भेजा है। यहाँ तुम्हें कृषी, कोऑपरेटिव, पशूपालन, डेअरी, पशु चिकित्सा और साधारण सी डाक्टरी की शिक्षा लेनी है। ताकि तुम देहात में जाकर पूर्णत ग्राम-निवासियों की सहायता कर सको।" इसके पश्चात् पालीवालजी और चतुर्वेदीजी के मार्मिक भाषण हुए। उपस्थिति लगभग दस हजार की थी। लाउडस्पीकरों का प्रबन्ध कर दिया गया था। सभा विसर्जित होते-होते घनघोर घटायें घिर आईं और घनघोर वर्षा होने लगी। मुहसिन बाग की कोठी से सब लोग खड़े होकर बरसात का मनोहारी दृश्य देखने लगे। इति।

प्रेषक—
'जगन्नाथ प्रसाद' मिश्र
बी० ए०,

शोक-पत्र

(मित्र को उसकी पत्नी की मृत्यु पर)

दारागंज
प्रयाग।
२२ मार्च, १६३६ ई०

प्रिय वर,

आज आपका हृदय-विदारक पत्र पढ़ कर चित्त व्याकुल हो गया। हाय यह क्या हुआ, अचानक आपके ऊपर कष्ट

पहाड़ टूट पड़ा! अरे वह परम पुनीता, पतिव्रता सुशीला किस लोक में जाकर लोप हो गई! सुशीला तुमने तो पाणि-ग्रहण के अवसर पर अपने पति देव का हाथ पकड़ कर प्रण किया था कि कभी आपका साथ न छोड़ूँगी। आज तुम अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध यह सहसा क्या नाटक करके अंतरधान हो गई? प्रिय-वादिनी सुशीला तुम्हे तो एक क्षण भी अपने पति से पृथक रहना वड़ा अखरता था, आज तुम कैसे निर्मोही वन कर महा यात्रा कर गई हो? क्या तुम्हे अपने प्राण से प्यारे ३ मास के बच्चे से भी मोह न रहा? हे नम्र-हृदया! तुम्हारा तो हृदय इतना कठार न था। अरे मैं क्या वकने लगा। इन बातों से मेरा क्या प्रयोजन?

प्रियवर, यद्यपि इस दुर्घटना ने एक तरह से आपका जीवन नीरस वना दिया है। किन्तु संतोष करने के अतिरिक्त अब कर भी क्या सकते हो। यह ससार अनित्य है, सवको एक न एक दिन इसी मार्ग पर जाना है। ससार मे यौवन, रूप, जीवन, संचित-धन, ऐश्वर्य और प्रिय-सम्मिलन सव अनित्य है। बुद्धिमानो को इनका मोह न करना चाहिये। तुम तो स्वयं बुद्धिमान हो। आपके इस महा-शोक मे मुझे आपके साथ हार्दिक समवेदना है। मैं भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि भगवान् मृतात्मा को शान्ति प्रदान करे और आपको इस असह्य दुःख को सहने की क्षमता प्रदान करे।

आपका शुभाकांक्षी—

दयाशंकर 'दुवे'

नौकरी के लिये प्रार्थना पत्र

श्रीमान् इन्स्पेक्टर साहब,
शिक्षा-विभाग
आगरा डिवीजन-आगरा

माननीय महोदय जी,

सेवक ने हिन्दी व उर्दू वर्नाक्यूलर मिडिल परीक्षा प्रथम श्रेणी में, वर्नाक्यूलर टीचर्स सर्टीफिकेट परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की हैं। हिन्दी की विशेष-योग्यता और काशी की प्रथमा (संस्कृत की) परीक्षायें भी सेवक ने प्रथम श्रेणी में पास करली हैं। सेवक को हिन्दी से विशेष प्रेम है। सेवक २४ वर्षीय, पूर्ण स्वस्थ और राज-भक्त नवयुवक है। सेवक के पिता गवर्मेन्ट हाई स्कूल बुलन्दशहर में संस्कृत अध्यापक हैं। सेवक के कई रिश्तेदार गवर्मेन्ट सर्विस मे हैं। सेवक आजकल चम्पा-अग्रवाल इन्टर कालिज मथुरा में ऐजे वी टी. सी. काम कर रहा है। खेलों से सेवक को बड़ा प्रेम है, नौर्मल स्कूल में खेलो मे सर्वोत्तम आने का गोल्डन मैडल सेवक को ही मिला था।

सन् १९३८ ई० के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में ब्रजमण्डल बृजभाषा में बृजभाषा को सर्वोत्तम कविता सुनाने पर भी सेवक को महाराजा धौलपुर की ओर से पुरुस्कार मिला था।

सेवक को विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि आपको हाथरस गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के लिये एक क्वालीफाइड बी. टी. सी की आवश्यकता है।

अत आपसे प्रार्थना है कि आप उक्त स्थान के लिये सेवक की तैनाती करें तो बड़ी कृपा हो सेवक आपकी इस दया का जीवन भर कृतज्ञ होगा।

आपका आज्ञाकारी सेवक—
श्यामबिहरी बी टी. सी.
हिन्दी टीचर चम्पा अग्रवाल कॉलेज
मथुरा।

३० अप्रैल १९४० ई०

शोक प्रस्ताव

[illegible] हाई स्कूल देहली के समस्त अध्यापकों और विद्यार्थियों की यह सभा पं० वासुदेव शर्मा अध्यापक के ज्येष्ठ पुत्र रमेशचन्द्र शर्मा जो (बड़े होनहार थे, जिनकी अवस्था २१ वर्ष की थी और विगत वर्ष उनका विवाह संस्कार भी हो चुका था) की असामयिक मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और उक्त पं० जी तथा उनके संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

देहली
२८ मार्च सन् १९४०

अभिनंदन-पत्र

महा माननीय कर्मचन्द, मोहनदास महात्मा 'गांधी' की
पुनीत सेवा में
'अभिनंदन-पत्र'

माननीय महात्मा जी,

आज हम समस्त देहली निवासी आपका हृदय से स्वागत करते हैं। और नत मस्तक हो आपका अभिनंदन करते हैं। श्रीमान् आप राष्ट्र का विभूति है। आप त्याग और तपस्या के अवतार हैं। आपने सोते भारत के हृदय मे स्वतन्त्रता की रूह फूंकी है। आज समस्त भारत एक टक आप ही की तरफ ध्यान लगाये बैठा है। आप ही हमारी इस जातीय नौका को खेने मे समर्थ हैं।

श्रीमान् जी, अछूत को हिन्दुओं से पृथक न होने देने का श्रेय आप ही को प्राप्त है। हिन्दू-मुसलिम एकता का प्रयत्न

आपका सराहनीय है। आपके सतत प्रयत्नों के बाद राष्ट्र ने सा स्थान पा लिया है उसे विश्व बड़ी आश्चर्य की दृष्टि से दे रहा है। आपके त्याग, आपकी सादगी और आपके कठोर को देख संसार एक नवीन क्रान्ति की ओर अग्रसर हो रहा है। आपको अहिंसा में अटूट अनुराग है। आप अहित अपने शत्रु का भी नहीं देखना चाहते।

महामने, आपने हमारे भाव, भाषा और संस्कृति के उत्थान देने में जो सराहनीय कार्य किया है उसके हम बहुत आभारी हैं। सचमुच आपने देश को जीवन और ज्योति दोनों ही वस्तु दी हैं।

श्रद्धेय, आप भारत के प्राण और विश्व के सर्वस्व हैं, आपकी सेवायें अपरमित हैं! आपने देश की परतंत्रता की बेडियाँ काटने के लिये अनेक प्रयत्न किये हैं और कर रहे हैं। समस्त देश आपके आवाहन को स्वीकार करने को प्राण-पण से तैयार है।

महामने, आपके त्याग, तपस्या और देश प्रेम को देखकर हमारे मस्तक स्वत आपके लिये झुके जाते हैं। हम आपका हृदय से स्वागत करते हैं। और भगवान से प्रार्थना करते हैं कि भगवान आपको दीर्घ जीवन प्रदान करे ताकि हम आपके नेतृत्व से अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। और देश की प्यारी स्वतन्त्रता का आपकी उपस्थिति ही में हम प्राप्त कर सकें।

आशा है कि आप हमारी इस पत्र पुष्प की भेंट को अपनायेंगे और बार बार देहली पधार कर हम देहली निवासियों के दर्शनों की अभिलाषा को पूरा करते रहेंगे। किमधिकम्।

देहली | हम हैं आपके आज्ञाकारी, और कृपाकांक्षी—
६ जून १९४० | देहली के समस्त नर नारी।

के चपरासी है। घर मे हम ६ व्यक्ति खाने वाले हैं। मेरा भाई भी आपके स्कूल की V कक्षा मे पढ़ता है। पिताजी तनख्वाह के अतिरिक्त और कोई आमदनी का आधार नहीं है। देहली जैसे बड़े शहर मे इन्हीं १५) रुपयो से लस्टम पस्टम जीवन निर्वाह करते हैं। मैंने इसी वर्ष आपके स्कूल से VIII क्लास पास किया है। VIII की वार्षिक परीक्षा मे मेरा नम्बर समस्त कक्षा मे दूसरा था। पिताजी, माताजी से कह रहे थे कि 'मगल' का पढ़ना बन्द कर देना चाहिये, क्योंकि अब हम आधी फीस देने की क्षमता नही रखते। महोदयजी, मैं बड़ा अभागा हूँ कि दरिद्र-कुल मे उत्पन्न होने के कारण अपनी शिक्षा को जारी नहीं रख सकता। मेरी बड़ी अभिलाषा है कि कम-से-कम X क्लास तो अवश्य पास कर लेनी चाहिये। ऐसी परिस्थिति मे आप से सानुरोध प्रार्थना है कि आप मेरी पूरी फीस माफ कर दीजियेगा।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप अवश्य मेरी दीन हीन दशा पर विचार करके मेरी फीस माफ करने की कृपा करेंगे। मैं आपकी इस दया का बड़ा आभारी हूँगा।

देहली
१५ अप्रैल १९४०

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
मगलदेव शर्मा X,

फुटबॉल मैच खेलने का आवेदन-पत्र

श्रीमान् हेडमास्टर साहब,
आर ए बी. स्कूल. देहली।

मान्यवर,

निवेदन यह है कि लाग आपके स्कूल की फुटबॉल टीम से आज शाम के ५ बजे गाँधी-ग्राउन्ड मे 'फुटबॉल मैच' खेलना चाहते है। ग्राउन्ड की स्वीकृति हमने म्यूनिस्पैलटी से लेली है।

पोस्टमास्टर की शिकायत

श्रीमान् सुपरिनटेन्डेन्ट साहब, डाकखाना ज
सेक्रेटरीयेट लखनऊ।

श्रीमान्,

सेवा मे वड़े खेद के साथ लिखना पड़ता है कि स्थानीय पोस्ट मास्टर साहब का व्यवहार जनता के प्रति अत्यन्त आपत्ति जनक है। वे जनता पर वड़ी धौंस जमाते हैं और हमारे समाचार पत्र तथा निजी चिट्ठियो को खोलकर पढ़ते हैं जिससे हमारे व्यवहार और व्यापार को वड़ा धक्का पहुँचता है। जब कभी कोई स्टाम्प लेने अथवा मनीआर्डर करने जाते हैं तो वे हम लोगो को घन्टो खड़ा रखते हैं। जव हम कभी उनसे कहते हैं तो फरमाते हैं कि मैं तुम्हारे वाप का नौकर नहीं हूँ।" पोस्ट ऑफिस का टाइम यद्यपि ५ वजे तक है किन्तु वह सदैव डाकखाने को ३॥ वजे के तूफान निकल जाने के वाद वन्द कर देते है। हमारी वहुत सी डाक और पारसल पडी रह जाती हैं। जव कभी अनुनय विनय करते हैं तो कहते हैं कि मीठा मुँह करवाओ। महादय जी, इन आपत्तियो के कारण जनता का नाक में दम आरहा है। आप इन वातो की जॉच पड़ताल कर सकते हैं। आप से प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही पोस्ट मास्टर साहब के दुर्व्यवहार से जनता की रक्षा करने की कृपा कीजिये। हम आपके वडे कृतज्ञ होंगे।

पूर्ण आशा है कि शीघ्र सुव्यवस्था हो जायगी।

हम हैं आपके आज्ञाकारी सेवक,

इगलास
१५ दिसम्वर १६४०ई०

कस्वा इगलास, जि० अलीगढ़ के व्यापारी
(१) भोजराज 'चौधरी'
(२) जगन्नाथ, विसाती, आदि-आदि

ता० १२ फरवरी को घर जाना चाहता हूं। इसलिये प्रार्थना कि आप १२ फरवरी से १६ फरवरी सन् ४० ई० तक ५ ... की छुट्टी मंजूर करेंगे। आपका कृतज्ञ हूँगा।

अलीगढ़
११ फरवरी १९४०ई०

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
राजबहादुर 'सक्सेना' X, बी

विदाई-पत्र

धर्म-समाज-इन्टर-कालिज अलीगढ़ के X क्लास के समस्त विद्यार्थियो की सेवा मे

विदाई-पत्र

प्यारे बन्धु वर्ग,

आज आपको विदा देते हुये हमारे दुःख का वारापार नहीं। आपका स्नेह रह रह कर हमारे हृदय मे मधुर-पीडा उत्पन्न कर रहा है। आप पिछले ५ साल से कैसे सौहृद से हमारा नेतृत्व करते थे, वह भुलाये भूला नहीं जाता। स्कूल के अनुशासन, आज्ञा-पालन और नियम पालन करने मे हमने सदैव आपको अपना आदर्श मानकर अनुकरण किया। स्कूल मे, वोर्डिंग हाऊस मे, और खेल के मैदान मे सदैव आपने हमारे प्रति स्नेह का परिचय दिया जिसके कारण हमारा जीवन सुखद बना। कहाँ तक कहे हमारे अन्दर जो कुछ विशेष गुण आये है वह सब आपके ही सुन्दर आदर्श है, जिनके चरण चिन्हो पर हम चल रहे है। आपके प्रेम, आपकी सहानुभूति और आपके बन्धु-वात्सल्य भाव ने हमारे सबके हृदय पर अधिकार जमा लिया है। आपको विदा देते हुये हमारा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। और स्नेह उमड़ा ही पडता है।

ता० १२ फरवरी को घर जाना चाहता हूं। इसलिये प्रार्थना कि आप १२ फरवरी से १६ फरवरी सन् ४० ई० तक ५ ि की छुट्टी मंजूर करेंगे। आपका कृतज्ञ हूंगा।

अलीगढ़
११ फरवरी १६४०ई०

आपका आज्ञाकारी शिष्य,
राजबहादुर 'सक्सेना' X. वीं

विदाई-पत्र

धर्म-समाज-इन्टर-कॉलेज अलीगढ़ के X क्लास के समस्त विद्यार्थियों की सेवा में

विदाई-पत्र

प्यारे बन्धु वर्ग,

आज आपको विदा देते हुये हमारे दुःख का वारापार नहीं। आपका स्नेह रह रह कर हमारे हृदय में मधुर-पीड़ा उत्पन्न कर रहा है। आप पिछले ५ साल से कैसे सौहृद से हमारा नेतृत्व करते थे, वह भुलाये भूला नहीं जाता। स्कूल के अनुशासन, आज्ञा-पालन और नियम पालन करने में हमने सदैव आपको अपना आदर्श मानकर अनुकरण किया। स्कूल में, बोर्डिंग हाउस में, और खेल के मैदान में सदैव आपने हमारे प्रति स्नेह का परिचय दिया जिसके कारण हमारा जीवन सुखद बना। कहाँ तक कहें हमारे अंदर जो कुछ विशेष गुण आये है वह सब आपके ही सुन्दर आदर्श है, जिनके चरण चिन्हों पर हम चल रहे हैं। आपके प्रेम, आपकी सहानुभूति और आपके बन्धु-वात्सल्य भाव ने हमारे सबके हृदय पर अधिकार जमा लिया है। आपको विदा देते हुये हमारा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है। और स्नेह उमड़ा ही पड़ता है।

गार्डन-पार्टी का पत्र

प्रिय वर्म्मा जी,

क्या आप १५ जनवरी की शाम को ७ बजे नागरी-प्रचारिणी-सभा आगरा में मेरे साथ चाय पानी का निमंत्रण स्वीकार करेंगे ? इस मित्र मंडल में आपको पाकर मुझे अपार हर्ष होगा।

गुलाब-कुटीर, | आपका दर्शनाभिलाषी—
आगरा |
१४ जन० १९४१ | गुलाब राय एम० ए०

विधेयात्मक उत्तर

माननीय वर्म्मा जी,

आपके निमंत्रण के लिये धन्यवाद। मैं १५ जनवरी की शाम को ७ बजे अवश्य आपके चरणों में उपस्थित हो जाऊँगा।

सैनिक कार्यालय | आपका आज्ञाकारी—
आगरा |
१४ जन० १९४१ | श्रीकृष्णदत्त पालीवाल

निषेधात्मक उत्तर

माननीय वर्म्मा जी,

आपके निमन्त्रण के लिये हार्दिक धन्यवाद। मुझे खेद है कि मैं चाय-पार्टी के आनंद को न उठा सकूँगा। क्योंकि १५ जनवरी को यू० पी० प्रान्तीय-कॉग्रेस कमेटी की अन्तरंग-मीटिंग लखनऊ में हो रही है, प्रधान-पति की हैसियत से मेरा वहाँ पहुँचना बहुत आवश्यक है। ऐसी परिस्थिति में मैं आपकी आज्ञा-पालन

हमारे हृदय में बनी रहेगी। हमें पूर्ण आशा है कि आप हमें और हमारे स्कूल को कभी न भूलेंगे।

प्यारे बन्धुओ! आपको विदाई देते समय हमारा हृदय फटा ही जाता है। हमारा गला प्रेमाधिक्य से रुका जा रहा है। हम रुद्ध कंठ से अपने प्रेम को प्रकाश करने में भी असमर्थ हैं। आँखें प्रेम के आँसुओं से लथ-पथ हो रही हैं। किन्तु यह विचार करके कि आप उन्नति की ओर प्रयाण कर रहे हैं सान्त्वना होती है और हृदय बरजोरी आपको विदाई देने को विवश है।

अलीगढ़	हम हैं आपके X क्लास के समस्त
२७ मार्च १९४०	सहपाठी

प्रीति-भोज का निमंत्रण-पत्र

श्रीमान्,

आपको यह सुनकर अपार हर्ष होगा कि मेरे सुपुत्र कुं० जयबाबू एम० ए० का निर्वाचन आई० सी० एस के लिये हुआ है। जयबाबू की इस सफलता के उपलक्ष मे ७ फरवरी १९४१, को एक प्रीति-भोज देने का निश्चय किया है। प्रीति भोज ८ बजे सायंकाल दीवान हॉल में होगा। अत आपसे सविनय प्रार्थना है कि आप इस शुभ अवसर पर सकुटुम्ब पधार कर मुझे अनुग्रहीत करें।

देहली	आपका दर्शनाभिलाषी—
कूँजस-गली	मोतीराम 'रोहतगी'
३१ जन० १९४१	

परिशिष्ठ (अ)

विगत यूरोपीय महायुद्ध

निबन्ध-तालिकायें :—

(१) प्रस्तावना—

(अ) प्राणी मात्र में लड़ने की मनोवृत्ति और युद्ध के दुष्परिणाम

(ब) युद्ध से पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय परस्थिति

(स) तात्कालिक कारण

(२) युद्ध में अवतरित होने वाली शक्तियाँ

(३) युद्ध का विकास और विस्तार

(४) सन्धि

(५) यूरोप की राजनीति पर उसका प्रभाव

बीसवीं शताब्दि संसार में बड़े बड़े भयकर युद्ध भूचाल और बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ लाने वाली कही जा सकती है। यद्यपि अभी शताब्दि में केवल ४० वर्ष व्यतीत हुये है। किन्तु इतने अल्प काल में संसार में बड़े से बड़े युद्ध और बड़ी से बड़ी राज क्रान्तियाँ हुई हैं। वर्तमान समय में भी रण चंडी की विकराल दाढें अपना भयकर ताण्डव नृत्य कर रही है। जिसमें अपार धन-जन सहार हो रहा है। यूरोप में यद्यपि व्यापारिक सर्गा के कारण सदैव ही मारकाट रहा है किन्तु इस शताब्दि ... में ही स्थिति बड़ी भयकर हो गई थी। आज हम ... र का वृतान्त लिखने जा रहे है जिसमें ६० लाख

करने में असमर्थ हूँ। आशा है कि आप मेरी असमर्थता को देखते हुये क्षमा करेंगे।

सैनिक कार्यालय,
आगरा
१४, जनवरी १६४१

आपका आज्ञाकारी—
श्रीकृष्ण-दत्त 'पालीवाल'

कपड़ा खरीदने का पत्र

मैनेजर देहली क्लोथ मिल स्टोर
चाँदनी-चौक देहली।

महोदय जी,

कृपया आप निम्नलिखित सामान शीघ्र से शीघ्र भिजवा दीजियेगा। सामान रेल द्वारा भेजिये। आपके रुपयों का बिल सूचना मिलते ही फौरन चुकता कर बिल्टी छुड़ा ली जायगी।

१—पचास धोती जोड़े मर्दाने (नं० ५३१)

२—पचास धोती जोड़े जनाने (नं० ५४२)

३—थान नग दस लट्ठा बडे अर्ज़ का (बन्दर वाला)

४—थान नग २५ खादी गज़ के अर्ज़ का (चरखे वाला)

५—दस थान सादा मारकीन (मकड़ावाली)

महावीर-गंज
अलीगढ़
२५ फरवरी १६४०

आपका—
निरंजनलाल, गिरधारीलाल
बजाज।

मनुष्य रण-चंडी की बलिवेदी पर चढ़ चुके है। विगत महासमर १९१४ से १९१८ तक चला जिसमे कितने ही स्वतन्त्र राष्ट्र परतंत्र हो गये और कितनी ही जातियो की स्वतन्त्रता अपहरण करली गई। और उनकी राष्ट्रीय भावनायें बिलकुल कुचल दी गई।

मानवी जीवन मे लड़ने की पाशविक-प्रवृति सदैव से रही है। संसार के व्यक्ति और राष्ट्र इसके चक्कर मे पड़कर सदैव अपनी राक्षसी-वृति का परिचय देते है। संसार मे लड़ाइयाँ दो प्रमुख कारणो से होती है। एक तो धर्म-स्थापनात्मक और दूसरे राज्य-विस्तारात्मक भावना के कारण। हमारा विगत युद्ध केवल राज्य-विस्तारात्मक प्रवृति के वशीभूत होकर ही हुआ था।

सन् १९०९ मे आस्ट्रिया-हॅगरी ने बोसनिया-हरजेगोविना प्रान्तो पर अपना अधिकार जमा लिया। रूस साम्राज्य यद्यपि उनकी हिदायत पर था किन्तु वह साहस हीनता के कारण मौन हो गया। १९१० मे जर्मनी और फ्रांस मे मराको प्रान्त के ऊपर पारस्परिक तनातनी हो गई। बस महासमर के मूल कारणों की जड यही से जम गई।

सन् १९१३ के अन्त तक यूरोप का वायु मडल शान्त चला जारहा था। इगलैड और जर्मनी के सम्बन्ध बडे घनिष्ट और उत्तम रहे। सम्राट जार्ज जर्मन कैसर की पुत्री लुई के विवाहोत्सव मे सम्मिलित हुए। जर्मन जनता ने जॉर्ज का बड़ा स्वागत किया और उनके सम्मान-प्रदर्शनार्थ स्थान स्थान पर उत्सव मनाये गये। ठीक विवाह की तिथियो पर ही आस्ट्रिया-हॅगरी के उत्तराधिकारी आर्क ड्यूक अपनी प्रेयसी के साथ सेराइवो नगर जो बोसनियाँ की राजधानी था, यात्रा को गये। सेराइवो नगर की एक सडक के कोने पर किसी अज्ञात-व्यक्ति ने इन दोनो व्यक्तियों का वध कर दिया। बस इस घटना ने सारे

यूरोप में खलबली मचा दी। आस्ट्रिया ने इस वध का आरोप सर्विया पर किया।

जुलाई सन् १६१४ ई० को आस्ट्रिया गवर्नमेन्ट ने सर्विया गवर्नमेन्ट को युद्ध के लिये ललकारा। रूस और इंगलैंड ने आस्ट्रिया के इस कृत्य पर हस्तक्षेप किया और कहा कि इस हत्या की जाँच निष्पक्ष राष्ट्र के प्रतिनिधियों से करा ली जाय। जिनको मध्य यूरोप से किसी प्रकार का स्वार्थ न हो। उस कान्फ्रेंस में मध्य यूरोप के राष्ट्रों के सदस्य भी हों। जर्मन साम्राज्य ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और कहा कि यह झगड़ा आस्ट्रिया और सर्विया के मध्य का है वही दोनो आपस में तै कर लें। किन्तु जर्मनी का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। अतः विवशतः रण-भेरी बज उठी और सब अपने अपने साथियों को जुटाने में लग गये।

जर्मनी और आस्ट्रिया ने युद्ध की तैयारी आरंभ कर दी। रूस ने भी इनकी देखा देखी अपनी फौज में रंगरूट भर्ती करना आरम्भ किया। रूस के इस कृत्य पर जर्मनी ने नाराजी प्रकट की। और रूस सरकार को लिखा कि वह रंगरूटों की भर्ती बन्द कर दें। किन्तु रूस ने ऐसा करना अपनी मान-हानि समझी। फलतः युद्ध की घोषणा कर दी गई। जर्मनी और फ्रान्स में पहले से ही तनातनी था। अतः जर्मनी ने अपनी पश्चिमी और पूर्वी दोनों सीमाओं पर युद्ध आरम्भ कर दिया।

लड़ें लोह पाहन दोऊ बीच कई जर जार वाली नार्मोल बेचारे बेलजियम पर चरितार्थ हुई। जर्मनी ने फ्रान्स में अवतरित होने के लिये बेलजियम सरकार से रास्ता मांगा। रास्ता न देने पर युद्ध की धमकी भी दी। बेलजियम दहल गया और उसने ब्रिटिश पार्लियामेन्ट से सहायता की याचना की। ब्रिटि

पार्लियामेन्ट ने जर्मन सरकार को लिखा कि वह वेलजियम प्रदेश की शान्ति को भंग न करे और उचित उत्तर पाने की अभिलाषा भी प्रकट की। किन्तु जर्मन सरकार ने ब्रिटिश-सरकार को कोई उत्तर देना उचित न समझा। अतः ब्रिटिश-सरकार ने ४ अगस्त को युद्ध की घोषणा करदी। उधर सूदूर-पूर्व में १२ अगस्त को जापान गवर्मेन्ट ने जर्मनी से क्याऊ चाऊ द्वीप की याचना की, जर्मनी ने इसे अपनी मान-हानि समझी, और युद्ध की घोषणा कर दी। टर्की पहले से ही जर्मनी का मित्र था, उसने भी फ्रांस के वन्दरगाहों पर वम वर्षाना आरंभ कर दिया। इटली ने अपने को तटस्थ रखने की कोशिश की किन्तु १० मास पश्चात् उसे भी युद्ध मे सम्मिलित होना पड़ गया। अतः विगत महासमर दो गुट्टों मे विभाजित हो गया। एक गुट्ट मे इंगलैंड, फ्रांस, इटली, रूस और वेलजियम शामिल हुआ। दूसरे गुट्ट में जर्मनी, आस्ट्रिया, हॅगरी और टर्की सम्मलित हुये।

जर्मनी चाहता था कि वह फ्रास पर ऐसा आकस्मिक हमला करे जिसमे फ्रास को तैयारी का अवकाश विलकुल न दिया जाय। किन्तु उनकी यह अभिलाषा पूर्ण नहीं हुई और उसे ११ दिन तक लोज के स्थान पर वेलजियम को सेना से लोहा लेना पड़ा। जब कहीं उसे आगे बढ़ने का अवकाश मिला। इतने अवकाश मे फ्रास पर्याप्त सचेत हो गया। इसक पश्चात् जर्मनी ने वेलजियम के मार्ग से फ्रास पर आक्रमण किया किन्तु मार्ग मे उसे ब्रिटिश सेना से मोर्चा लेना पडा। दोनो मे घमासान युद्ध हुआ। परिस्थिति भयकर हो गई। ज्यो त्यो करके जर्मन सेना पेरिस के दरवाजे पर पहुच गई किन्तु ब्रिटिश सेना की सहायता मिल जाने के कारण फ्रासिसियो ने जर्मनी सेना को पीछे हटा दिया। जब जर्मन पेरिस नहीं पहुँच सके तो उन्होंने

पैर उखड़ गये। देश मे कम्यूनिस्ट पार्टी का 'जोर बढ़ गया। जर्मन सम्राट (क़ैसर) ने जर्मनी छोड़ कर हालैंड की शरण ली। जर्मन-मित्र राष्ट्रों ने अमेरिका से सन्धि करने की भी चेष्टा की किन्तु सब व्यर्थ गया। जर्मनी की भाग्यश्री ने इंगलैंड के गले को आलिंगन करना उचित समझा।

अन्त मे मानवता के अधिकारो को नष्ट करने वाली वारसाई की सन्धि हुई, जिसके दुष्परिणाम आज यूरोप भुगत रहा है। वह सन्धि क्या थी ?

वह ब्रिटिश जाति के गौरव का कलंक था। जिससे सर्वत्र बदले की भावना काम कर रही थी। यदि वारसाई की सन्धि तनिक भी उदार होती तो आज ब्रिटिश जाति को इगलैंड और लन्दन का यह कुरूप देखने 'को न मिलता। सभ्य जातियाँ अपने खोये हुये आत्म-सम्मान को प्राप्त करने के लिये शान्त ज्वाला-मुखी की भाति भडक उठती है। सन्धि हुई। युद्ध का सारा व्यय जर्मनी के मत्थे मढ़ा गया। जर्मन साम्राज्य को ब्रिटिश मित्र राष्ट्रो ने बाँट लिया आस्ट्रिया और हॅगरी साम्राज्य बिलकुल नष्ट हो गये और उनके स्थान पर अन्य दूसरे स्वतत्र राष्ट्रो का जन्म हुआ। टर्की की दुर्दशा हो गई। यूरोप के उसके सारे अधिकार छीन लिये। जर्मनी उपनिवेश सब ब्रिटिश मित्र राष्ट्रो मे विभाजित हो गये। विश्व मे घोर अशान्ति के बीज इस वारसाई की सन्धि मे बोये गये। अब वह बीस वर्ष के लम्बे काल मे बढ़ कर वृक्ष बन गई हैं। जिसने सहार मे नर-सहारकारी युद्ध का जन्म दिया है जिसकी भीषणता की अग्नि म ससार के प्रत्येक राष्ट्र का जलना पड़ रहा है।

भारतीय संस्कृति और साम्यवाद

विचार तालिकाये:—

(१) भूमिका
(२) साम्यवाद की परिभाषा
(३) समाज के नैतिक और व्यवहारिक रूप
(४) देश की दशा
(५) हमारे मूल सिद्धान्त
(६) साम्यवाद पर विभिन्न विचार

समाज का संगठन इस प्रकार हुआ है कि उससे समाज के सब मनुष्यों को समान लाभ नही होता। समाज मे एक तरफ भयकर दरिद्रता, रोग, शोक और पीड़ायें है। दूसरी तरफ समाज के कुछ व्यक्तियो के पास अपार धन है, भोग, शान्ति और आनन्द है। समाज मे यह भयकर वैषम्य क्यो ? जब समस्त वसुधा भगवान की है और उस वसुधा पर मनुष्य-मात्र का समान अधिकार है। कुछ व्यक्तियो के हृदय मे यह विचार उठे कि समाज की इस विषम परस्थिति को जो समाज मे घोर अशान्ति का कारण है बदल देनी चाहिये। जिससे समाज मे शान्ति का विकास हो। यह उचित जान पड़ा कि, समाज मे धन का विभाजन एक ऐसी नैतिक प्रणाली से हो जिससे समाज की यह विषम परस्थिति किसी प्रकार नष्ट होजाय। इस प्रकार की विचार धारा ने समार मे साम्यवाद सिद्धान्त को जन्म दिया।

वाद का अर्थ समान रूप से जनता पर धन का वितरण व
मानते हैं। समाजवाद धन ही की समान वितरण शैली का
नहीं वह व्यक्ति को राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक
मानसिक सब ही प्रकार की नैतिक समानता प्रदान करता
निस्सन्देह समाजवाद की उत्पत्ति प्रकृति के सिद्धान्तों
देखते हुए हुई है। प्रकृति सबको समान आदान प्रदान करते
वह विषम भाव नहीं रखती। प्रकृति सब पर दया
प्रतारणा समान रूप से रखती है। समाजवाद के सिद्धान्त
प्रकृति के मूल सिद्धान्तों के आधार पर निर्मित हुए है।

संसार मे जितने भी वाद समय-समय पर आये अ
आरहे है उन्होंने कभी भी समाज की इस विषमता को मिटा
की चेष्टा नहीं की। सबने यही उपदेश किया कि अपने निर्ध
भाइयों पर दया करनी चाहिये। उन्होंने मनुष्य की पैदा की हु
विषमता को प्राकृतिक माना। धनी और निर्धन दोनों ही दल
को सान्त्वना देने की चेष्टा की। एक को दया दाक्षिण्य व
पाठ पढ़ाया तो दूसरे दल को भाग्य-वाद का पाठ पढ़ाक
सान्त्वना दी। किन्तु मानवी समाज के इस कलंक स्वरू
वैषम्य-भाव को मिटाने की चेष्टा नहीं की। सम्भव है प्रयत्न
हुए भी हों किन्तु वह पूँजीवाद के भय और आतंक से समाज
व्यवहारित न हो पाये हों।

प्राचीन सिद्धान्तों मे हम आदि से अन्त तक सान्त्वना-नीति
का ही दिग्दर्शन पाते है। उन लोगों ने विषमता की जड़ मे सम्पत्ति
के इस गलत विभाजन को या तो समझा ही नहीं अथवा समझ
तो सही, किन्तु उसे अर्थ-वाद के प्राबल्य से विकसित न
कर पाये।

पूँजीवाद का जन्म ही हुआ है, और अभी १० फी सदी जनता भी पूँजीवाद के वशीभूत नहीं हो पाई है।

समाजवाद का जन्म यूरोप से हुआ है। वहीं वह विकसित भी हो रहा है। किन्तु समाजवाद का सिद्धान्त अपने २ राष्ट्र की परिस्थिति और आवश्यकतानुसार अपनाया जा रहा है। यही कारण है कि विभिन्न राष्ट्रों मे समाजवाद के अनेक नाम रक्खे जा रहे हैं। कहीं समाजवाद, समष्टिवाद, कहीं अराजकता वाद और कहीं गिल्ड समाज वाद नाम से पुकारा जा रहा है। समाजवाद इतना उपयोगी है किन्तु संसार उसे अपनाने मे देर क्यों कर रहा है? जब यह प्रश्न हमारे सामने आता है तो उसका एक मात्र हमे यही समुचित उत्तर जँचता है कि जातियाँ और राष्ट्र सहस्त्रों वर्षों के संचित सस्कारों को छोड़ने को शीघ्र तैयार नहीं है। और रूढ़ि वादी मनोवृति के परिवर्तन मे हिचकिचाहट मालूम पड़ती है। यही मनोवृति जगत मे व्यापक काम कर रही है। इसी कारण से समाजवाद का सिद्धान्त शनै २ विकसित हो रहा है।

अब रहा भारतवर्ष, इसमे समाजवाद का क्या रूप होगा? यह प्रश्न विचारणीय है। सम्पत्ति-विभाजन और राष्ट्रीय करण मे भारतवर्ष किसी प्रकार भी पीछे न रहेगा। किन्तु भारतीय सस्कृति और आध्यात्मिक वाद का प्रभाव उस पर अवश्य पडेगा। सभवत देश अहिसा के सिद्धान्तो को अपना ले और उसमे गाँधीवाद की झलक आजाय। भारतवर्ष मे समाज-वाद का भविष्य बडा उज्ज्वल रहेगा। भारतवर्ष के वर्तमान वातावरण मे उसे पनपने मे कुछ देर भी न लगेगी। किन्तु अभी वह दिन बहुत दूर है।

सत्याग्रह-संग्राम

विचार-तालिकायें :—

(१) भूमिका—सत्याग्रह की व्याख्या और उसका उपयोग। भारतीय संस्कृति में सत्याग्रह का स्थान

(२) सत्याग्रह का आरम्भ और उसकी विजय

(३) सत्याग्रह का क्रमश: विकास और उसका विस्तार

(४) भारतवर्ष में सत्याग्रह का आरम्भ और उसका संक्षिप्त इतिहास

(५) इन्डिया-एक्ट १८३५ और प्रान्तिक स्वतन्त्रतायें

(६) वर्तमान सत्याग्रह-संग्राम

(७) उपसंहार—सत्याग्रह-संग्राम की समाप्ति की शुभ-कामना

सत्य, अहिंसा और ईश्वर विश्वास के आधार पर कष्ट सहन कर अत्याचार के विरुद्ध ऐसा आचरण करना जो अत्याचारी के हृदय का परिवर्तन कर दे 'सत्याग्रह' कहलाता है। सत्याग्रह भारत के लिये कोई नई वस्तु नहीं। हमारे पूर्वज सदैव से इस अस्त्र का प्रयोग करते आये है। वेदों में वर्णित देवासुर संग्राम देवताओं की ओर से सत्य और अहिंसा के आधार पर ही लड़े गये थे। राम काल तक इस प्रयोग का भारत में गौरव रहा। सत्याग्रह का गौरव प्राचीन भारत में इतना उन्नत हुआ कि भारतीय ब्राह्मण ऋषियों ने अत्याचारी को शाप तक देने में अपना पतन समझा। बौद्ध और जैन सम्प्रदाय का जन्म इन्हीं मनोवृत्तियों ने दिया। महाभारत के विश्व-व्यापी युद्ध में हम श्री कृष्ण को इसी सत्याग्रही भावना से ओत प्रोत पाते हैं। वे अर्जुन और दुर्योधन के रण-निमन्त्रण के अवसर पर यही कहते

हैं कि 'मैं युद्ध मे हथियार नहीं उठाऊँगा'। उन्होंने अपनी को अन्त तक निभाया। निस्सन्देह संसार मे हिंसक-वृत्ति पर तक युद्ध लड़े जायेंगे। अथवा समार मे बदले को भावना हिंसा से की जायगी, संसार मे तब तक शान्ति कभी नहीं सकती। संसार के सभ्य राष्ट्र जब तक इस अजेय प्रयोग ग्रहण न करेंगे तब तक राष्ट्र और जातियों मे शान्ति न आयेगी। अतः संसार को अहिंसा अपनाना अनिवार्यतः आवश्यक हो जायगा।

वर्तमान सत्याग्रह सग्राम का जन्म १६०० ई० मे ट्रांसवाल गवर्मेन्ट के अत्याचारों से उत्पीड़ित होकर महात्मा-गाँधी ने किया। महात्मा-गाँधी ने सत्याग्रह की रूप-रेखा तैयार की और 'इन्डियन-ओपीनियन' मे जनता के समक्ष अपनी इस सत्याग्रह की अमोघ-शक्ति को रक्खा। भारतीय उत्पीड़ित जनता ने महात्मा-गाँधी के मस्तिष्क से उत्पन्न होने वाली इस योजना को अपनाया। महात्मा-गाँधी के पुत्र मगनलाल 'गाँधी' ने इस प्रयोग का नाम 'सदाग्रह' रक्खा किन्तु महात्मा-गाँधी ने इसका 'सत्याग्रह' नाम ही अधिक पसन्द किया।

हम पहले बता चुके है कि भारतीय सस्कृति मे सत्याग्रह कोई नई वस्तु नहीं है। भारत ही पर क्या निर्भर है? ससार मे मनुष्य समाज ने अपने विश्वासो के आधार पर सदैव प्रसन्नता से कष्ट सहे है। मानवी जीवन की अत्याचारी प्रवृति कभी भी सच्चे सत्याग्रही की विचारधारा को बदलने मे समर्थ नहीं हुई। ससार के इतिहास मे इसके अनेक उदाहरण मिलते है। महात्मा गान्धी के हृदय मे 'सत्याग्रह' की प्रेरणा महात्मा टालस्टाय और गीता के उपदेशों के आधार पर है।

सब से प्रथम सत्याग्रह का प्रयोग दक्षिणी अफ्रीका मे हुआ

से प्रसिद्ध है। महात्मा गांधी भी इस गोलमेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुये।

गोल मेज़ कान्फ्रेंस का परिणाम कुछ न निकला। भारतीय नेता ब्रिटिश-नेताओं की मनोवृति को भली भाति समझ गये कि ब्रिटिश जाति कुछ देगी लेगी नहीं वरंच उल्टा उल्लू वना रही है। महात्मा गांधी गोलमेज़ कान्फ्रेंस से निराश लौटे। देश की परिस्थित ख़राव हो चुकी थी। 'गांधी-इरविन' पैक्ट सरकार के ही हाथों तोड़ा जा चुका था। लॉर्ड विलिंगडन की नृशंश, क्रूर नीति देश में अपना दमन चक्र चला रही थी। देश पर्याप्त संख्या में आतंकित हो रहा था। ऐसी परस्थिति में महात्मा गाधी ने फिर सत्याग्रह की घोषणा कर दी। गवरमेन्ट ने महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया। सरकार ने भारतीय जातियों को भड़काने के लिये साम्प्रदायिक वटवारा देश के सामने ला रक्खा। जिसमें अछूतों को हिन्दुओं से प्रथक करने की भावना प्रधान रूप से काम कर रही थी। महात्मा गाधी ने इस साम्प्रदायिक लक्ष्य पर आमरण-उपवास लिया। परिणामत. गवरन्मेंट को कम्यूनल-एवार्ड' रद करना पड़ा।

इण्डिया-एक्ट् १६३५ ई० के अनुसार देश के सामने फिर जटिल समस्या आई। भारतीय नेताओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न चक्कर काटने लगे कि प्रान्तिक स्वतत्रतायें अपना ली जायें अथवा नहीं। वहुत वड़े वादाविवाद के वाद यही निश्चय हुआ कि अनुभव के तौर पर इनका भी अनुभव प्राप्त किया जाय। दो साल के अधिकार के पश्चात् उनका खोखलापन भी दिखलाई पड़ गया। और इण्डिया-एक्ट् के अनुसार केन्द्रिय-गवरमेन्ट

से प्रसिद्ध है। महात्मा गांधी भी इस गोलमेज कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुये।

गोल मेज़ कान्फ्रेंस का परिणाम कुछ न निकला। भारतीय नेता ब्रिटिश-नेताओं की मनोवृति को भली भांति समझ गये कि ब्रिटिश जाति कुछ देगी लेगी नहीं वरंच उल्टा उल्लू बना रही है। महात्मा गांधी गोलमेज कान्फ्रेंस से निराश लौटे। देश की परिस्थित खराब हो चुकी थी। 'गांधी-इरविन' पैक्ट सरकार के ही हाथों तोड़ा जा चुका था। लॉर्ड विलिंगडन की नृशंश, क्रूर नीति देश में अपना दमन चक्र चला रही थी। देश पर्याप्त संख्या में आतंकित हो रहा था। ऐसी परस्थिति में महात्मा गांधी ने फिर सत्याग्रह की घोषणा कर दी। गवरमेन्ट ने महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया। सरकार ने भारतीय जातियों को भड़काने के लिये साम्प्रदायिक बटवारा देश के सामने ला रक्खा। जिसमे अछूतों को हिन्दुओं से प्रथक करने की भावना प्रधान रूप से काम कर रही थी। महात्मा गांधी ने इस साम्प्रदायिक लक्ष्य पर आमरण-उपवास लिया। परिणामत. गवरन्मेट को कम्यूनल-एवार्ड' रद करना पड़ा।

इण्डिया-एक्ट १६३५ ई० के अनुसार देश के सामने फिर जटिल समस्या आई। भारतीय नेताओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न चक्कर काटने लगे कि प्रान्तिक स्वतत्रतायें अपना ली जायँ अथवा नहीं। बहुत बड़े वादाविवाद के बाद यही निश्चय हुआ कि अनुभव के तौर पर इनका भी अनुभव प्राप्त किया जाय। दो साल के अधिकार के पश्चात् उनका खोखलापन भी दिखलाई पड़ गया। और इण्डिया-एक्ट के अनुसार केन्द्रिय-गवरमेन्ट

से प्रसिद्ध है। महात्मा गांधी भी इस गोलमेज कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुये।

गोल मेज कान्फ्रेंस का परिणाम कुछ न निकला। भारतीय नेता ब्रिटिश-नेताओं की मनोवृति को भली भांति समझ गये कि ब्रिटिश जाति कुछ देगी लेगी नहीं वरंच उल्टा उल्लू बना रही है। महात्मा गांधी गोलमेज कान्फ्रेंस से निराश लौटे। देश की परिस्थित खराब हो चुकी थी। 'गांधी-इरविन' पैक्ट सरकार के ही हाथो तोड़ा जा चुका था। लॉर्ड विलिंगडन की नृशंश, क्रूर नीति देश में अपना दमन चक्र चला रही थी। देश पर्याप्त संख्या में आतंकित हो रहा था। ऐसी परस्थिति में महात्मा गाधी ने फिर सत्याग्रह की घोषणा कर दी। गवरमेन्ट ने महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया। सरकार ने भारतीय जातियों को भड़काने के लिये साम्प्रदायिक बटवारा देश के सामने ला रक्खा। जिसमें अछूतो को हिन्दुओं से प्रथक करने की भावना प्रधान रूप से काम कर रही थी। महात्मा गांधी ने इस साम्प्रदायिक लक्ष्य पर आमरण-उपवास लिया। परिणामत. गवरन्मेट का कम्यूनल-एवार्ड' रद करना पड़ा।

इण्डिया-एक्ट १९३५ ई० के अनुसार देश के सामने फिर जटिल समस्या आई। भारतीय नेताओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न चक्कर काटने लगे कि प्रान्तिक स्वतन्त्रताये अपना ली जायँ अथवा नहीं। बहुत बड़े वादाविवाद के बाद यही निश्चय हुआ कि अनुभव के तौर पर इनका भी अनुभव प्राप्त किया जाय। दो साल के अधिकार के पश्चात् उनका खोखलापन भी दिखलाई पड़ गया। और इण्डिया-एक्ट के अनुसार केन्द्रिय-गवरमेन्ट

से प्रसिद्ध है। महात्मा गांधी भी इस गोलमेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुये।

गोल मेज़ कान्फ्रेंस का परिणाम कुछ न निकला। भारतीय नेता ब्रिटिश-नेताओं की मनोवृत्ति को भली भांति समझ गये कि ब्रिटिश जाति कुछ देगी लेगी नहीं वरंच उल्टा उल्लू बना रही है। महात्मा गांधी गोलमेज़ कान्फ्रेंस से निराश लौटे। देश की परिस्थित खराव हो चुकी थी। 'गांधी-इरविन' पैक्ट सरकार के ही हाथों तोड़ा जा चुका था। लॉर्ड विलिंगडन की नृशंश, क्रूर नीति देश में अपना दमन चक्र चला रही थी। देश पर्याप्त संख्या में आतंकित हो रहा था। ऐसी परस्थिति में महात्मा गाधी ने फिर सत्याग्रह की घोषणा कर दी। गवरमेन्ट ने महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया। सरकार ने भारतीय जातियों को भड़काने के लिये साम्प्रदायिक वटवारा देश के सामने ला रक्खा। जिसमें अछूतों को हिन्दुओं से प्रथक करने की भावना प्रधान रूप से काम कर रही थी। महात्मा गाधी ने इस साम्प्रदायिक लक्ष्य पर आमरण-उपवास लिया। परिणामत. गवरन्मेंट को कम्यूनल-एवार्ड' रद करना पड़ा।

इण्डिया-एक्ट १६३५ ई० के अनुसार देश के सामने फिर जटिल समस्या आई। भारतीय नेताओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न चक्कर काटने लगे कि प्रान्तिक स्वतन्त्रतायें अपना ली जायें अथवा नहीं। बहुत बड़े वादविवाद के बाद यही निश्चय हुआ कि अनुभव के तौर पर इनका भी अनुभव प्राप्त किया जाय। दो साल के अधिकार के पश्चात् उनका खोखलापन भी दिखलाई पड़ गया। और इण्डिया-एक्ट के अनुसार केन्द्रिय-गवरमेन्ट

से प्रसिद्ध है। महात्मा गांधी भी इस गोलमेज़ कान्फ्रेंस में सम्मिलित हुये।

गोल मेज़ कान्फ्रेंस का परिणाम कुछ न निकला। भारतीय नेता ब्रिटिश-नेताओं की मनोवृति को भली भांति समझ गये कि ब्रिटिश जाति कुछ देगी लेगी नहीं वरंच उल्टा उल्लू बना रही है। महात्मा गांधी गोलमेज़ कान्फ्रेंस से निराश लौटे। देश की परिस्थित खराब हो चुकी थी। 'गांधी-इरविन' पैक्ट सरकार के ही हाथों तोड़ा जा चुका था। लॉर्ड विलिंगडन की नृशंश, क्रूर नीति देश में अपना दमन चक्र चला रही थी। देश पर्याप्त संख्या में आतंकित हो रहा था। ऐसी परस्थिति में महात्मा गांधी ने फिर सत्याग्रह की घोषणा कर दी। गवरमेन्ट ने महात्मा गांधी को गिरफ्तार करके यरवदा जेल भेज दिया। सरकार ने भारतीय जातियों को भड़काने के लिये साम्प्रदायिक बटवारा देश के सामने ला रक्खा। जिसमें अछूतों को हिन्दुओं से प्रथक करने की भावना प्रधान रूप से काम कर रही थी। महात्मा गांधी ने इस साम्प्रदायिक लक्ष्य पर आमरण-उपवास लिया। परिणामतः गवरन्मेट को कम्यूनल-एवार्ड' रद करना पड़ा।

इण्डिया-एक्ट १६३५ ई० के अनुसार देश के सामने फिर जटिल समस्या आई। भारतीय नेताओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न चक्कर काटने लगे कि प्रान्तिक स्वतत्रतायें अपना ली जायें अथवा नहीं। बहुत बड़े वादाविवाद के बाद यही निश्चय हुआ कि अनुभव के तौर पर इनका भी अनुभव प्राप्त किया जाय। दो साल के अधिकार के पश्चात् उनका खोखलापन भी दिखलाई पड़ गया। और इण्डिया-एक्ट के अनुसार केन्द्रिय-गवरमेन्ट

इस सत्याग्रह का क्या परिणाम होगा ? यह तो भविष्य के गर्भ मे है। किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि जहाँ सत्य, अहिंसा और आत्म-विश्वास उपस्थित हैं वहाँ विजय अवश्यम्भावी है। हमारी अभिलाषा है कि ब्रिटिश-जाति इस धार्मिक आन्दोलन को समझे, और भारत की इस विशुद्ध पुकार को न ठुकराये। महात्मा-गांधी से सम्मान-पूर्वक समझौता करके भारत की सहानुभूति उपलब्ध करे और अपने विरोधियों के साहस को न बढ़ने दे। तब ही जनता और गवरमेन्ट दोनो का भला होगा।